स्कूल ऑफ इवेन्जेलिजम्
पाठ्यक्रम

बहुवादी समुदायों तक पहुंचना

COPYWRITE 2017- EDUCATIONAL RESOURCES
PERMISSION TO FREELY COPY AND DISTRIBUTE,
BUT PLEASE CREDIT SOURCE

पाठ 1

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

1	परिचय	पाठ्यक्रम की रूपरेखा
2		धर्म क्या है?
3		हम अन्य धर्मों का अध्ययन क्यों करते हैं?
4		भारत- संसार के चार धर्मों का जन्म स्थल
5	जनजातीय धर्म	जनजातीय और लोक-धर्म और जीवात्मवाद
6	बौद्व धर्म	बौद्ध दर्शन का उदय, वर्तमान स्थिति और विश्वास
7		बौद्ध दर्शन के प्रति विश्वासियों का प्रतिउत्तर
8		नव-बौद्ध दर्शन
9		बौद्धों तक परमेश्वर के प्रेम में पहुंचना
10	जैन धर्म	जैन धर्म का उदय, वर्तमान स्थिति और विश्वास
11		जैन धर्मावलम्बियों के प्रति विश्वासियों का प्रतिउत्तर
12	सिक्ख धर्म	सिक्ख धर्म का उदय, वर्तमान स्थिति और विश्वास
13		सिक्ख धर्म के प्रति विश्वासियों का प्रतिउत्तर
14	दो पंथ (कल्ट)	चर्च ऑफ जीजस क्राईस्ट ऑफ लैटर डेस् सेंट्स (मॉरमोन्स)
15		मॉरमोन्स तक परमेश्वर के प्रेम में पहुंचना
16		यहोवा विटनेस
17		यहोवा विटनेसों तक परमेश्वर के प्रेम में पहुंचना
18	इस्लाम	इस्लाम का परिचय
19		मोहम्मद, इस्लाम के संस्थापक
20		इस्लाम का विकास
21		इस्लाम के पांच स्तंभ
22		मुसलमान ईश्वर के बारे क्या विश्वास करते हैं, इत्यादि
23		मुसलमान यीशु और पवित्र आत्मा के बारे क्या विश्वास करते हैं
24		मुसलमान क्या विश्वास करते हैं और हमारा प्रतिउत्तर
25		मसीह के उद्धार को मुसलमानों के साथ बांटना 1
26		मसीह के उद्धार को मुसलमानों के साथ बांटना 2
27		मसीह के उद्धार को मुसलमानों के साथ बांटना 3
28		मुसलमान यीशु के पास आ रहे हैं
29	हिन्दू धर्म	हिन्दू धर्म - परिचय
30		हिन्दू देवी देवतागण
31		हिन्दू देवी देवतागण ... और जाति व्यवस्था
32		मसीहीयत और जाति व्यवस्था
33		हिन्दू धर्म और दैवीय अधिकार
34		हिन्दू धर्म में ईश्वर की संकल्पना
35		मनुष्य की अंतिम नियति पर हिन्दू धर्म की संकल्पना
36		मनुष्य की अंतिम नियति पर हिन्दू धर्म की सेकल्पना (क्रमशः)
37		मनुष्य की अंतिम नियति पर मसीहीयत की संकल्पना
38	प्रचलित हिन्दू धर्म	जनजातियों और दलितों के द्वारा पालन किया जाने वाला हिन्दू धर्म
39		प्रचलित हिन्दू धर्म
40		जनजातीय धर्म
41		भारत के ग्रामों में आत्मिक शक्तियों की सच्चाई
42	उग्रवादी हिन्दू धर्म	उग्रवादी हिन्दू धर्म
43		उग्रवादी हिन्दू धर्म को प्रतिउत्तर देना
44	गुरू और संत	हिन्दू धर्म में गुरू और संत
45		गुरूओं और संतों के चेलों को सुसमाचार प्रस्तुत करना
46	शक्ति से मुठभेड़	प्रचलित हिन्दू धर्म में शक्तियों से मुठभेड़
47		प्रचलित हिन्दू धर्म में शक्तियों से मुठभेड़ - क्रमशः
48		प्रचलित हिन्दू धर्म में शक्तियों से मुठभेड़ - समापन
49		शक्ति से मुठभेड़ के लिए बाइबलीय आधार
50		हिन्दू धर्म को विश्वासियों का प्रतिउत्तर
51	समापन	अंतिम अवलोकन

पाठ 2
धर्म क्या है?

परिचय : धर्म क्या है और वह कहां से आता है?

1. धर्म को इस तरह परिभाषित किया गया है – परमेश्वर या ईश्वरों पर विश्वास और उनकी उपासना का तरीका। ईश्वर या देवता की प्रसन्नता को आमंत्रित करना या उनके क्रोध को फेर देना मनुष्य का प्रयास होता है।
2. धर्म मसीही विश्वास से भिन्न है : धर्म वह है जिसमें मनुष्य परमेश्वर के साथ सम्बंध बनाने का प्रयास करता है। मसीही विश्वास यह समझना है कि परमेश्वर मनुष्य के साथ सम्बंध खोजता है। मनुष्यों का ईश्वरों को प्रसन्न करने का, या उनकी विशेष कृपा प्राप्त करने का प्रयास करना धर्म है। मसीही विश्वास यह समझना है कि परमेश्वर अपने अनन्त अनुग्रह में मनुष्य के लिए मार्ग बनाने पृथ्वी पर आया ताकि मनुष्य परमेश्वर के साथ शांति और उसकी कृपा को प्राप्त कर सके।
3. रोमियों 1:20 में हम पढ़ते हैं : 'उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरूत्तर हैं।'
4. सभोपदेशक 3:11 में हम पढ़ते हैं : 'उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुन्दर होते हैं; फिर उसने मनुष्यों के मन में अनादि-अनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, तौभी जो काम परमेश्वर ने किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य समझ नहीं सकता।' ये दो पद, (रोमियों 1:20 और सभोप. 3:11), हमें वह बताते हैं जो हम अपने अनुभव और अवलोकन से जानते हैं कि समस्त सृष्टि प्रमाणों से भरी हुई है कि एक परमेश्वर है।
5. 17 वीं सदी के प्रसिद्ध फ्राँसीसी दार्शनिक ब्लेस पास्कल ने इस प्रकार कहा है, 'प्रत्येक मनुष्य के हृदय में परमेश्वर निर्मित एक खालीपन है जिसे सिवा उस सृष्टिकर्ता परमेश्वर के, जिसे यीशु मसीह के द्वारा प्रगट किया गया है, किसी भी रची गई वस्तु से नहीं भरा जा सकता है।'
6. परमेश्वर ने मनुष्य को अनन्तकाल के ज्ञान के साथ रचा है (जैसा सभोपदेशक 3:11 में लिखा गया है), इस समझ के साथ कि जो नाप जोख हम समझ और देख सकते हैं उससे भी आगे कुछ है। परमेश्वर के अदृश्य गुण तितली के पंखों की जटिलता में, शुतूरमुर्ग के पंखों के लहरदार रंगों में और हमारे स्वयं के डीएनए की जटिलता में स्पष्ट दिखाई देते हैं।
7. संसार के प्रत्येक जाति समूह में यह गुण पाया जाता है: वे सब एक ईश्वर की उपस्थिति को मानते हैं। यहां तक कि वे भी जो स्वयं को नास्तिक समझते हैं वे जब स्वयं को किसी संकट में पाते हैं तो अपनी निराशा में ईश्वर को पुकार उठते हैं!

'बहुवादी समुदायों' से क्या तात्पर्य है?

1. बहुवादी समुदाय ऐसे समुदाय हैं जिनमें एक से अधिक समूह के लोग रहते हैं, या समुदाय के लोगों के द्वारा विश्वास की एक से अधिक प्रणालियों को व्यवहार में लाया जाता है।
2. सैंकड़ों जाति-समूहों और भाषाओं वाला भारत देश अत्यधिक बहुवादी समाज है। भारत को विश्व का सबसे बड़ा बहुवादी देश माना जा सकता है।
3. अनेक छोटे छोटे ग्राम भी जब एक से अधिक पृष्टभूमि के लोगों को समेटे रहते हैं तो बहुवादी समुदायों के रूप में माने जा सकते हैं।
4. यीशु के शिष्य यदि ऐसे भूभाग में रहते हैं जो प्रमुखता से हिन्दू है- या सिक्ख या मुसलमान या कोई अन्य जाति समूह है- तो वे बहुवादी समुदायों के मध्य रहते हैं क्योंकि तब समाज यीशु के चेलों और अन्यों से बना होता है।

परमेश्वर सब लोगों से प्रेम करता है, हर एक समुदाय के लोगों से! इसलिए हमें भी--जो उसके बच्चे हैं--सब से प्रेम करना चाहिए।

1. यूहन्ना 3:16 हमें बताता है कि ''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया ...।"
2. यीशु ने मरकुस 16:15 में अपने चेलों से कहा, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।"
3. मत्ती 28:19 में यीशु ने अपने चेलों को कार्यादेश दिया, ''इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ"

4. 2 पतरस 3:9 में अंतिम वाक्य हमें बताता है परमेश्वर "नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो।"

यद्यपि हम जानते हैं कि विभिन्न विश्वास प्रणालियों वाले अनेक समुदाय हैं, हम परमेश्वर के वचन से जानते हैं कि सिर्फ एक ही परमेश्वर है और परमेश्वर के साथ शांति का अनुभव करने का एक ही मार्ग है।

1. 1 तिमोथी 2:5 हमें बताता है कि *"क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है।"*
2. और प्रेरित 4512 में हम पढ़ते हैं कि *"किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।"*
3. स्वयं यीशु ने यूहन्ना 14:6 में कहा, *"मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।"*

पाठ 3

हम अन्य धर्मों का अध्ययन क्यों करते हैं?

हम एकमात्र सच्चे सुसमाचार के अलावा अन्य धर्मों का अध्ययन क्यों करते हैं?

1. हम अन्य धर्मों का अघ्ययन इसलिए करते हैं ताकि समझ सकें कि उन अन्य विश्वास प्रणालियों के लोगों के साथ परमेश्वर की सच्चाई को सवोत्तम तरीके से कैसे बांट सकें।
2. हम अन्य धर्मों का अध्ययन इसलिए करते हैं क्योंकि हम उन प्रणलियों पर विश्वास करने वाले लोगों से प्रेम करते हैं --परमेश्वर के अलौकिक प्रेम के कारण उनसे प्रेम करते हैं--और हम समझना चाहते हैं कि वे क्या विश्वास करते हैं। इसलिए कि हमारा प्रेम परमेश्वर की ओर से है वह मानवीय समझ से परे है; परमेश्वर की संतान होने के कारण हम अपने शत्रुओं से भी प्रेम करते हैं।

प्रेरित पौलुस ने प्रेरितों के काम 17:16-33 में इसी प्रकार की समझ और संवेदना को दिखाया।

1. पौलुस अथेने में अपने उन मिशनरी सहकर्मियों (सिलास और तिमोथी) के आने का इंतजार कर रहा था जो उस समय बीरिया में सेवा दे रहे थे।
2. पौलुस ने अथेनेवासियों की मूर्तियों को देखा जिनमें से एक पर ऐसा लिखा था: ''अनजाने ईश्वर के लिए।" उसने इस बात को उपयोग उस एकमात्र सच्चे परमेश्वर का परीचय देने के लिये किया जो तब तक अथेनेवासियों के लिए अनजान था।
3. वह अनजान ईश्वर कौन था (और है) इसका पौलुस के द्वारा स्पष्ट परिचय दिया जाने के कारण वहां के कुछ लोगों ने विश्वास किया और यीशु के शिष्य बन गए (प्रेरित 17:34)।

यह जानना सहायक होता है कि अन्य धर्म के लोग क्या विश्वास करते हैं ताकि हम उनके साथ समझदारी से बातचीत कर सकें और उन्हे स्पष्टता से परमेश्वर की सच्चाई बता सकें।

1. उदाहरण के लिए हिन्दु कभी कभी वेदों और अन्य हिन्दु धर्मशास्त्रों की तुलना बाइबल से यह कहते हुए करते हैं कि वे सब एक ही प्रकृति और महत्व के हैं। एक विश्वासी इस गलत विचार का स्पष्ट और सही उत्तर तब दे सकता है जब उसे प्राचीन हिन्दु साहित्यों का कुछ ज्ञान होगा।
2. इसी तरह एक मुसलमान से बातचीत करते हुए यह जानना सहायक होता है कि उनकी पवित्र पुस्तक कुरान यीशु को मसीह कहती और स्वीकार करती है कि वह मुर्दो में से जी उठा था।

अनेक संस्कृतियों (संभवतः सभी) में उनके अपने इतिहासों से "छुटकारे के प्रतीक" हैं जो उन्हे परमेश्वर की सच्चाई को पहचानने और समझने में सहायता करते हैं।

1. मिशन स्कॉलर डॉन रिचर्डसन ने अपनी पुस्तक ''पीस चाइल्ड" में इरियन जावा के सावी लोगों को यीशु का परिचय देने के बारे बताया है। सावी एक निर्दयी जनजातीय समूह था जो यहूदा इस्कारयोति का प्रशंसक था इस बात के लिये कि उसने कैसे यीशु को धोखा दिया था। किन्तु उनकी एक परंपरा थी कि जब जनजातीय समूह अपने मध्य शांति

की इच्छा करते थे तब एक जाति का राजा अपने बच्चे को दूसरी जाति के राजा को दे देता था। इस "पीस चाइल्ड" (शांति संतान) परंपरा ने साक्षियों को यह समझने में सहायता की कि कैसे परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को देकर मनुष्य के साथ शांति स्थापित की।

2. जब मिशनरी पहली बार मध्य पश्चिम अफ्रीका में आए उन्होंने बाउली (ठंवनसमश) नामक जनजाति को पाया। बाउली लोग अपने संस्थापक रानी की याद का सम्मान करते थे जिसने अपने लोगों को बचाने के लिए अपने बच्चे को आत्माओं को बलि चढ़ा दिया था। मिशनरियों ने समझाया कि ठीक ऐसा ही सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने किया था ताकि मनुष्य को बचाया जा सके।

वैसे ही जैसे परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य के धर्म पर ध्यान दिए बिना उनसे प्रेम करता है, हमें भी दूसरों से उनके धर्म की परवाह किए बिना प्रेम करना है।

1. परमेश्वर के संतान होने के कारण हमें दूसरों के प्रति असली सम्मान और दया का भाव रखते हुए परमेश्वर के प्रेम का नमूना बनना चाहिए।
2. हमें अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम रखना है (मर.12:31)। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें उन दूसरे लोगों की दुष्टता से प्रेम रखना है या उन अंधकारपूर्ण कार्यों और व्यवहारों की प्रशंसा और अनुमोदन करना है जो कुछ लोग करते हैं। परंतु हमें, उस पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के साथ जो हम में निवास करता है, प्रत्येक जन को, चाहे उसका धर्म कोई भी हो, परमेश्वर के प्रेम और दया के साथ प्रतिउत्तर देना चाहिये।

पाठ 4

भारत - संसार के चार धर्मों का जन्म स्थान

भारत विश्व के अनेक प्रमुख धर्मों का जन्म स्थान है। हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, सिक्ख धर्म और जैन धर्म सब की स्थापना भारत में हुई थी।

1. ये चार धर्म विश्व के दस प्रमुख धर्मों में आते हैं।
2. भारत में इन धर्मों का जन्म इस तथ्य को चित्रित करता है कि भारतीय लोग स्वभाव से बहुत धार्मिक हैं।

विश्व के सबसे बड़े धर्मों के अनुयाइयों की संख्या के अनुसार उनकी सूची दी जा रही है :

1. मसीहीयत - लगभग 2.2 अरब संख्या के साथ पूरे विश्व में फैला हुआ है। मसीहीयत विश्व का सबसे बड़ा धर्म है और एकमात्र धर्म है जो सब महाद्वीपों में फैला है और सब देशों में पाया जाता है। मसीहीयत सही मायनों में एकमात्र वैश्विक धर्म है।
2. इस्लाम - लगभग 1.5 अरब संख्या के साथ सर्वाधिक रीति से मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका, और दक्षिण एशिया में है। दक्षिण अमरीका में लगभग कोई मुसलमान नहीं है और उत्तर अमरीका में अपेक्षाकृत कम हैं।
3. हिन्दू धर्म - एक अरब से अधिक अनुयायी है, जिसमें से करीब 90 करोड़ से अधिक अकेले भारत में निवास करते हैं। इंडोनेशिया में लगभग पचास लाख हिन्दू हैं। मलेशिया में 15 लाख हिन्दू हैं।
4. बौद्ध धर्म - 500 से 700 मिलियन संख्या। यद्यपि बौद्ध धर्म का उदय भारत में हुआ, यह भारत के पूर्व के दक्षिण एशिया के देशों में सर्वाधिक संख्या में पाया जाता है।
5. लोक-धर्म . थ्वसा त्मसपहपवदे (जिन्हें जनजातीय-धर्म म्जीदवतमसपहपवदे और जीववाद ।दपउपेउ भी कहा जाता है) - इसके करोड़ों अनुयाइयों हैं, जिसमें से दस करोड़ के लगभग तो अकेले भारत में हैं। भारत और अफ्रीका में सर्वाधिक मजबूत परन्तु एशिया में भी है। (अनेक भारतीय जिन्हे हिन्दू में सम्मिलित कर गिन लिया जाता है वे सही तरह से लोक-धर्म में गिने जाने चाहिए।)
6. चीनी लोक-धर्म (जिसमें ताओवाद और कनफ्यूशियनवाद आते हैं) - इस में अरबों लोग आते हैं।
7. शिन्टो - लगभग 4 करोड़ अनुयाइयों की संख्या, सर्वाधिक जापान में हैं।
8. सिक्ख धर्म - लगभग दो करोड़ साठ लाख की संख्या, सर्वाधिक भारत में।
9. यहूदी धर्म - लगभग एक करोड़ साठ लाख की संख्या। यहूदी इस्राएल में बहुसंख्यक हैं किन्तु अनेक संयुक्त राज्य

अमरीका में भी रहते हैं।

10. जैन धर्म - पचास से अस्सी लाख की संख्या, सर्वाधिक भारत में। अनेक जैनियों को हिन्दुओं में गिन लिया जाता है।

क्यों इतने धर्मों की विविधता पाई जाती है?

1. विश्व के अनेक विभिन्न धर्म, मनुष्य के हृदय की परमेश्वर के लिये जो प्यास है उसके प्रमाण हैं जिसके कारण मनुष्य ने अनेक तरीकों से ईश्वर को खोजा है (देखिए रोमियों 1:18-20)।
2. शैतान ने मनुष्यों को ईश्वर की सच्ची आराधना करने से और उसका आज्ञापालन करने से विमुख करने का प्रयास किया है (उत्पत्ति अध्याय 3)।
3. विश्व के विभिन्न भागों में विभिन्न प्रकार के धर्म विकसित हुए हैं, कुछ अनेक शताब्दियों पूर्व और कुछ हाल ही में।
   अ. मसीहीयत की जड़ें यहूदी धर्म मे पाई जाती हैं जो लगभग 4000 वर्ष पूर्व आरंभ हुआ।
   ब. इसी के समान, जोरोआस्ट्रियन और हिन्दू धर्म के आरंभिक रूपों को हजारों वर्ष पूर्व देखा जा सकता है। वेद, लगभग 2000 वर्षो से अधिक समय से एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी को सौंपे जाते रहे हैं और अंततः 2000 वर्ष पूर्व, संभवतः मसीह के समय के आसपास, लिखे गए।
   स. बौद्व और जैन धर्मो का उदय उनके लगभग 500 वर्षो बाद हुआ। इस्लाम का उदय इसवी सन सातवीं सदी तक नहीं हुआ था। सिक्ख धर्म उम्र में और भी छोटा है जिसका उदय 15 वीं सदी में हुआ।

पाठ 5

जनजातीय और लोक-धर्म और जीववाद

जनजातीय और लोकधर्म क्या हैं?

1. जनजातीय-धर्म आदिवासियों के द्वारा माने जा रहे धार्मिक विश्वास और अभ्यास या व्यवहार हैं। जनजातीय धर्म एक सर्वोच्च सृष्टिकर्ता में विश्वास का प्रतिक होते हैं किन्तु इसके साथ ही द्वेष रखनेवाली आत्माओं को प्रसन्न रखने पर अधिक जोर देते हैं।
2. यह तब लोक-धर्म कहलाता है जब स्थानीय अंधविश्वास और आस्थाओं को आमतौर पर अधिक मान्यता प्राप्त धर्मों के घटकों के साथ मिल दिया जाता है।
3. उदाहरण के लिए, हिन्दू लोक-धर्म (या "प्रचलित हिन्दू धर्म") को रूढ़िवादी हिन्दू धर्म से अलग पहचाना जा सकता है; लोक-धर्मीय हिन्दुओं की संख्या रूढ़िवादी हिन्दूओं से कहीं अधिक है।
4. इस्लाम के भी अनेक लोक-धर्मीय रूप हैं। यथार्थ में देखा जाये तो सिक्ख धर्म को इस्लाम का एक लोक-धर्मीय रूप माना जा सकता है क्योंकि यह स्थानीय भारतीय धर्मों के अनेक सूत्रों को इस्लाम में समेटता है।
5. ऐसे लोगों को जो जनजातीय या लोक-धर्म के माननेवाले हैं बहुधा "जातीय धर्मवादी" (Ethno-religionists) कहा जाता है। जातीय धर्मवादी समूह ऐसा जनजातीय समूह होता है जिसके सदस्य एक आम धर्म के द्वारा भी जुड़े होते हैं।

जीववाद (Animism) क्या है और यह जनजातीय और लोक-धर्म से कैसे सम्बंध रखता है?

1. जीववाद उस मत का नाम है जो विश्वास करता है कि आत्माएँ या अलौकिक शक्तियाँ वस्तुओं या तत्वों को अनुप्राणित करती (या उनमें बस जाती) हैं।
2. जीववादी विश्वास करते हैं कि आत्माएँ विभिन्न प्राणियों या पेड़ों या अन्य जीवित वस्तुओं में बस जाती हैं। कुछ जीववादी विश्वास करते हैं कि आत्माएँ निर्जीव वस्तुओं में भी वास करती हैं, जैसे कि चट्टान में या नदी में, या हवा और बादलों की गड़गड़ाहट में भी रहती हैं। बहुधा जीववादी उन लोगों की आत्माओं से भयभीत होते हैं जो मर चुके हैं और वे इन आत्माओं को प्रसन्न करने के लिए बहुत मेहनत और खर्च भी करते हैं।
3. 33 करोड़ देवताओं वाला हिन्दू धर्म इस अर्थ में जीववाद के समान है कि वे दोनों विश्वास करते हैं कि असंख्य आत्माएँ हैं जिन्हे प्रसन्न किया जाना है। तौभी हिन्दू धर्म अन्य क्षेत्रों में, जैसे कि मृत्यु और मृत्यु के बाद के जीवन की अपनी

समझ में, जीववाद से भिन्न है।

कैसे हम लोक-धर्मियों और जनजातीय-धर्मावलम्बियों और जीववादियों तक सुसमाचार के साथ सर्वोत्तम तरीके से पहुँच सकते हैं?

1. 19 वीं सदी में, कलीसिया-रोपण आंदोलनों के काल के दौरान, परमेश्वर ने स्वयं को अनेक जनजातीय धार्मिक समूहों पर प्रगट किया और वर्तमान काल में भी हम विभिन्न स्थानों और जाति समूहों में परमेश्वर के इसी प्रकार के चलन को देखते हैं। उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश और बिहार के भोजपुरियों पर, ओडिशा के कुई लोगों पर और मध्य प्रदेश के आदिवासियों पर परमेश्वर स्वयं को नाटकीय रीति से प्रगट कर रहा है।
2. हमें लोक-धर्मियो तथा जनजातीय-धर्मीयों तक एक एक करके नहीं किन्तु एक समूह के रूप में पहुंचना चाहिए। ऐसा करने में, पवित्र आत्मा पूरे समूह को, परिवार परिवार करके और गांव के गांव करके, स्वयं के पास लाने में सक्षम है, और ऐसा कर सकता है।
3. जीववादियों, और लोक-धर्मियों से भी, व्यवहार करते समय प्राय: आत्मिक शक्तियों के साथ सामना होता है। यह दिखाना महत्वपूर्ण है कि हमारा परमेश्वर संसार की किसी भी शक्ति से बड़ा है। (हम आत्मिक शक्तियों से सामना पर अन्य अध्याय में पढ़ेंगे।)
4. जब यीशु ने कुँए पर सामरी स्त्री से भेंट और बातचीत की, तब उसने हमें लोक-धर्मियों से किस तरह व्यवहार करना चाहिए इसका एक सुन्दर नमूना दिया है (यूहन्ना 4)। सामरी लोग यहूदी धर्म के लोक-धर्मीय रूप का पालन करते थे। उनकी सच्चे यहूदी धर्म से एक लोक-धर्मीय भिन्नता यह थी कि वे अपने एक स्थानीय पहाड़ी पर आराधना करते थे, जबकि यहूदी यरूशलेम में आराधना करते थे।
   अ. जब स्त्री ने यीशु से पूछा कि आराधना कहां करना चाहिए (यूहन्ना 4:12) तब यीशु ने अपने उत्तर को उसके भूगोल के आधार पर की लोकधर्मीय धारणा की बहस पर केंद्रित नहीं किया। इसकी अपेक्षा उसने उत्तर दिया कि "वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमे सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे ..." (यूहन्ना 4:23)। फिर उसने स्वयं को मसीहा घोषित किया।
   ब. इसी के समान, लोक-धर्मियों से व्यवहार करते हुए हमें उनके लोक-धर्म की आस्थाओं पर तर्क-वितर्क करने की परीक्षा से बचना चाहिए, इसकी अपेक्षा उन्हे मसीहा को दिखाना चाहिए।
5 जीववादी बहुधा मृत्यु के निर्बल करनेवाले भय में जीवन यापन करते हैं। वैसे ही वे मृतकों या दुष्ट आत्माओं के द्वारा उनके ऊपर डाले जा सकनेवाले श्राप से भयभीत होते हैं। जीववादियों को यह दिखाने और विश्वास दिलाने की अधिक आवश्यकता होती है कि यीशु मसीह किसी भी आत्मा से अधिक सामर्थी है, और यह कि वह मृत्यु की शक्ति के ऊपर भी जयवन्त हुआ है, और हमें अपनी उपस्थिति में स्वर्ग में अनन्त जीवन भी देता है।

पाठ 6

बौद्ध धर्म का उदय, वस्तु-स्थिति और विश्वास

बौद्ध धर्म क्या है? बौद्ध धर्म पूरे विश्व में लगभग 50 से 70 करोड़ लोगों का धर्म है। इसकी स्थापना आज से लगभग 2500 वर्षो पूर्व सिद्धार्थ गौतम के द्वारा की गई थी जिन्हें बुद्ध (प्रबुद्ध व्यक्ति) के नाम से जाना जाता है। गौतम ने यह प्रबुद्ध ज्ञान बिहार प्रांत के बौद्ध गया में प्राप्त किया था। सम्राट अशोक के समय में मठवासियों को भारत से दक्षिण-पूर्व एशिया में भेजा गया था जहां अंतत: बौद्ध धर्म प्रमुख धर्म बन गया।

क्या बौद्ध धर्म एक धर्म है? बौद्ध धर्म वास्तव में एक धर्म की अपेक्षा एक दर्शनशास्त्र या "जीवन शैली" है क्योंकि इसमें अलौकिक के अर्थात् ईश्वर के बारे कोई शिक्षा नहीं है। किन्तु बहुधा इसे धर्म समझा गया है क्योंकि इसकी शिक्षाएं उसके अनुयाईयों के दिलो-दिमाग में धर्म का स्थान लेती हैं।

बौद्ध मतावलम्बी कहां रहते हैं? पूर्व एशिया में बहुत अधिक बौद्ध मतावलम्बी हैं, विशेषकर थाईलैण्ड, कम्बोडिया, नेपाल, वियतनाम, तिबत और भूटान, कोरिया, जापान और चीन में इनकी संख्या सर्वाधिक है।

बौद्ध धर्म क्या प्रदान करता है? बौद्ध धर्म जीवन को उद्देश्य देने का प्रयास करता है और विश्व में चहुंओर फैले स्पष्ट अन्याय

और असमानता के लिए स्पष्टीकरण प्रदान करता है। कुछ लोग इसकी जीवन-शैली के द्वारा सच्चा आनन्द प्राप्त करने के खोज करते हैं।

बौद्ध धर्म पश्चिम में लोकप्रिय क्यों होता जा रहा है? पश्चिम में बौद्ध धर्म को कुछ लोकप्रियता इसलिए मिल रही है क्योंकि यह आधुनिक भौतिकतावाद के खोखलेपन के एवज़ में मूल्य पद्धति प्रदान करता है।

बुद्ध कौन था? गौतम का जन्म 563 ईसा पूर्व एक राज परिवार में हुआ था। 29 वर्ष की आयु में उसने महसूस किया कि सुख और सम्पत्ति आनन्द की गारंटी नहीं देते हैं अत: उसने मानवीय आनन्द की खोज में उस समय के तमाम दर्शनों की खोज-बीन की। छ: वर्षों के अध्ययन और ध्यान के पश्चात् उसने एक प्रकार के आत्मज्ञान या बोध (म्दसपहीजमदउमदज) का अनुभव किया जिसे उसने "मध्य मार्ग" कहा। इसके पश्चात् उसने 80 वर्ष में अपनी मृत्यु तक के जीवन का बाकी समय बौद्ध धर्म के सिद्धांतों की शिक्षा देने में लगाया।

क्या बुद्ध एक ईश्वर था? वह भगवान या ईश्वर नहीं था और न ही उसने इसका कभी दावा किया। वह मात्र एक मनुष्य था जिसने अपने अनुभव के आधार पर तथाकथित प्रबोधन को पाने का मार्ग सीखाया।

क्या बौद्ध धर्म के माननेवाले मूर्तियों की पूजा करते हैं? बौद्ध मतावल्बी कहते हैं कि वे बुद्ध की प्रतिमाओं को आदर देते हैं, उपासना के रूप में नहीं, न ही उससे कोई विशेष कृपा पाने के लिए, परंतु उसकी शिक्षाओं के लिए आभार व्यक्त करने हेतु ऐसा करते हैं। तथापि, व्यवहार में वह मूर्तिपूजा ही बन जाती है।

अनेक बौद्ध मतावल्बी देश निर्धन क्यों हैं? बौद्ध धर्म की यह शिक्षा कि धन आनन्द की गारंटी नहीं देता, बौद्धों में भौतिक विकास के लिये परिश्रम करने के प्रति उदासीनता उत्पन्न करती है। इसके फलस्वरूप जो देश बौद्ध धर्म प्रधान है उनमें अनेक निर्धन मिलते हैं।

क्या बौद्ध दर्शन के विभिन्न रूप हैं? संस्कृति और परम्पराओं के कारण अलग अलग देशों में बौद्ध धर्म के अनेक रूप मिलते हैं।

क्या बौद्ध मतावल्बी अन्य धर्मों को गलत समझते हैं? बौद्ध धर्म अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु है और अन्य धर्मों में पाई जाने वाली नैतिक शिक्षाओं से सहमति जताता है।

बुद्ध ने क्या सिखाया? बुद्ध ने अनेक शिक्षाएं दीं, किन्तु बौद्ध धर्म की मौलिक विचारधाराओं को सारांश में चार आर्य सत्य और आष्टांगिक मार्ग में प्रस्तुत किया जा सकता है।

बौद्ध दर्शन के "चार आर्य सत्य" क्या हैं? प्रथम "सत्य" यह है कि जीवन कष्ट सहना है अर्थात् जीवन में पीड़ा, बूढ़ा होना, रोग, और अन्तत: मृत्यु है। हम अकेलापन, कुण्ठा, भय, घबराहट, निराशा और क्रोध जैसे मनोवैज्ञानिक कष्टों को भी सहते हैं।

द्वितीय "सत्य" यह है कि पीड़ा लालसा और विमुखता से आती है। लालसा हमें संतोष से वंचित कर देती है। जीवनपर्यंत लालसा करना और असंतोष (यहां तक कि जीवित रहने की लालसा भी) एक शक्तिशाली उर्जा पैदा करती है जो एक व्यक्ति के पैदा होने (जो कि बुद्ध मतावलम्बियों के अनुसार एक बुरी बात) का कारण ठहरती है। अत: लालसा शारीरिक पीड़ा में ले जाती है क्योंकि वह हमें पुनर्जन्म में ले जाती है।

तीसरा "सत्य" यह है कि अनावश्यक लालसा का त्याग करने से पीड़ा पर जय पाया जा सकता है और आनन्द की प्राप्ति की जा सकती है। एक बार में एक दिन का जीवन यापन करना सीखने के द्वारा (भूतकाल में या काल्पनिक भविष्य में न जीने के द्वारा) हम आनन्दित और स्वतंत्र हो सकते हैं। इसे निर्वाण कहा गया है।

चौथा "सत्य" यह है कि आष्टांगिक आर्य मार्ग पीड़ा को समाप्त कर देने की ओर ले जाते हैं। आष्टांगिक मार्ग इस प्रकार है: (1) नैतिक होना (हम जो कहते हैं, करते हैं और हमारे जीवन यापन में नैतिक होने के द्वारा)। (2) हमारे विचारों और कार्यों के प्रति पूरी रीति से सजग होने पर अपने मन को केंद्रित करना। (3) चार आर्य सत्यों को समझने के द्वारा बुद्धि विकसित करना और दूसरों के प्रति दया विकसित करना।

पाठ 7

बौद्ध धर्म के प्रति विश्वासियों का प्रतिउत्तर

बौद्ध धर्म के पंचशील (अर्थात् पांच बौद्ध आचार) क्या हैं? पंचशील उनकी नैतिक आचार संहिता हैं: (1)किसी जीवित प्राणी का प्राण न लेना (2) जो वस्तु दी नहीं गई है उसे न लेना, (3) यौन दुर्व्यवहार और इंद्रियों की अत्याधिक विलासिता से बचना, (4) असत्य कथन कहने से बचना, और (5) नशा करने से अर्थात् चेतना खोने से बचना।

कर्म क्या है? कर्म वह विश्वास है कि प्रत्येक कारण का एक परिणाम होता है – इस जीवन के पार भी। बुद्ध मतावलम्बी विश्वास करते हैं कि यह साधारण नियम विश्व में व्याप्त असमानता को समझाता है कि क्यों कुछ लोग विकलांग पैदा होते हैं और कुछ गुणी; क्यों कुछ लोग मात्र अल्प आयु तक ही जीते हैं; इत्यादि।

"मध्य मार्ग" क्या है? बौद्ध धर्म सिखाता है कि बुद्धि का विकास दया के साथ किया जाना चाहिए। एक छोर पर आप एक नेकदिल मूर्ख मनुष्य हो सकते हैं और दूसरे सिरे पर आप ज्ञान प्राप्त कर के ज्ञानी तो हो सकते हैं परंतु भावनारहित हो सकते हैं। बौद्ध धर्म दोनों को विकसित करने के लिए "मध्य मार्ग" खोजता है। बौद्ध धर्मावलम्बी उदारता का व्यवहार करते हुये और आराम, संवेदना और देखभाल प्रदान करने की तैयारी के साथ दया का जीवन जीने का प्रयास करते हैं।

मसीहीयत और बौद्ध धर्म के मध्य क्या प्रमुख भिन्नताएं हैं?

1. मसीहीयत परमेश्वर के साथ, जिसने पूरे ब्रह्माण्ड को रचा है, एक व्यक्तिगत अंतरंग सम्बंध का प्रदान करती है। बौद्ध धर्म उस प्रबोधन (ज्ञानोदय) की खोज करता है जो शून्यता में ले जाता है।
2. मसीहीयत पाप और मृत्यु से उद्धार – और परमेश्वर की प्रत्यक्ष उपस्थिति में अनंत जीवन – जो यीशु मसीह के प्रायश्चित रूपि जीवन, मृत्यु और पुररूत्थान के द्वारा मिलता है (प्रेरितों 4:12)। बौद्ध धर्म चेतना की अनंतकालिक समाप्ति प्रस्तुत करता है जिसे निर्वाण कहते हैं।
3. मसीहीयत पवित्र आत्मा प्रदान करती है – अर्थात् परमेश्वर हमारे भीतर निवास करता है जो हमें पाप पर विजय और उसकी बुराइयों से स्वतंत्रता देता है। बौद्ध धर्म, इच्छापूर्ण संयम के द्वारा संसार की बुराइयों से बचने का प्रस्ताव देता है।

बौद्धों का मसीह के प्रति क्या दृष्टिकोण है?

अनेक बौद्धों ने यीशु मसीह के बारे सुना ही नहीं हैं। जो यीशु के बारे जानते हैं वे उसे एक महान शिक्षक मानते हैं किन्तु वे उसे ऐसा ईश्वर नहीं स्वीकार करते जो हमें हमारे पापों से बचाने और जो उस पर विश्वास करते और पापों की क्षमा मांगते हैं उन्हें अनन्त जीवन देने के लिये आया।

बौद्ध धर्मावलम्बी मसीहियों के प्रति क्या सोच रखते हैं?

बौद्धों की मसीहियों के प्रति सोच निष्क्रय हैं। इसलिये कि वे नैतिकता और दया को महत्व देते हैं उनके मन में उन विश्वासियों के प्रति सम्मान होता है जो दया के कार्य और पवित्र जीवन का प्रदर्शन करते हैं। परन्तु वे विश्वासियों के साथ इस बात पर सहमत नहीं होते हैं कि परमेश्वर के साथ शांति के लिए सिर्फ यीशु ही एकमात्र मार्ग है।

बौद्धों के साथ विश्वासियों को अपना विश्वास बांटने के समय क्या करना चाहिए?

1. हमें उनके प्रति सब प्रकार से पूरा सम्मान प्रगट करना चाहिए। बौद्ध धर्मावलम्बी शिष्टाचार और शालिनता को ऊँचा स्थान देते हैं; यदि हम चाहते हैं कि वे हमारी सुनें तो हमें इन बातों का गंभीरतापूर्वक प्रदर्शन करना ही चाहिये।
2. विश्वास के विषय पर बौद्धों से बुद्धिमानी पूर्वक बातचीत करने हेतु हमें बुद्ध की शिक्षाओं को समझने का प्रयास करना चाहिए।
3. पुराना नियम के नीतिवचन और सभोपदेशक की पुस्तकों से कुछ अनुच्छेदों का उद्धरण देना सहायक होगा।
4. आष्टांगिक मार्ग के पक्षों का उपयोग करते हुए बौद्धों के साथ सम्बंध बनाइए (सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वचन, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि)। प्रगट कीजिए कि इन सब की पूर्णता यीशु मसीह में और उसके द्वारा है।
5. बौद्ध लोक-धर्म (जिसे नवबौद्ध धर्म भी कहा जाता है) और शुद्ध बौद्ध धर्म के मध्य की भिन्नता को सीखिए। उसी के अनुसार बातचीत और विचार विमर्श कीजिए।

बौद्धों के साथ सुसमाचार बांटते समय क्या नहीं करना चाहिए।

1. उनकी जीवन शैली या विश्वास को छोटा मत जानिये/ अनादर मत कीजिए।

2. बौद्ध विश्वास के साधारण और व्यवस्थित स्पष्टीकरण की आशा मत कीजिए।
3. आक्रामक अथवा आलोचनात्मक स्वभाव कभी मत दिखाइए।
4. विवाद करने वाले ना होना या धर्मों की तुलना मत करना। इसकी अपेक्षा जो कुछ आप करते है और बोलते हैं उसमें मसीह को और उसके चरित्र को प्रगट कीजिए।
5. शीघ्रतापूर्वक सुसमाचार का तैयार पैकेज प्रस्तुत मत कीजिए। दीर्घकालिक सम्बंध बनाइये।

पाठ 8

नव-बौद्ध धर्म

नव-बौद्ध धर्म क्या है और यह बौद्ध धर्म से किस तरह सम्बंध रखता है?

1. "नव" का अर्थ "नया-और-भिन्न" होता है इसलिए यह बौद्ध धर्म के नए संस्करण को सूचित करता है जो पुराना के समान तो है किन्तु कुछ भिन्न है।
2. भारत का नव-बौद्ध धर्म विश्व में कहीं और पाए जाने वाले बौद्ध धर्म से भिन्न है, ऐसा उसके राजनैतिक और सामाजिक-कार्यकर्ताओं से मजबूत सम्बंधों के कारण है।
3. नव-बौद्धावलम्बी, बुद्ध को मात्र आध्यात्मिक अगुवा मानने के बजाय राजनैतिक और सामाज सुधारक के रूप में सम्मान देते हैं। वे इस बात की ओर संकेत करते हैं कि बुद्ध ने अपने मठ के शिष्यों से अपेक्षा की थी कि वे जाति-भेद को अनदेखा करें।
4. जबकि बौद्ध धर्म सम्यक् या सही जीवन शैली पर जोर देता है, भारत में नव-बौद्धों का जोर वंचित-शोषित वर्ग के लिए राजनैतिक और सामाजिक अधिकार दिलाने पर रहा है।

भारत में नव-बौद्ध धर्म कैसे इतना लोकप्रिय हो गया?

1. 20वीं सदी के आरंभ में, बौद्ध धर्म भारत में मृतप्राय-सा था, जबकि यह उसका जन्म स्थान है। कुछ आदिवासी समूह ही बौद्ध धर्म का पालन करते रहे थे किन्तु ये समूह भारतीय समाज के हाशिए पर थे।
2. 1956 में, बी.आर.अम्बेडकर ने नागपुर में दलितों की एक बड़ी जनसभा में धर्म परिवर्तन कर बौद्ध धर्म को अपना लिया। स्वयं दलित होते हुए उन्होंने स्वयं को और अपने दलित अनुयायियों को हिन्दू जाति-व्यवस्था के उत्पीड़न से मुक्त कराने के लिए बौद्ध धर्म का चुनाव किया।
3. एक मठवासी साधु के द्वारा एक बौद्ध के रूप में संस्कारित किए जाने के पश्चात् उन्होंने स्वयं ही अपने 3,80,000 (कुछ इसे 6,00,000 कहते हैं) अनुयायियों का, जो वहां उपस्थित थे, संस्कार पूर्ण किया। इसके पश्चात् दो महीने से भी कम समय में उनकी मृत्यु हो गई।

वर्तमान भारत में नव-बौद्ध :

1. अम्बेडकर के धर्म परिवर्तन के थोड़े ही दिनों बाद, उनकी मृत्यु के पश्चात्, नव-बौद्ध आंदोलन कुछ धीमा पड़ गया। उसे अस्पृश्यों से वैसा तत्काल सामूहिक जनसमर्थन नहीं मिला जैसी आशा अम्बेडकर ने की थी। इस आंदोलन के अगुवों के मध्य विभाजन और दिशाहीनता एक अतिरिक्त बाधा रही।
2. तौभी नव-बौद्ध (जिसे बहुधा नया-बौद्ध धर्म और दलित बौद्ध धर्म कहा जाता है) दलितों से आए नए सदस्यों से बढ़ता आया है। 2001 जनगणना के अनुसार भारत में 7 करोड़ 95 लाख बौद्ध थे जिनमें से 5 करोड़ 83 लाख महाराष्ट्र में थे।
3. 2001 में उदित राज नामक नव-बौद्ध अगुवे ने (जिनका पूर्व नाम राम राज था) दलितों का बौद्ध धर्म में बड़े स्तर पर परिवर्तन आयोजित करने का प्रयास किया था, परन्तु इस प्रयास को शासन से तीव्र विरोध का सामना करना पड़ा। और भी प्रयास किये गये है कि हिन्दु धर्म से बौद्ध धर्म में परिवर्तन किया जायें; बहुधा ये अभियान आत्मिक की अपेक्षा राजनैतिक अधिक दिखाई देते हैं।
4. नव-बौद्धों की संख्या दो प्रान्तों में केन्द्रित दिखाई देती है: अम्बेडकर के अपने मूल प्रांत महाराष्ट्र में और उत्तर प्रदेश में।

5. बौद्ध धर्म भारत का पांचवा बड़ा धर्म है जिसमें महाराष्ट्र की 6% जनसंख्या है, किन्तु भारत की कुल जनसंख्या के 1% से भी कम लोग बौद्ध हैं। (तथापि नव-बौद्ध अगुवे दावा करते हैं कि ये आंकड़े जनगणना में अनियमितता के कारण हैं, और अनेक बौद्ध प्रतिबंध के भय से सार्वजनिक रूप से परिवर्तित होना टालते हैं। ये अगुवे दावा करते हैं कि असली संख्या इससे कहीं अधिक बढ़कर है।)

नव-बौद्धों के प्रति विश्वासियों का प्रतिउत्तर :

1. भारतीय स्वभाव से ही बहुत धार्मिक होते हैं किन्तु अधिकांश भारतीय नव-बौद्ध कभी भी यह नहीं पहचाने हैं कि नवबौद्ध यथार्थ में कोई धर्म नहीं है। बौद्ध धर्मीय किसी देवी-देवता को नहीं मानते/या नहीं पूजते इस तथ्य की क्षतिपूर्ति करने के लिये बहुतेरे भारतीय नव-बौद्ध हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना करते हैं।
2. विश्वासी, नव-बौद्ध धर्म अपनाए बिना ही दलितों के सामाजिक एजेंडा के साथ पहचान बना सकते हैं। सच तो यह है कि विश्वासियों को उन अगुवों में होना चाहिए जो वंचित और दबे-कुचले लोगों के लिए संघर्ष करते हैं (मत्ती 25:31-46; 1 यूहन्ना 3:17-18)।

पाठ 9

बौद्ध धर्म के प्रति विश्वासियों का प्रतिउत्तर

बुद्ध ने कहा, "तुम जो हो वही हो जो तुम थे। तुम कल क्या होंगे यह वह है जो अब तुम करते हो।" बाइबल कहती है, "इसलिए, यदि कोई मसीह यीशु में है तो वह नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गईं देखो सब नई हो गई हैं!"

बौद्धों तक पहुंचने की रणनीति विकसित करने में यह आदेशात्मक है कि जो सुसमाचार प्रचार कर रहा है वह तीन सिद्धांतों को अपने मन में रखकर चले। पहला, उसे अपने श्रोताओं के साथ सम्बंध बनाने की जिम्मेदारी स्वीकार करना होगा। दूसरा, उसे बौद्ध धर्म की विभिन्न शिक्षाओं के लिए अपनी रणनीति में बदलाव करने हेतु तैयार रहना होगा। तीसरा, उसके समस्त प्रयासों में उसकी मुख्य निर्भरता पवित्र आत्मा पर होनी होगी।

एक सेवकाई जिसका नाम "लेट दि अर्थ हिअर हिज़ वॉयस" है, उसने बौद्धों के मध्य सेवा के सम्बंध में कुछ निम्नलिखित अनुरोध किये हैं :

1. मसीहीयत को प्रस्तुत करते समय, सुसमाचार में दिया गया यीशु मसीह का व्यक्तित्व मुख्य संदेश होना चाहिए। सुमसाचार से यीशु से संबंधित वृत्तांत, उसका जीवन, उसका मनोभाव, उसका प्रेम और लोगों के साथ के उसके सम्बंध बौद्धों को आकर्षित करते हैं। परन्तु ऐसा करते हुए यीशु की बुद्ध के साथ तुलना न करें क्योंकि यह बौद्धों में अनावश्यक आत्मरक्षक प्रतिक्रिया को उत्तेजित करती है।
2. बौद्धों तक पहुंचने के लिए अच्छे अनुवादों और साहित्य की आवश्यकता है। बहुधा पूर्व में किये गये अनुवाद अपर्याप्त रहे हैं, कभी कभी तो बाधा तक बने हैं। यीशु मसीह के व्यक्तित्व पर आकर्षक पुस्तिकाओं (जतंबजे) की आवश्यकता है। बौद्धों के लिए बाइबलों को और अधिक उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। अनेक बौद्ध धर्मावलम्बी युवक यीशु के बारे पढ़ना चाहते हैं और मसीही पत्राचार पाठ्यक्रमों की मांग किये हैं। जब तक अवसर है तब तक हमें इस भूख का लाभ उठाने की आवश्यकता है।
3. हमें आराधना के ऐसे स्वदेशी तरीकों को काम में लाने चाहिये जिनसे बौद्ध आसानी से जुड़ेंगे। आराधना की विदेशी पद्धतियां रुकावट रही हैं।
4. हमें बौद्धों के साथ, स्वस्थ मित्रता विकसित करते हुए, और उनके सामने अपने मसीही विश्वास को जीते हुये, सामाजिक सम्बंध विकसित करने चाहिए। यदि विश्वास के कारणों से किसी सामाजिक या मूर्तिपूजक रीति-रिवाज से दूरी बनाना आवश्यक हो तो इसे कम से कम आहत पहुंचाने के तरीके से करना चाहिए, और उसके ऐवज में कुछ और काम में लाना चाहिये जिससे बड़े प्रेम और विश्वसनीयता का प्रमाण मिलेगा।
5. अपने प्रयास को एक अकेले व्यक्ति की अपेक्षा पूरे परिवार को एक ईकाई मानकर उस पर केन्द्रित करें। सामाजिक और पारिवारिक बंधन इतने मजबूत होते हैं कि बहुधा एक अकेला व्यक्ति बौद्ध धर्म में वापस चला जाता है यदि उसके परिवार के अन्य सदस्य उसके साथ विश्वासी नहीं बनते हैं। बौद्ध बच्चों के मध्य कार्य करते समय उन बच्चों के माता-पिता और पूरे परिवार को सेवकाई प्रदान करने का प्रयास करें। माता-पिता को सम्मिलित किए बिना बच्चों को

प्रभु के पास लाने से बचना चाहिए। यदि परिवार का मुखिया अपना हृदय यीशु को देता है तो पूरे घराने का कलीसिया में स्वागत् किया जा सकता है।

अंततः, यह पहचानें कि बौद्धों के लिए मसीहीयत में आने की असली बाधाएं सांस्कृतिक और सामाजिक रही हैं। परन्तु राष्ट्रीय कलीसियाओं के अधिक मजबूत बनने के द्वारा भूतपूर्व बौद्धों के लिए अपने नए पाए विश्वास को जीने के लिये नई अभिव्यक्तियां प्राप्त होंगी।

और जैसे जैसे अधिक से अधिक बौद्ध विश्वासी बनेंगे, उनके मध्य पवित्र आत्मा की परिवर्तनकारी सामर्थ्य के द्वारा उन देशों की संस्कृतियां प्रभावित होना आरंभ होंगी।

पाठ 10

जैन धर्म का उदय, वस्तु-स्थिति और विश्वास

परिचय : जैन धर्म विश्व के सबसे प्राचीन धार्मिक परम्पराओं में से एक है। भारत में उदय होने के कारण वह हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म के साथ अनेक समानताएं रखता है। पचास लाख से भी कम अनुयायियों के साथ, और भारत की कुल जनसंख्या के 1% से भी कम संख्या वाला धर्म होने के बावजूद, जैन धर्म ने फिर भी उल्लेखनीय दृढ़ पकड़ दिखायी है और अपनी छोटी संख्या से परे दूर तक प्रभाव डालता है।

संस्थापक : जैन धर्म ने अपना नाम संस्कृत के एक शब्द से पाया है जिसका अर्थ "जिन के या विजेता के अनुयायी" होता है। इसकी स्थापना ईसा पूर्व छठवीं सदी में महावीर (महान नायक) के द्वारा हुई थी। महावीर ने स्त्री और पुरूष दोनों प्रकार के साधुओं के मठवासी समुदाय स्थापित किए। महवीर को जैनियों के द्वारा 24 ऐसे शिक्षकों में से सबसे आधुनिक माना जाता है जिन्होंने जैन धर्म को संसार में लाया। इन शिक्षकों या "तीर्थंकरों" ने धार्मिक जागृति का एक मार्ग बताया जो कठोर धार्मिक आत्मसंयम के पालन के द्वारा संसार का त्याग करने पर आधारित है।

मुख्य सिद्धांत :

1. जैन एक सृष्टिकर्ता ईश्वर के होने में विश्वास करने का इन्कार करते और कठोर आत्मत्याग के जीवन के द्वारा अन्तहीन पुनर्जन्म से मुक्त होने की खोज करते हैं। जिन यह उपाधि उन्हे दी जाती है जिनके लिए यह विश्वास किया जाता है कि उन्होंने सब भौतिक अस्तित्व के ऊपर विजय पा ली है। जैसे सब मानवीय कार्य से "कर्म" जमा होता है, जो पुनर्जन्म को बनाये रखने की शक्ति है, तो किसी भी जीव या आत्मा को भौतिक अस्तित्व के दासत्व से स्वतंत्र करने का एकमात्र रास्ता इस प्रक्रिया को तप करके कम करना है।
2. जैनी लोग विश्वास करते हैं कि प्रत्येक जन्तु (कीड़े-मकोड़े भी) में जीव या आत्मा है। इसीलिए वे सब जीवित प्राणियों के साथ "अहिंसा" का पालन करते हैं। जीवन के प्रति चिन्ता समस्त प्राणियों के प्रति की गई है, यहां तक कि अदृश्य सूक्ष्म कीटाणुओं के प्रति भी की गई है। एक आदर्श जैन वह भिक्षुक सन्यासी होता है जो सब प्राणियों को हानि न पहुंचाने के लिए अत्यधिक सावधानी रखता है। कभी कभी जैन साधु और साध्वियां अपने मुंह को कपड़े से ढांके हुये देखाई देते हैं ताकि उड़ने वाले कीडों को दूर रखें और उन्हें अपने मार्ग से छोटे जीव जन्तुओं को हटाने के लिए हल्के हाथों से झाड़ू चलाने का भी आदेश होता हैं ताकि वे उन्हें गलती से कुचल न दें।
3 वे विश्वास करते हैं कि प्रत्येक जीव (प्रत्येक जीवित प्राणी) ज्ञान, समन्वय और शक्ति के द्वारा दैवीय होने की क्षमता रखता है। इसलिए प्रत्येक प्राणी के साथ समान आदर का व्यवहार किया जाना चाहिए।
4. वे कर्म पर "जीवन बल" के रूप में विश्वास करते हैं जिसे जमा किया या खोया जा सकता है।
5. वे विश्वास करते हैं कि जहां तक कर्म की बात है प्रत्येक प्राणी - या आत्मा - या तो मनुष्य, मनुष्य से कुछ कम, नारकीय या दैवीय के रूप में जन्म लेता है।
6. प्रत्येक प्राणी इस जीवन में या उसके बाद के जीवन में अपने जीवन का सृष्टिकर्ता है।

प्रमुख पवित्र ग्रंथ : जैनियों के पवित्र ग्रंथ "आगम" कहलाते हैं। जैन धर्म की दो प्रमुख शाखाएं बहुतेरे समान पवित्र ग्रंथों को मानती हैं, तथापि ईसवी सन पांचवी सदी में हुये उनके विभाजन के समय से उन्होंने पुस्तकों के हस्तांतरण की विभिन्न परम्पराएं विकसित कर ली हैं। दोनों ही शाखाएं दावा करती हैं कि सर्वाधिक प्राचीन पुस्तकें महावीर से ही आई हैं, मठवासियों के द्वारा पीढ़ियों से इनका मौखिक हस्तांतरण होता रहा है और पवित्र ग्रंथ इसवी सन 500 तक नहीं लिखे गये थे।

दो परम्पराएं : जैन धर्म की दो शाखाओं, "श्वेताम्बर" (श्वेत वस्त्र धारी)और "दिगम्बर" (अम्बर से ढंके या निर्वस्त्र) के मध्य अनेक भिन्नताएं हैं। श्वेताम्बर विश्वास करते हैं कि साधु-साध्वियों को साधारण सफेद वस्त्र
धाारण करने की अनुमति होनी चाहिए। दिगम्बर अधिकार रूप से मांग करते हैं कि साधुओं को निर्वस्त्र रहना चाहिए।

पाठ 11

जैन धर्मावलंम्बियों के प्रति विश्वासियों का प्रतिउत्तर

मसीही लोग जैन लोगों के इस विश्वास में उनके साथ सहमत हो सकते हैं कि प्रत्येक जीवित प्राणी के साथ सम्मान का व्यवहार किया जाना चाहिए। हम इस विचार को वहां तक नहीं ले जाते जहां तक जैन ले जाते हैं, क्योंकि हम यह विश्वास नहीं करते कि प्रत्येक पशुओं और कीड़े-मकोड़ों में आत्मा होती है। मात्र आदम (और उसके द्वारा समस्त मानवजाति) को परमेश्वर की समानता में (आत्मा के साथ - उत्प. 1:26) बनाया गया था और मात्र आदम के अन्दर (और उसके कारण समस्त मानवजाति में) परमेश्वर ने अपना श्वांस फूँका था (उत्प. 2:7)।

1. तौभी, परमेश्वर ने इस संसार को बनाया है और उसकी परवाह करने का निर्देश उसने हमें दिया है (उत्प. 1:26-30; 2:15)।
2. यह संसार परमेश्वर के द्वारा रचा गया था। यह उसका है और उसके आनन्द और महिमा के लिए उसका अस्तित्व है (भजन 24; कुलु. 1:16)।
3. महाजलप्रलय के पश्चात् परमेश्वर ने नूह और उसकी वंश के साथ एक वाचा बाँधी, "और सब जीवित प्राणियों से भी जो तुम्हारे संग हैं; क्या पक्षी, क्या घरेलू पशु क्या पृथ्वी के सब बनैले पशु, पृथ्वी के जितने जीवजन्तु जहाज से निकले हैं" (उत्प. 9:9-10)। इसका यह अर्थ नहीं है कि परमेश्वर ने सब प्राणियों में आत्मा डाल दिया किन्तु इससे हमें दिखता है कि परमेश्वर ने इस सृष्टि को जो महत्व दिया है। इसी प्रकार हमें भी पृथ्वी और जो कुछ उसमें है उसकी कदर करनी चाहिए।

क्या परमेश्वर कर्म के अनुसार व्यवहार करता है?

1. कुछ लोग कह सकते हैं कि कर्म मसीहीयत का भाग है क्योंकि गलातियों 6:7 में कहा गया है, *"धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा।"*
2. यद्यपि पवित्रशास्त्र हमें सिखाता है कि हम जो बोएंगे वही काटेंगे, हमें स्मरण रखना चाहिए कि गलातियों 6:7 इस जीवनकाल के बारे बात कर रहा है आने वाले जीवन के बारे नहीं।
3. "कर्म" और हम जो बोते हैं उसे ही काटते हैं का बाइबलीय विचार एक समान नहीं है। बाइबल सिखाती है कि हम एक बार मरेंगे और तब न्याय होगा। इब्रानियों 9:27 कहता है, *"और जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।"*

पुनर्जन्म में जैनियों का (जैसे कि बौद्धों, हिन्दुओं और औरों का) जो विश्वास है उसके बारे में क्या कहेंगे? बाइबल पुनर्जन्म के बारे में क्या कहती है?

1. बाइबल का सम्पूर्ण जोर पुनर्जन्म का विरोध करता है। इसके बजाय बाइबल यह घोषणा करती है कि मनुष्य परमेश्वर की एक विशेष रचना है, जो परमेश्वर की समानता में रचा गया है, और उसमें भौतिक शरीर (पदार्थ) और अभौतिक (आत्मिक) आत्मा दोनों हैं।
2. बाइबल में मनुष्य अन्य सभी प्राणियों से अलग और विशिष्ट प्रस्तुत किया गया है - वह प्रेत लोक (या आत्माओं के संसार) से और उसी तरह पशु जगत से भी अलग है।
3. बाइबल सिखाती है कि मृत्यु होने पर मनुष्य का शरीर, इसलिये कि नाशमान है, सड़ता और मिट्टी में मिल जाता

है, उसकी आत्मा बनी रहती है या तो पीड़ा के स्थान में -उनकी जो यीशु का इन्कार करते हैं, या स्वर्गलोक (स्वर्ग) में परमेश्वर की उपस्थिति में - उनकी जो उद्धारकर्ता में विश्वास कर लिये हैं। दोनों ही श्रेणियों के लोग पुनर्जीवित किए जाएंगे, एक अनन्त न्याय के लिए और दूसरे महिमान्वित देह के साथ अनन्त जीवन के लिए (यूहन्ना 5:25-29)।

जैनियों तक यीशु मसीह के प्रेम और उद्धार के संदेश के साथ कैसे पहुंचा जा सकता है?

1. जैन और बौद्धों मे बहुत समानताएं हैं, उनके विश्वासों में और इस तथ्य में भी कि तुलनात्मक रीति से दोनों ही समूहों से कम ही लोग मसीह में आए हैं।
2. जैनियों तक पहुंचने के लिए भी वही सिद्धान्त लागू होते हैं जो बौद्धों के लिए पाठ 9 में बताए गए हैं।

पाठ 12

सिक्ख धर्म का उदय, वस्तु स्थिति और विश्वास

सिक्ख धर्म विश्व का सबसे युवा धर्म है जिसकी स्थापना 500 वर्षों से कुछ ही अधिक समय पूर्व हुई है।

1. पूरे विश्व में लगभग दो करोड़ सिक्ख पाए जाते हैं इसके कारण यह विश्व का पांचवा सबसे बड़ा धर्म बनाता है। अधिकतर सिक्ख भारत के पंजाब प्रांत में निवास करते हैं।
2. सिक्ख धर्म की स्थापना **गुरू नानक** नामक एक पंजाबी के द्वारा की गई थी। सिक्ख उनकी और उनके बाद के नौ अन्य गुरूओं की शिक्षाओं का पालन करते हैं।
3. गुरू नानक हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य अत्याधिक बैर के समय में हुए थे। उनका सर्वाधिक प्रचलित कथन था, "न कोई हिन्दू है, न कोई मुसलमान, अत: मैं किसके मार्ग पर चलूँ? मैं ईश्वर के मार्ग पर चलूंगा।"
4. दसवें गुरू ने घोषणा की कि उनके बाद कोई मानवीय गुरू नहीं होगा किन्तु उनका पवित्र ग्रंथ, श्री गुरू ग्रंथ साहिब, "जीवित गुरू" ही उनकी शिक्षा का स्रोत होगा।

सिक्ख क्या विश्वास करते हैं?

1. सिक्ख विश्वास करते हैं कि सिर्फ एक ही ईश्वर है और उसका न कोई लिंग है और न कोई रूप है, अर्थात् वह निराकार है।
2. सिक्ख विश्वास करते हैं कि ईश्वर तक सब पहुंच सकते हैं और सब उसके सामने बराबर हैं।
3. सामाजिक जीवन में ईमानदारी और एक दूसरे की चिन्ता करते हुए अच्छा जीवन यापन किया जा सकता है।
4. सिक्ख धर्म मात्र रीति-विधियों का परम्परागत पालन करने की अपेक्षा भले कार्य करने के महत्व पर जोर देता है। वे मानते हैं कि खोखली रीति-विधियां मूल्यहीन हैं।
5. सिक्ख विश्वास करते हैं कि भला जीवन-यापन करने का मार्ग यह है कि:
   ए. ईश्वर को सारे समय हृदय और मन में रखें।
   बी. ईमानदारी से जीएं और कठोर परिश्रम करें।
   सी. सबके साथ बराबर का व्यवहार करें।
   डी. कम भाग्यशाली लोगों के प्रति उदार रहें।
   ई. दूसरों की सेवा करें।
6. हिन्दूओं और बौद्धों के समान ही सिक्ख भी पुनर्जन्म और कर्म पर विश्वास करते हैं। वे विश्वास करते हैं कि इस जीवन में आपका भाग्य पूर्व जन्म में आपके किए कार्य से निर्धारित होता है।
7. सिक्खों के अनुसार जन्म और मृत्यु के चक्र से बाहर निकलने का एकमात्र रास्ता ईश्वर का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना और उसके साथ एक हो जाना होता है। सिक्खों की आत्मिकता ईश्वर को जानने और उसका अनुभव करने और अन्तत: ईश्वर के साथ एक हो जाने के चहुंओर केन्द्रित है।
8. ऐसा करने के लिए एक व्यक्ति को अपना सम्पूर्ण ध्यान स्वयं से हटाकर ईश्वर पर केन्द्रित करना चाहिये। वे विश्वास करते हैं कि यह स्थिति, जिसे *मुक्ति* कहा जाता है, ईश्वर की कृपा से प्राप्त की जाती है। इसका अर्थ यह है कि यह ऐसा कुछ है जिसे ईश्वर मनुष्य के लिए करता है, और ऐसा नहीं है जिसे मनुष्य स्वयं अर्जित कर सके। फिर

भी ईश्वर लोगों को पवित्र ग्रंथों के द्वारा और संतों के उदाहरणों से उसके (ईश्वर के) करीब पहुंचने का सर्वोत्तम मार्ग दिखाता है।

सिक्ख इस संसार में अच्छा जीवन यापन करने का प्रयास करते हैं।

1. एक सिक्ख प्रतिदिन अन्य लोगों की सेवा करने के द्वारा ईश्वर की सेवा करता है। वे सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित करने के द्वारा अशुद्ध अहंकार और घमण्ड से छुटकारा पाने का प्रयास करते हैं। सिक्ख सोचते हैं कि लोगों का दूसरों के प्रति ध्यान न देकर धर्म के प्रति दासोचित् समर्पण ईश्वर को प्रसन्न नहीं करता।
2. अनेक सिक्ख गुरूद्वारा में कार्य करके समाज के प्रति अपनी सेवा पूरी करते हैं। इसमें रसोई में कार्य करने से लेकर फर्श पर पोंछा लगाना भी आता है। लंगर, या नि:शुल्क भोजन रसोई, यह सेवा का सामुदायिक कार्य है।
3. सिक्ख यह भी मानते हैं कि रोगियों और निर्धनों की सेवा करना सेवा का महत्वपूर्ण कर्तव्य है।

पाठ 13

सिक्ख धर्म के प्रति विश्वासियों का प्रतिउत्तर

सिक्खों के तीन कार्य : प्रार्थना करना, परिश्रम करना और दान देना

1. प्रार्थना करना (नाम जपना) : ईश्वर को सारे समय मन में रखना
2. परिश्रम करना (कीरत करना) : ईमानदारी से धन कमाना। चूंकि ईश्वर सत्य है एक सिक्ख ईमानदारी से जीवन यापन करने का प्रयास करता है। इसका अर्थ मात्र अपराध से बचना ही नहीं है; सिक्ख जुआ खेलने, भीख मांगने या शराब या तम्बाकू के उद्योगों में कार्य करने से भी बचते हैं।
3. दान देना(वंड चखना) (अक्षरश: अपनी आमदनी दूसरों के साथ बांटना) : दान देना और दूसरों की परवाह करना।

सिक्खों के अनुसार पांच अवगुण: सिक्ख पांच बुराइयों से बचने का प्रयास करते हैं जो लोगों को स्वार्थी बनाती हैं और उनके जीवन में ईश्वर के विरूद्ध रोड़ा खडा करती हैं :

1) वासना
2) लोभ या लालच
3) इस संसार की वस्तुओं से लगाव
4) क्रोध और
5) गर्व या घमण्ड

सिक्खों के अनुसार वह व्यक्ति जो इन बुराइयों पर जय पाता है मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर होगा।

परमेश्वर के प्रेम और उद्धार के साथ सिक्खों तक कैसे पहुंचें :

1. बिलकुल वैसे ही जैसे आप उन दूसरों के पास पहुंचते हैं जो झूठे ईश्वरों पर विश्वास करते हैं। सिक्ख सब झूठ के सरदार शैतान के द्वारा मूर्ख बनाए गए हैं और उसके बंधन में रहते हैं।
2. परमेश्वर के प्रेम और उद्धार के साथ सिक्खों तक पहुंचना आत्मिक युद्ध है। जैसा कि सब आत्मिक युद्धों में होता है, हमें परमेश्वर के सब हथियार बांध लेने चाहिए (इफि. 6:10-18)।
   ए. सत्य का कमरबन्द आपकी कमर पर बांधा गया हो। यीशु "मार्ग, सत्य और जीवन है" (यूह. 14:6) और हम जो उसकी संतान है उन्हें सर्वदा पूर्ण सत्य के साथ बोलना और और व्यवहार करना चाहिए। यह परमेश्वर के बच्चों के लिए उस बेल्ट के समान केन्द्रिय बात है जिसे हम अपनी कमर में बांधते हैं।
   बी. धार्मिकता का झिलम। धर्मी होने का अर्थ होता है कि हम बिना चुके वही करते हैं जो - परमेश्वर की दृष्टि में और मनुष्यों की दृष्टि में भी - सही है। जब परमेश्वर के बच्चे धार्मिकता से जीवन यापन करते हैं तो मानो ऐसे होता है कि उनके पास झिलम का हथियार है जो उनकी रक्षा करता है और शत्रु के तीर और हमले उन तक नहीं घुस सकते।
3) पैरों में वह तत्परता है जो शान्ति के सुसमाचार से आती है। अवश्य है परमेश्वर की संतान शान्तिपूर्ण जीवन जीये ताकि

रिश्तों की कोई भी रुकावट उन्हें दूसरों के साथ परमेश्वर का प्रेम और उद्धार बांटने में तत्पर रहने से रोक नहीं पायेगी।

4) विश्वास की ढाल। विश्वास यह हमारी बुद्धि और हृदय दोनों में (बौद्धिक और भावनात्मक दोनों रीति से) ऐसी मान्यता है कि परमेश्वर सब परिस्थितियों के ऊपर नियंत्रण रखता है, चाहे वह कितनी ही निराशाजनक क्यों न दिखाई देती हो, और यह कि वह उसमें अपने स्वयं के लिये विजय और महिमा हासिल कर सकता है।

5) उद्धार का टोप। हम परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार प्राप्त किये हुये होने के बिना शत्रु के आक्रमणों के आगे पूर्णत: असुरक्षित ही होंगे।

6) आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है। ध्यान दीजिए कि यहां जो तलवार का उल्लेख है तो यह आक्रमण करने वाला पहिला हथियार है, उपरोक्त सब हथियार सुरक्षात्मक हैं। परमेश्वर का वचन - बाइबल - यह एकमात्र हथियार है जो आत्मिक विजय पाने हेतु हमले करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। परमेश्वर की संतानों को उसका वचन याद करना या सीखना चाहिए ताकि वे दूसरों को पाप के लिए निरूत्तर करने और उन्हे परमेश्वर के प्रेम के प्रति भरोसा दिलाने के लिए तलवार की तरह उसका उपयोग कर सकें।

7) अंत में, "हर समय सब बातों के लिए आत्मा में प्रार्थना करते रहो।" प्रार्थना वह इंधन है जो परमेश्वर के सामर्थ्य को हमारे जीवनों में कार्य करने के लिए खोल देती है, विशेषकर आत्मिक क्षेत्र के मामलों में। शारीरिक चंगाइयों के लिए प्रार्थना कीजिए! दुष्ट आत्माओं से छुटकारे के लिए प्रार्थना कीजिए - और अन्य प्रकार के बंधनों से भी जैसे कि - तम्बाकू, शराब, नशीले पदार्थ, जुआ, अश्लील साहित्य या वीडियो का बंधन, इत्यादि से छुटकारे के लिए भी प्रार्थना कीजिये।

पाठ 14

चर्च ऑफ जीजस क्राईस्ट ऑफ लैटर डे सेंट्स (मॉरमोन्स)

परिचय : चर्च ऑफ जीजस क्राईस्ट ऑफ लैटर डे सेंट्स (एलडीएस) जिन्हे मॉरमोन्स के नाम से अधिक बेहतर रीति से जाना जाता है, यह एक पंथ है जो मसीहीयत से निकला है। मॉरमोन्स स्वयं को मसीही कहते हैं किन्तु उनके विश्वास की बातें अनेक महत्वपूर्ण विषयों में सच्ची मसीहीयत से भिन्न है।

उन्नीसवीं शताब्दी में जोसेफ स्मिथ के द्वारा अमेरिका में मॉरमोनवाद की नींव रखी गई थी। स्मिथ ने दावा किया कि एक स्वर्गदूत उसे एक पहाड़ी पर ले गया जहां उसके कहने के अनुसार उसने एक गड्ढ़ा खोदा और सोने के तख्तों का एक जोड़ा पाया जिसमें से उसने मॉरमोन की पुस्तक का अनुवाद किया। (किन्तु आज तक किसी ने इन दो स्वर्ण तख्तों को नहीं देखा है जिसके मिलने का दावा स्मिथ करते हैं।)

मॉरमोन्स का विश्वास क्या है?

1. मॉरमोन्स विश्वास करते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन तो है किन्तु परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन नहीं। वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर बाइबल के बाद बात करना बंद नहीं किया और यह कि उसने जोसंफ स्मिथ के साथ भी बातें कीं और उसे मॉरमोन की पुस्तक को दिया।
2. मॉरमोन्स विश्वास करते हैं कि इस्राएलियों का एक गोत्र ईसा से 600 वर्ष पूर्व अमेरिका आया। मॉरमोन्स की पुस्तक के अनुसार, पुनरूत्थान के पश्चात् यीशु अमेरिका आया था। मॉरमोन्स विश्वास करते हैं कि जब यीशु धरती पर वापस आएगा, वह सर्वप्रथम यरूशलेम जाएगा और फिर उसके बाद अमेरिका आएगा।
3. मॉरमोनवाद सिखाता है कि परमेश्वर पिता का हाड़-मांस का एक शरीर है।
4. जबकि मॉरमोनवाद सिखाता है कि यीशु शरीर धारण किया हुआ ईश्वर है, वह यह भी सिखाता है कि वह शरीर में "एक" ईश्वर है, तीन ईश्वरों में से एक जो त्रिएकता बनाते हैं। ये तीन ईश्वर हैं, पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा।
5. मॉरमोनवाद सिखाता है कि परमेश्वर असंख्य ईश्वरों में से एक ईश्वर है, कि ईश्वर भी अन्य किसी ग्रह में एक मनुष्य हुआ करता था, और वह उस संसार के ईश्वर के नियमों का पालन करके ईश्वर बन गया, और यह कि वह अपनी पत्नियों में से एक को पृथ्वी पर लाया जिसके साथ वह आत्मा-संतान (चपतपज बीपसकतमद) पैदा करता है जो जन्म

के समय मानव शरीर मे प्रवेश कर जाते हैं। मॉरमोन्स के अनुसार यीशु प्रथम आत्मा-बालक (स्पिरिट चाइल्ड) था।

6. मॉरमोनवाद सिखाता है कि अकेले क्रूस पर यीशु का बलिदान (और विश्वास से उसे ग्रहण करना) पापों की क्षमा के लिए पर्याप्त नहीं है। वह सिखाता है कि पापों की क्षमा परमेश्वर के साथ मिलकर सामुहिक प्रयास से प्राप्त होता है; अर्थात हमें क्षमा प्राप्त करने के लिए अच्छा होना चाहिए और मॉरमोन चर्च के नियमों और विधियों का पालन करना चाहिए। दूसरे शब्दों में हमें अपना उद्धार अर्जित करना चाहिए।
7. मॉरमोन विश्वास करते हैं कि आप अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। इसलिए वे वंशावली के अध्ययन में गहराई से लिप्त होते हैं।

मॉरमोनों के गुण-दोष

1. मॉरमोन भले और मित्रवत लोग हैं। वे शराब, तम्बाकू या अन्य नशीली वस्तुओं का उपयोग नहीं करते। वे चाय, कॉफी या कोका-कोला या अन्य कोई ऐसी वस्तु नहीं पीते जिसमें कैफीन होता है, जो अपने आप में लत लगाने वाला तत्व है।
2. मॉरमोनों में एक मजबूत सामाजिक भावना होती हैं। कुछ लोग उनमें के इस मजबूत सम्बंध की भावना के कारण मॉरमोन चर्च की ओर आकर्षित होते हैं।
3. मॉरमोनों को अपने जीवन के दो वर्ष मिशनरी कार्य के लिए देने होते हैं। यह सामान्य बात है कि मॉरमोन मिशनरियों को दो-दो करके जाते हुये, अपना साहित्य बांटते हुये और अनुचर बनाते देखना हुये देखा जाता है।
4. मॉरमोन मूलत: बहुपत्नी प्रथा का पालन करते थे और गौर वर्ण के न होनेवालों के प्रति भेदभाव दिखाते थे। तथापि, हाल ही के दशकों में इन्होंने इन दोनों व्यवहारों को अधिकारिक रीति से पलट दिया है। तौभी अनेक मॉरमोन्स आज भी बहुपत्नी प्रथा और रंगभेद का पालन करते हैं।

पाठ 15

मॉरमोन्स तक परमेश्वर के प्रेम में पहुंचना

निम्नलिखित सुझाव एक सेवकाई के वेबसाईट (www.mission2mormons.org) से लिए गए हैं जो मॉरमोन्स तक सुसमाचार की सत्यता को पहुंचाने का प्रयास करती है।

प्रार्थना कीजिए : क्या आप अपने एलडीएस मित्र, पड़ोसी या द्वार पर खड़े मिशनरी के पर अनंतकालिक प्रभाव छोड़ना चाहते हैं? तब आप प्रार्थना में विश्वासयोग्य होना चाहेंगे। मसीह के लिए मॉरमोन्स तक पहुंचना एक आत्मिक युद्ध है।

जब आप एक मॉरमोन को देखते हैं उसके लिए प्रार्थना कीजिए। अपने दैनिक प्रार्थना सूची में मॉरमोनों को स्थान दीजिए। किसी मॉरमोन मिशनरी से भेंट के पूर्व और पश्चात उसके लिए प्रार्थना कीजिए। अधिकांश लोग मॉरमोन चर्च में उनके गहन धार्मिक अध्ययन के लिए नहीं किन्तु एहसास और आत्मिक अनुभव के लिए जुड़ते हैं। जब मसीही मात्र बौद्धिक तर्क के साथ मॉरमोनों को गवाही देना चाहते हैं, तब परिणाम दुर्लभ होते हैं। मॉरमोनों को आवश्कता कि जो परदा उनके मनों पर पड़ा हुआ है उसे हटाये जाने का आश्चर्यकर्म हो जो फिर उनकी आंखों और कानों को पवित्र आत्मा के लिये खोल देगा।

अपने व्यवहार को जांचिए : लैटर डे सेंट्स के साथ सम्पर्क के लिए सही मनोवृत्ति और उद्देश्य होना अत्यंत आवश्यक है। हमें उनके प्रतिउत्तर के प्रति अधीर और क्रोधित होने से बचना चाहिए। कुछ मॉरमोन्स पहले ही से जानते हैं कि उनके एलडीएस चर्च में कुछ समस्याएं पहले ही से हैं, किन्तु वे बेहतर विश्वास के बारे में नहीं जानते होंगे! कभी कभी अपने

विश्वास की लगन के साथ रक्षा करते हुये भी वे गुप्त रीति से आशा करते होते हैं कि क्या हमारे पास उन्हें देने को कुछ बेहतर है? आप उनसे जो कुछ कह रहे हैं उससे अधिक आपकी नम्रता और प्रेमपूर्ण व्यवहार महत्वपूर्ण होता है। बिना प्रेम के हम झनझनाती हुई झांझ के समान हैं जो व्यर्थ है (1 कुरिं.13:1-13)। हमें सत्य को प्रेम से बोलन के लिए बुलाया गया है (इफि. 4:15)। हमें बोलने का आदेश दिया गया है परंतु उसे प्रेमपूर्ण तरीके से करना है।

वादविवाद को नहीं परंतु लोगों को जीतिए : यदि हम वादविवाद को जीतने के विचार से तर्कों में जाएं तो संभवत: हम

एक ऐसे व्यक्ति से भिड़ेंगे जो जूझने के लिए बराबरी से तैयार है। यदि आप कोई बात नहीं जानते हैं तो नम्रता से स्वीकार कर लीजिए और उनसे कहिए कि आप उनके लिये उत्तर को खोजेंगे। उत्तर लेकर उनसे यथाशीघ्र मिलिए। सजगता से सुनना स्मरण रखिए। यह कहते हुए उनके कथनों को दोहराइए कि क्या मैंने आपसे यह सुना है, "क्या यह सही है कि मैंने आपको यह कहते हुए सही सुना है कि आप विश्वास करते हैं कि .....।" लोगों को जीतने के लिए अच्छी संवाद कुशलता दूर तक लाभदायक होती है।

उनके मनपसंद तर्कों को जानिए : मॉरमोनवाद के संबंध में अल्प जानकारी बहुधा इवेंजलिकल मसीहियों को अपने मॉरमोन मित्रों और परिवार के सदस्यों के साथ सुसमाचार बांटते समय असुरक्षित बना देती है। मॉरमोनवाद में उपयोग किए जा रहे प्रचलित तर्कों और मूल शिक्षाओं को सीखने के लिए समय निकालिए। यदि आप उनकी बुनियादी बातों को नहीं समझेंगे तो आप उनके मध्य "मनुष्यों के मछुआरों" की अपनी प्रभावशीलता को सीमित करेंगे।

अच्छाई को स्वीकार कीजिए : आपके मॉरमोन मित्र के लिए एलडीएस का चर्च इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का प्रतिनिधित्व करता है। उनके लिए साल्ट लेक सिटी में आधारित मॉरमोन संगठन गुण और पवित्रता का प्रतीक है। जब तक कि हम मॉरमोन्स के पास जो कुछ अच्छाई है उसे स्वीकार नहीं करते तब तक हमारे मित्र उन बातों को सुनने के लिए नि:संदेह ही बन्द होंगे जो हमारे पास उन्हें सुनाने के लिये हैं। मसीही होने के नाते हम लैटर डे सेंट्स की प्रशंसा उनकी उस लगन के लिये कर सकते हैं जो उन्हें परमेश्वर की बातों के (यद्यपि वह बहुत अधिक गलत है) और परिवार और नैतिकता पर जोर देने के संबंध में है। यदि हम उनके इन कुछ सकारात्मक बातों को स्वीकार नहीं करेंगे तो हम ऐसे देखे-समझे जाने का खतरा उठाते हैं मानो हम उस विश्वास से बिलकुल ही अछूते जिसे वे जानते और प्रिय मानते हैं।

प्रश्न पूछिए : हमें मॉरमोनों के साथ बहस नहीं करनी चाहिए (2 तीमुथि. 2:23-26)। एलडीएस के लोगों को यह बताने के बजाय कि वे क्या विश्वास करते हैं, वार्तालाप का आरंभ प्रश्न पूछकर कीजिए। मॉरमोन्स अपने विश्वास के बारे आपको बताने का अवसर पाकर प्रसन्न होंगे। आप इस तरह के सामान्य प्रश्न पूछ सकते हैं : "यीशु आपके लिए क्या अर्थ रखता है?" या "क्या आप अनुग्रह से उद्धार पाए हैं?", "क्या आपका नया जन्म हुआ है?," "यह कब और केसे हुआ?" या "क्या आप विश्वास करते हैं कि आप एक अच्छे इंसान हैं?" यह बातचीत के लिए भयरहित माहौल प्रदान करेगा और उस व्यक्ति के बारे सीखने में आपकी मदद करेगा। (क्या वे पक्के मॉरमोन्स हैं या संभवत: नये-नये मॉरमोन बने हैं जिन्हें अभी भी मॉरमोन के सिद्धान्त सीखने की आवश्यकता है।) मॉरमोन्स के अगुवों की मौलिक शिक्षाओं को जान लेने से आप पूछ सकते हैं कि वे उन मनुष्यों का अनुसरण क्यों करते हैं जो उल्टा सिद्धान्त सिखाते हैं (यदि उन्होंने कोई बाइबलीय मत प्रगट किया हो तो)। यदि उनका विश्वास बाइबल की शिक्षा के विपरीत है तो आप उन्हें उस विषय पर पवित्रशास्त्र (बाइबल में प्राप्त मूलभूत प्रकाशन) क्या कहता है उस पर विचार करने कहिए। एक "जिज्ञासु व्यक्ति" बने रहिए और आप मार्ग में सुसमाचार के अनेक बीज बोते जाएंगे!

पाठ 16

यहोवा विटनेसेस

परिचय : मॉरमोनों की तरह यहोवा विटनेसेस भी एक कल्ट या पंथ है जो उन्नीसवीं सदी में संयुक्त राज्य अमेरिका में मसीहीयत में से ही उदय हुआ है।

1. पूरे विश्व में इसके लगभग 70 लाख विटनेसेस पाए जाते हैं।
2. इस पंथ की स्थापना चार्ल्स टेज़ रसेल के द्वारा की गई थी। इसका मुख्यालय न्यू योर्क में है। इस संगठन के सदस्य घर-घर जाकर सुसमाचार सुनाने के लिए; एक घर से दूसरे घर गवाही देने के लिए, अपना साहित्य बांटने के लिये और लोगों को परिवर्तित करने और भरती कर लेने के लिए जाने जाते हैं।
3. यहोवा विटनेस (JWs) विश्वास करते हैं कि पारम्परिक मसीही कलीसिया बाइबल की सच्ची शिक्षा से भटक गई है और परमेश्वर के पूर्ण सामंजस्य में कार्य नहीं करती है।
4. यहोवा विटनेस त्रिएकता के मसीही सिद्धान्त को अस्वीकार करते हैं जिसे वे तर्कहीन और बाइबल से असम्मत मानते हैं।

विश्वास :

1. यहोवा विटनेस अपना विश्वास बाइबल पर ही आधारित करते हैं और उसे नजरअंदाज करते हैं जिसे वे "मात्र मानवीय कल्पना और धार्मिक मत" कहते हैं। वे विश्वास करते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन है किन्तु वे कुछ अनुच्छेदों का गलत अनुवाद करते हैं।
2. मसीहियों की ही तरह ही यहोवा विटनेस के सदस्य संसार के पापपूर्ण मूल्यों को अस्वीकार करते हैं और अविश्वासियों से एक सीमा तक दूरी बनाये रखते हैं; वे "ससार में" हैं किन्तु "संसार के" नहीं हैं।
3. यहोवा विटनेस बड़ा दिन या ईस्टर नहीं मनाते क्योंकि वे विश्वास करते हैं कि ये त्योहार मूर्तिपूजक परम्पराओं और धर्मों पर आधारित हैं (या उनके द्वारा अत्यधिक दूषित हो चुके हैं)। वे इस ओर संकेत करते हैं कि यीशु ने अपने अनुयाइयों से उसका जन्मदिन मनाने नहीं कहा।
4. वे त्रिएकता का, मसीह के ईश्वरत्व का और उसके सदेह पुनरूत्थान का इंकार करते हैं।
5. यहोवा विटनेस सिखाते हैं कि यीशु अदृश्य रूप में 1914 में पृथ्वी पर वापस आया और अब स्वर्ग में राज्य करता है। वे विश्वास करते हैं कि अन्ततः जब वह पृथ्वी पर सदेह वापस आएगा, जो हर-मगिदोन के युद्ध के समय होगा, तब वह पृथ्वी पर अपना 1000 वर्ष का राज्य स्थापित करेगा।
6. यहोवा विटनेस विश्वास करते हैं कि इस 1000 वर्ष के राज्य के दरम्यान मृतक जी उठेंगे और अनन्त उद्धार प्राप्त करने का दूसरा अवसर प्राप्त करेंगे जो पृथ्वी पर *के "वाच टावर बाइबल एण्ड ट्रैक्ट सोसाईटी"* नामक यहोवा विटनेस संगठन के सिद्धान्तों का अनुसरण करने के द्वारा मिलेगा।

एक हजार वर्षों के पश्चात जो परमेश्वर को और उसके संगठन को अस्वीकार करेंगे वे नाश कर दिए जाएंगे; अर्थात उनका अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। (यहोवा विटनेस अनन्तकालीन नरक पर विश्वास नहीं करतें।) बाकी यहोवा विटनेस जिन्होंने इस पृथ्वी पर उसके संगठन का अनुसरण किया है वे अनन्तकालीन विनाश से बच निकलेंगे और स्वर्गलोक जैसी पृथ्वी पर अनन्तकाल के लिए निवास करेंगे। तौभी स्वर्ग 1,44,000 यहोवा विटनेसों के लिए विशेष स्थान होगा - सिर्फ उनके लिये जो "नया जन्म" पाए हुए लोग हैं और सिर्फ वे ही जिन्हें उनके वार्षिक प्रभु भोज सभाओं में सम्मिलित होने की अनुमति होती है। ये ही हैं जिन्हे "अविनाशी जीवन" मिला हुआ है और अन्य सभी यहोवा विटनेसों को "अनन्तकालिक जीवन" मिला है।

7. जो यहोवा विटनेस के साथ अध्ययन करते हैं वे सप्ताह में पांच सभाओं में सम्मिलित होने के लिए सहमत होते हैं जहां उन्हे 'वाच टावर' साहित्य से सिखाया जाता है। उनका तब तक बपतिस्मा नहीं होता है जब तक कि उन्होंने कम से कम छः माह तक अध्ययन नहीं कर लिया हो, और प्राचीनों की सभा के समक्ष अनेक प्रश्नों का उत्तर न दिया हो।
8. यहोवा विटनेस मतदान करने, राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देने और जन्मदिन मनाने को मना करते हैं।
9. वे आवश्यकता के समय शरीर में खून चढ़ाने से मना करते हैं और देश की सेना में नहीं जाते हैं।
10. यहोवा विटनेसों से घर-घर जाकर प्रचार करने की समय सारिणी मांगी जाती है और इसके द्वारा वे वॉचटावर साहित्य का वितरण करते हैं और दान एकत्र करते हैं।

पाठ 17

यहोवा विटनेसों तक परमेश्वर के प्रेम में पहुंचना

निम्नलिखित सामग्री को दो वेबसाईटों से लिया गया है : www.4witness.org and www.christiananswers.net

जब एक यहोवा विटनेस वॉचटावर और 'अवेक' मैगज़िन लेकर आपके द्वार पर आता है तब उनके एकमात्र लक्ष्य से सतर्क हो जाइये जो आप को उनके विश्वास में रूचि दिलाकर उनमें से एक बना लेने का होता है। वे आपके पास इसलिए नहीं आए हैं कि आपके आत्मिक विश्वास को अपने जीवनों के लिए बेहतर विकल्प मानते हैं। बिलकुल नहीं! वे विश्वास करते हैं कि उनके पास "सत्य" पहले ही से है और उन्हें देने के लिए आपके पास कुछ नहीं है।

कैसे एक मसीही एक ऐसे यहोवा विटनेस को सुसमाचार सुना सकता है जो यह सोचता है कि उसके पास सारे उत्तर है? निम्नलिखित चरणों में कुंजी दी जा रही है :

चरण 1 - उनके साथ वह बांटिए जो आपके पास है : हमारे पास वह आशा है जो यहोवा विटनेसों के पास नहीं है! जैसा नीचे का चार्ट बता रहा है, अनेक आत्मिक लाभ हैं जिसे यीशु के सच्चे अनुचर यहोवा विटनेस को दे सकते हैं जो उनके वाचटावर धर्म में जबरदस्त रीति से विपरीत हैं :

<u>जो मसीहियों के पास है</u>

आत्मिक लेपालकपन : सब मसीही शैतान के परिवार में से निकालकर परमेश्वर के घराने में "अपनाए" गए हैं, आत्मिक रीति से नया जन्म पाए हैं, उनके पास उनके "मध्यस्थ" के रूप में यीशु है, और नई वाचा के सब लाभ प्राप्त करते हैं (रोमियों 8:7-9, 14-17; 1 तीमुथि 2:5; इब्रानी 8:6)।

उद्धार का आश्वासन : मसीह में अनन्त जीवन सुरक्षित है (1 यूहन्ना 5:11-13)

आनन्द और खुशी : परमेश्वर के अनुमोदन का एहसास है, मसीह में कोई दण्ड नहीं है (रोमि. 8:1; 8:34)

शर्तहीन प्रेम : अस्वीकृत किये जाने का कोई भय नहीं है (यूहन्ना 10:28-29)। आप मसीह में कौन हैं इसके कारण आप स्वीकार किये गये हैं इसके कारण नहीं कि आप क्या करते हैं।

<u>जो यहोवा विटनेसों के पास है</u>

आत्मिक लेपालकपन का इन्कार किया गया है : अधिकांश यहोवा विटनेसों को यह बताया गया है कि वे आत्मिक लेपालकपन नहीं पा सकते, नया जन्म नहीं प्राप्त कर सकते, यीशु को अपना मध्यस्थ नहीं पा सकते, ना ही नई वाचा के लाभों में भागीदार हो सकते हैं क्योंकि वे उन विशिष्ठ 1,44,000 लोगों में से नहीं हैं।

कोई आश्वासन नहीं है : बिना किसी गारंटी के मांगों को पूरा करने के लिए निरंतर प्रयासरत् रहते हैं।

भय और दोष-भावना : अयोग्यता का एहसास रहता है, अगुवे अनुचरों का मूल्यांकन करते और आलोचना करते रहते हैं।

सशर्त प्रेम : संगठन में उनके द्वारा किये जाने वाले कार्य के अनुपात में उन्हें प्रेम दिखाया जाता है।

चरण 2 : उन्हे यीशु की ओर इंगित किजिये (जो एक स्वर्गदूत से बढ़कर है) :

इसलिये कि वाचटावर सोसाइटी कहती है, "यीशु मसीह जिसे हम धर्मशास्त्र से मीकाएल स्वर्गदूत समझते हैं (दि वाचटावर, फरवरी 15, 1979, पृष्ठ 31), यहोवा विटनेस को इस कठीनाई में डालिये कि उसे "पवित्रशास्त्र" के उन वचनों को दिखाने कहिए जो कहते हैं कि यीशु, मीकाएल है। ऐसा एक भी वचन नहीं है। वाचटावर सोसाइटी न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन में मीकाएल का पांच बार इस तरह उल्लेख किया गया है :

1) "मीकाएल जो मुख्य प्रधानों में से है" (दानि. 10:13)।
2) "(दानिय्येल के) लोगों का प्रधान मीकाएल" (दानि. 10:21)।
3) "महान राजकुमार जो दानिय्येल के पुत्रों की ओर से खड़ा है" (दानि. 12:1)।
4) "प्रधान स्वर्गदूत जो मूसा की लोथ पर शैतान से वाद विवाद कर रहा था" परन्तु "अभद्र भाषा का उपयोग करके उस पर न्याय नहीं दिखाना चाहा" (यहूदा 9)।
5) स्वर्गीय युद्ध में एक भाग लेने वाला जब "मीकाएल और उसके दूत अजगर से लड़ते हैं" (प्रका. 12:7)।

यहोवा विटनेस से पूछिए कि इनमें से कौन सा पद कहता है कि मीकाएल ही यीशु मसीह है। उसकी यह देखने में सहायता कीजिये कि इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिये पवित्रशास्त्र के साथ साथ वाचटावर का उलझा हुआ तर्क भी पढ़ने की आवश्यक है।

मात्र एक प्रधान स्वर्गदूत होने के बजाय यीशु मसीह "प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है" (प्रका. 17:14) और "सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुता के और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में पर आनेवाले लोक मं भी लिया जायेगा" है (इफि. 1:21)। और प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल के विपरीत, जैसे कि जब "शैतान से मूसा के शव के विषय में वाद-विवाद किया, तो उसको बुरा-भला कहके दोष लगाने का साहस न किया पर यह कहा, 'प्रभु तुझे डाँटे' " (यहूदा 9, बी.एस.आई.अनुवाद), यीशु मसीह ने शैतान के ऊपर अपना अधिकार दिखाया जब उसने उसे स्पष्ट आदेश दिया, "हे शैतान, दूर हो जा!" (मत्ती 4:10)। (यहां सारे वचन हिन्दी ओ.व्ही. रि-एडिटेड बाइबल से लिये गये हैं।)

चरण 3 : प्रेम के साथ उन्हें यीशु के पास लाइये : एक यहोवा विटनेस को यीशु की ओर जीतने में बहुत समय लगता है। एक साथ मिलकर पवित्रशास्त्र का अध्ययन कीजिए; यह देखने में उसकी सहायता कीजिए कि आपके अंदर पवित्र आत्मा निवास करता है, और यह कि आप में परमेश्वर का प्रेम और करूणा है।

पाठ 18

इस्लाम का परिचय

परिचय : लगभग सौ करोड़ की जनसंख्या वाला मुसलमान समाज, संभवत: विश्व में सब से बड़ा समाज है जहां सुसमाचार बहुत कम पहुंचा है। सुसमाचार के प्रति उनका प्रतिरोध बहुत कठोर रहा है। यह पाठ्यक्रम उनके उदय, उनके विश्वास, व्यवहार, कुरआन, और उन्हें मसीह के उद्धार का सुसमाचार कैसे पहुंचाया जाए का अध्ययन करता है। यह हमें मुसलमानों को यीशु मसीह के प्रेम और उद्धार के साथ कैसे पहुंचें की चुनौती भी देता है।

मुसलमानों की संस्कृति

1. इस्लाम का अर्थ "अल्लाह के प्रति स्वैच्छिक समर्पण" होता है। मुसलमान विश्वास करते हैं कि अल्लाह की समस्त रचना को उसकी ईच्छा के सामने समर्पण करना चाहिए।
2. अधिकांश मुसलमान उत्तरी अफ्रीका से पूर्वी एशिया तक की "10/40 विन्डो या खिड़की" में रहते हैं।
3. मुसलमान 43 देशों और भू-भागों में बहुमत में हैं। 31 अन्य देशों में उनकी जनसंख्या 10% से अधिक है और अन्य 49 देशों में वे अल्पसंखक हैं।
4. आमतौर पर वे समाजोन्मुखी प्रवृति के लोग हैं।

उनका धर्म :

सब मुसलमान अपने धर्म का एक समान पालन नहीं करते हैं। विभिन्न प्रकार के मुसलमानों की आम पहचान के लिये कुछ उपनाम नीचे दिये जा रहे हैं।

1. **शास्त्रसम्मत :** वे कुरआन को अक्षरश: लेते हैं और उसकी परम्पराओं का पालन करते हैं।
2. **रूढ़िवादी :** वे शास्त्रसम्मत इस्लाम का अनुसरण तो करते हैं किन्तु उसे अपने जीवन के अनुरूप ग्रहण करते हैं।
3. **रहस्यवादी/सूफीवादी :** वे अलौकिक को खोजते हैं और अल्लाह से संबंध या सम्पर्क बनाने का प्रयास करते हैं।
4. **उदारवादी :** वे कुछ इस्लामी विश्वास का पालन करते हैं किन्तु बहुत कुछ धर्मनिरपेक्ष भी होते हैं।
5. **समन्वयवादी :** वे इस्लामी तत्वों को स्थानीय अंधविश्वास और धर्मों से मिला देते हैं।
6. **धर्मनिरपेक्षतावादी :** वे सांस्कृतिक तौर पर तो मुसलमान हैं किन्तु यथार्थ में उस धर्म का पालन नहीं करते।

मुसलमानों के साथ उचित संवाद करने के लिए हमें मुसलमानों के विभिन्न प्रकारों और उनके विभिन्न प्रकार के विश्वासों का ध्यान रखना चाहिए।

मुसलमानों के तीन प्रमुख प्रकार हैं :

1. **शिया** प्रथम तीन खलीफाओं को अस्वीकार करते हैं और इस बात पर अड़े रहते हैं कि मोहम्मद का दामाद अली ही उसका सही उत्तराधिकारी हैं, अबु बकर नहीं।
2. **सुन्नी**, जिनकी संख्या सर्वाधिक है, अबु बकर से लेकर प्रथम चार खलीफाओं को स्वीकार करते हैं और मोहम्मद के सही उत्तराधिकारी मानते हैं।
3. **सुफी** दार्शनिक रहस्यवादी हैं जिन्होंने अपनी रूचि के अनुसार इस्लाम का नया अर्थानुवाद करके स्वीकार कर लिया है।

इस्लामी पुस्तकें: मुसलमान विश्वास करते हैं कि 1,24,000 पवित्र पुस्तकें पाई जाती हैं परंतु मात्र चार पवित्र पुस्तकें बच गई हैं, जो जिब्राईल के द्वारा नबी को दी गई थीं। ये चार पुस्तकें निम्न हैं :

1. तोराह - मूसा को दी गई प्रथम पांच पुस्तकें
2. ज़बूर - दाऊद को दिए गए भजन या जबूर
3. इंजील - ईसा को दिए गए चार इंजील
4. कुरआन - मोहम्मद को दिया गया पूर्ण और अंतिम प्रकाशन माना जाता है।

मुसलमान विश्वास करते हैं कि यहूदियों और ईसाईयों ने बाइबलीय पुस्तकों (तोराह, ज़बूर और इंजील) के अर्थ को तोड़-मरोड़ दिया है।

कुरआन

1. कुरआन का अर्थ "मौखिक पाठ" होता है। मुसलमानों की मान्यता है कि यह अल्लाह के वचनों का प्रधान दूत जिब्राईल

के द्वारा मोहम्मद को सीधे सीधे दिया गया अंतिम संदेश है।

2. कुरआन को मुसलमानों के द्वारा सर्वाधिक पवित्र पुस्तक माना जाता है।

ए. मोहम्मद ने इस संदेश को 610 से 632 के मध्य पाने का दावा किया।

बी. मोहम्मद के जीवित रहते हुए कुरआन को आंशिक रूप से ऊँट के चमड़े पर प्राचीन लिपि में लिखा गया था जो विभिन्न प्रकार के पठन के लिये अनुमति देता है।

पाठ 19

मोहम्मद, इस्लाम के संस्थापक

मोहम्मद का जन्म 8 जून 570 ईस्वी सन में, सऊदी अरब के मक्का में कुरैश कबीले (गोत्र) के हाशिम के परिवार में हुआ था। हाशिम परिवार - और इसलिए स्वयं मोहम्मद - अपनी वंशावली को इब्राहीम तक ले जाते हैं।

छः वर्ष की आयु में अनाथ हो जाने पर उनके दादा अब्द अल-मुत्तालिब ने उन्हे गोद लिया, और उनके चाचा अबु तालिब ने उनका पालन पोषण किया जो एक काफिला व्यापारी थे।

छोटी उम्र में ही उन्हें चरवाहा बना दिया गया।

एक धनी विधवा खदीजा ने उन्हें अपने काफिले का प्रबंधन करने के कार्य पर रख लिया। उसके साथ के सम्बंध के कारण वे मक्का के व्यापारी निगम के एक प्रमुख हस्ती बन गये और "अल अमीन" के नाम से पहचाने जाने लगे जिसका अर्थ "वह जो योग्य है" होता है।

25 वर्ष की आयु में उन्होंने खदीजा से निकाह कर लिया और इस निकाह से छः औलादें पैदा हुईं। उनमें से तीन की अल्पायु में ही मृत्यु हो गई।

खदीजा की मौत के पश्चात् मोहम्मद ने बहुपत्नी प्रथा को अपनाया और उनके 14 बीबियां हुई।

40 की आयु में वह अपने स्वदेशियों के भाग्य के प्रति बहुत चिन्तित हो गये और अपना अधिकांश समय धार्मिक मनन में लगाने लगे।

वह एकान्तवासी हो गए और मक्का के निकट एक पहाड़ की गुफा में रहने लगे, जहां कहा जाता है कि उन्होंने 610 ईसवी सन् में अपना पहला प्रकाशन पाया। परम्परा के अनुसार, उन्होंने प्रधान स्वर्गदूत जिब्राईल को देखा जिसने अल्लाह के कलाम (वचन) को उन्हें सुनाया जो इस्लाम का आधार बन गया।

613 में प्रकाशन पुनः प्राप्त हुआ और उन्होंने इसे अपने निकटतम मित्रों को सुनाया : इस्लाम में धर्मांतरीत हुये इन प्रथम लोगों के साथ ही यह धर्म आरंभ हुआ।

जब झुण्ड के सदस्यों की संख्या बढ़ने लगी, मोहम्मद मक्का में आम तौर पर स्वीकृत धर्म की आचलोना करने लगे, विशेषकर उन लोगों के बहु-ईश्वरवादी धर्म की जो काबा की पूजा किया करते थे। (काबा यह मक्का में स्थित चौकोर मस्जिद को और उसके भीतर के काले रंग के पत्थर को कहते हैं। मुसलमान विश्वास करते हैं कि मूल काबा को अब्राहम ने बनाया था। कुछ विश्वास करते हैं कि काला पत्थर आसमान से गिरा हुआ उल्का पिंड है।)

मक्का के निवासी इस आलोचना का विरोध करने लगे, विशेषकर मक्का के काबा में आनेवाले तीर्थयात्रियों से होने वाली आमदनी को सुरक्षित रखने के लिए।

615 में प्रथम मुसलमानों को सताया गया। कुछ इथियोपिया की ईसाई सरकार से सुरक्षा पाने भागकर वहां चले गए और अन्ततः वे वहां पर ईसाई बन गए।

मोहम्मद को भी भागना पड़ा और वे याथरिब (मदीना के लिए प्राचीन अरबी नाम) में शरण लेने पहुंचे जो मक्का के उत्तर पश्चिम में 350 किलोमीटर की दूरी पर मरूस्थल के बीच हरी भूमि है।

मदीना में उनका उन लोगों के द्वारा अच्छा स्वागत हुआ जो मक्का के आर्थिक स्थिति से चिढ़ते थे। मदीना में एक तटस्थ बाहरी व्यक्ति के रूप में वे वहां आपस में संघर्ष कर रहे गुटों के मध्य सुलह कराने में सफल रहे और शीघ्र ही वे वहां पर एक राजनीतिज्ञ, कानून बनानेवाले और सैन्य अगुवा बन गए।

उन्होंने मदीना के धनी यहूदियों का समर्थन पाने के लिए उनको स्वतंत्रता की गारंटी दी, जबकि उन्होंने अपने नए धर्म इस्लाम को प्रचलित कराया। दो साल बाद उन्होंने यहूदियों से अपना सम्बंध तोड़ दिया क्योंकि वे उसे नबी स्वीकार नहीं कर रहे थे। इसी समय से उन्होंने अपनी दुआ मांगने की मुद्रा को बदल दिया जो कि वे यरूशलेम की ओर घुटना टेककर करते थे उसे मक्का की ओर फेर दिया।

उन्होंने उन सभी लोगों को जो उस पर नबी के रूप में विश्वास करने लगे थे मक्का से मदीना आने के लिए उत्साहित किया। एक साल के भीतर ही मदीना क्षेत्र में अनुमानत: 10,000 मुसलमान थे।

जब उनके अनुयायियों ने मक्का को छोड़ा तब मक्का के लोगों के द्वारा उनकी सम्पत्ति को लूट लिया गया। इसकी प्रतिक्रिया के रूप में, मोहम्मद ने अपने लोगों को मक्कावासियों के व्यवसायिक कारवाओं को लूट लेने के लिए उत्साहित किया।

624 में मोहम्मद ने अपने 300 अनुयाईयों को नेतृत्व प्रदान किया कि मक्का के एक कारवां को लूट लें। मुसलमानों ने मक्का से उस कारवां की सुरक्षा के लिए भेजी गई सेना को पराजित करके मक्का की सेना पर अपनी पहली विजय को अनुभव किया। इस युद्ध को प्रति वर्ष रमादान से, अर्थात् मुसलमानों के एक माह तक चलनेवाले उपवास से मनाया जाता है।

जब तक कि मोहम्मद ने 628 में मक्का पर विजय प्राप्त नहीं कर ली तब तक शत्रुता चलती रही। उन्होंने मक्का और मदीना में बसे यहूदियों को देश से निष्काषित कर दिया।

एक अल्प बीमारी के बाद, 8 जून 632 को, मोहम्मद की मृत्यु हो गई।

पाठ 20

इस्लाम का विकास

परिचय : इस्लाम के अगुवे यह मानते हैं कि सम्पूर्ण विश्व के ऊपर इस्लामिक कानून (शरिया) लागू करना उनका मिशन है।

इस्लाम का विकास :

1. इस्लाम विश्व का सर्वाधिक तेजी से बढ़ता हुआ धर्म है, मसीहीयत से भी तेजी से बढ़ता हुआ (जब कैथोलिक और आर्थोडाक्स इत्यादि को सम्मिलित कर लिया जाता है। तथापि, इवेजलिकल मसीही समूह इस्लाम से भी अधिक तेजी से बढ़ रहे हैं।)
2. इसके विकास की दर 2.94% प्रतिवर्ष है जो विश्व की जनसंख्या वृद्धि दर से भी अधिक है।
3. 1990 में मुसलमान जनसंख्या का 12% होते थे; आज उनकी संख्या 20% है। (मसीहियों की संख्या 33% है।)
4. उनका विकास मुख्यत: जन्म के द्वारा है (मुस्लिम परिवारों में अधिक संतानें होती हैं) तथापि अफ्रीका और इंडोनेशिया में धर्म परिवर्तन से भी संख्या में वृद्धि हो रही है।
5. अमेरिका और यूरोप में मुसलमानों की संख्या में वृद्धि वहां आकर बसने वाले आप्रवासियों के कारण हो रही है।

इस्लाम के विकास के पीछे की छ: ताकतें :

1. आर्थिक शक्ति
   - ए. मुसलमानों के पास पेट्रोलियम विक्रय से प्राप्त बहुत धन है जिसे वे धर्म परिवर्तन में लगाते हैं।
   - बी. वे मानव कल्याण कार्यों को बढ़ा रहे हैं और वे कुरआन अध्ययन में रूचि लेनेवाले किसी भी जन को सऊदी अरब में एक वर्ष कुरआन का अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति देते हैं।
2. राजनैतिक शक्ति
   - ए. मुसलमान राजनीतिक शक्ति का उपयोग करते हैं और पर्याप्त राजनीतिक नियंत्रण प्राप्त करने का प्रयास करते हैं कि अन्तत: शरिया को स्थापित किया जाये।
   - बी. वे प्रत्येक विश्वविद्यालय में इस्लाम का अध्ययन उपलब्ध कराते हैं ताकि देश के भावी अगुवों को प्रभावित करे।

3. मीडिया शक्ति
   ए. मुसलमान विश्व के प्रत्येक देश में एक रेडियो स्टेशन स्थापित करने का प्रयास करते हैं।
   बी. वे टेलीविजनों में पादरियों को शराबी, नशीली दवाओं के लती और व्यभिचारी दिखाने वाले कार्यक्रम चलाते हैं ताकि लोगों को मसीहीयत की ओर जाने से निरुत्साहित किया जा सके।
4. हिंसा
   ए. मुसलमान देशों को इस्लाम के लिये जीतने हेतु हिंसा और युद्ध का उपयोग करते हैं।
   बी. कई बार मुस्लिम देश आतंकवाद को आयोजित करते हैं और इस्लामिक आतंकवाद को आर्थिक सहायता देते हैं।
5. मातृ शक्ति
   ए. मुसलमानों के बहुत बच्चे होते हैं। एक मुसलमान पुरूष की चार पत्नियां हो सकती हैं अत: एक परिवार बीस या उससे भी अधिक संतानें उत्पन्न कर सकता हैं।
   बी. विकासशील देशों के मुसलमान काम की तलाश में पश्चिमी देशों की ओर जा रहे हैं, वे अपने साथ इस्लाम को लेकर जा रहे हैं। इस कारण कि इंग्लैण्ड और फ्राँस जैसे देशों में इतने अधिक मुसलमान बच्चे पैदा हो रहे हैं, वहां मुसलमान तेजी से प्रभाव प्राप्त कर रहे हैं।
6. आत्मिक शक्ति – इस बात को कभी न भूलें कि इस्लाम एक ऐसा धर्म है जिसका ईश्वर धोखा देने वाला शैतान है।

भारत में इस्लाम का आगमन और विकास :

1. सातवीं सदी के आरंभिक दिनों में अरबी व्यापारी अपने साथ भारत में इस्लामी विश्वास को लेकर आए और मलाबार तटीय क्षेत्र में लोगों को इस्लाम में परिवर्तित किये। माना जाता है कि प्रथम मस्जिद का निर्माण 629 के आस पास हुआ होगा।
2. आठवीं सदी में, मुसलमान सेना ने एक बड़े भू-भाग को जीत लिया जिस में आज पाकिस्तान है। आगे की सदियों में मुसलमान सेनाओं ने भारत के दक्षिण की ओर बढ़ना जारी रखा और अन्तत: 1206 में दिल्ली में सल्तनत को स्थापित कर लिया। वे फ़ारसी भाषा बोलते थे।
3. सोलहवीं शताब्दी में, चंगेज खान के वंशज, मुगल विजेताओं ने सत्ता को प्राप्त कर लिया। अठारवीं शताब्दी के आते तक अकबर और अन्यों ने वर्तमान भारत का लगभग सम्पूर्ण भाग जीत लिया था।
4. मुस्लिम शासकों ने मुसलमानों को करों में अनेक रियायतें दी, इसलिए अनेक भारतीयों ने व्यावहारिक और आर्थिक लाभ के लिये इस्लाम धर्म को अपना लिया।
5. यूरोप से प्रोटेस्टेंट मिशनरी के भारत में प्रथम आगमन के समय तक, इस्लाम भारत मे, विशेषकर उत्तर भारत में, अपनी जड़ें जमा चुका था।

पाठ 21

इस्लाम के पांच स्तंभ

परिचय : मुसलमानों के करने के लिए पांच प्रमुख कार्य हैं, जिन्हें "इस्लाम के पांच स्तंभ" कहा जाता है, प्रत्येक मुसलमान को एक अच्छा मुसलमान होने के लिए इनका पालन करना अनिवार्य है। जबकि विश्वास अनिवार्य है, मुसलमान का प्रथम विचार यह है कि उसके भले कार्य उसके बुरे कार्यों से अधिक भारी होते हैं।

पहला स्तंभ : शहादा (विश्वास की घोषणा करना)

1. मुसलमानों को प्रतिदिन अपने समर्थन को दोहराना होता है कि वे अल्लाह के बारे क्या विश्वास करते हैं।
2. मुसलमान अरबी में कहे जाने वाले वाक्य में अपने विश्वास को व्यक्त करते हैं : जिसका अर्थ होता है, "सिर्फ अल्लाह ही एकमात्र ईश्वर है, और मोहम्मद अल्लाह के नबी है।"

दूसरा स्तंभ : सलात (नमाज अदा करना)

1. उनकी नमाज के दो पहलू हैं, (1) अल्लाह की प्रशंसा के शब्द और (2) व्यक्तिगत आशीषों के लिए बिनती।
2. कुरआन स्पष्टता से कहती है कि उन्हें दिन में तीन बार नमाज अदा करना चाहिए। किन्तु इस्लाम के आरंभिक दिनों ही से वे दिन में पांच बार नमाज अदा करने लगे : प्रात:, दोपहर, दोपहर के पश्चात्, सूर्यास्त और रात्रि विश्राम के समय।
3. मुसलमान अपने नमाज की दरी को मक्का की दिशा में रखते हैं ताकि वे सजदा के समय उस पर घुटने टीकाने के बाद, अपना पूर्ण समर्पण अल्लाह को दिखाने के लिए, अपना मस्तक टिका सकें।
4. स्थान साफ होना चाहिए, और मुसलमान को औपचारिक रीति से धोना (प्रक्षालन करना) और अपनी जूतियां उतारना अनिवार्य होता है। कुछ मुसलमान नमाज के समय अपना सिर ढांकते हैं।
5. यह आंका गया है कि अल्लाह को अपना समर्पण दिखाने के लिए एक मुसलमान का सिर दिन भर में 87 बार जमीन को छूता है।

तीसरा स्तंभ : ज़कात (दान, उदारता)

1. मुसलमान को चढ़ावा देना या ज़कात अदा करना अनिवार्य है जो गरीबों को जाता है और विश्व में इस्लाम के विस्तार के लिए उपयोग किया जाता है। दान देने की रकम एक मुसलमान की औकात या आमदनी के ऊपर निर्भर होती है।
2. प्रत्येक को अपनी फसल का दशमांश, अपनी आमदनी और अपनी सम्पत्ति का 2.5% देना होता है।
3. मुसलमान विश्वास करते हैं कि यदि वे अल्लाह के काम के लिए देंगे तो उन्हे इसका विशेष ईनाम मिलेगा।

चौथा स्तंभ : सोम (रोजे या उपवास) **2:183-185, 187 (Saoum, Siyaum)**

1. मुस्लिम मानते हैं कि अल्लाह ने कुरआन को रमादान (रमजान) के महीने में दिया था। इसलिये कि इस्लाम चाँद पर आधारित कैलेण्डर का उपयोग करते हैं, रमजान प्रत्येक वर्ष 11 दिन पहले आता है।
2. रमजान के महीने में मुसलमान अपने शरीर की ईच्छाओं को त्यागने के लिए और अल्लाह की बातों और कुरआन में की शिक्षाओं पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए दिन भर रोजा रखते या उपवास करते हैं।
   ए. सूर्योदय से सूर्यास्त तक मुंह में कुछ भी नहीं जाना चाहिए। कुछ तो अपना थूक या लार तक नहीं निगलते हैं।
   बी. संध्या समय मुसलमान एक दूसरे से मिलने और उत्सव मनाने जाते हैं।
   सी. वे संपूर्ण माह को कुरआन पढ़ने/सुनने में बीताते हैं ताकि स्वयं को बुराई से दूर रखें।
3. वे विशिष्ट दुआओं को कहते हैं। वे विश्वास करते हैं कि यदि "शक्ति की रात" को कुरआन का पाठ किया जाए, जिसके लिए यह माना जाता है कि उस रात कुरआन दिया गया था, तब अल्लाह उनके गुनाह माफ कर देंगे।
4. उपवास के साथ ही दया/उदारता के कामों को भी किया जाता हैं।।
5. रोजा रखने से कुछ लोगों को छूट रहती है, जैसे कि बहुत छोटे बच्चों, रोगियों, हाल ही में बच्चों को जन्म दी हुई माताओं, कठोर परिश्रम करनेवाले पुरूषों और यात्रियों को, परंतु जो रोजे रखने से रह जाते हैं उनको बाद में रोजे रखने होते है।

पांचवा स्तंभ : हज (मक्का की तीर्थयात्रा) 2:196-197

1. मोहम्मद के आने के बहुत पहले अरबी लोग तीर्थयात्रा के लिए मक्का के काबा जाया करते थे।
2. मक्का मुसलमानों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यहीं से मोहम्मद ने प्रवचन करना आरंभ किया था।
3. इस्लाम सिखाता है कि एक मुसलमान को अपने जीवनकाल में कम से कम एक बार हज करना ही चाहिए।
   ए. यह उनके लिए आदेशात्मक नहीं है जिनके पास संसाधन नहीं हैं।
   बी. सऊदी अरब की सरकार, जरूरतमंद लोगों के आर्थिक खर्चे को वहन कर लेती है।
4. हज के समय मुसलमान पशुबलि करते हैं, स्वयं को यह स्मरण दिलाने के लिये कि परमेश्वर ने इब्राहीम को उसके पुत्र को बलिदान करने की जगह पर एक मेढ़ा प्रदान किया था।

पाठ 22

मुसलमान ईश्वर के बारे क्या विश्वास करते हैं, इत्यादि

मुसलमान अल्लाह (ईश्वर) के बारे क्या विश्वास करते हैं :

1. उनके लिए ईश्वर के लिये अल्लाह नाम है। ईश्वर के बारे उनकी समझ बाइबल के ईश्वर से बहुत कुछ मिलती जुलती है, परंतु इसी के साथ कुछ महत्वपूर्ण भिन्नताएं भी हैं।
2. उनके विश्वास वचन में, जिसे शहादा कहते हैं, मुसलमान दोहराते हैं : "अल्लाह को छोड़कर और कोई ईश्वर नहीं है, और मोहम्मद उसका नबी है।"
   ए. अल्लाह को छोड़कर और कोई ईश्वर नहीं है, वह सर्वोच्च अस्तित्व है।
   बी. एकमात्र सिर्फ वही है जिसके सामने हमें आराधना और समर्पण के चिन्ह के रूप में झुकना चाहिए।
   सी. सिर्फ उसी के पास वह सब शक्तियां हैं जिसकी मनुष्य को आवश्यकता है।
   डी. उसके बराबर कोई नहीं है। उसके जैसा और कोई नहीं है। वही सृष्टिकर्ता है जो इस दुनिया को चलाता है।
3. कुरआन कहता है कि अल्लाह अनोखा है और इसलिये मनुष्य उसे समझ नहीं सकता है।
4. वह यह भी कहती है कि अल्लाह ही सार्वभौम है इसलिए जो कुछ होता है उसके लिए वही जिम्मेदार है।
   ए. वह पृथ्वी पर सब भले और बुरे के लिए जिम्मेदार है (Mu'tazilites को छोड़कर)।
   बी. इसलिए वह बुराई का भी बनानेवाला है ("सूफी"- "अल्लाह आपके गले की नस से भी अधिक करीब है")।
5. अल्लाह (परमेश्वर) के स्वभाव और चरित्र के विषय में कुरआन और अन्य पारम्परिक इस्लामी लेखों में विरोधाभास पाये जाते हैं। (अन निस्सा 4:17; सुरह साद 38:5; अल-जिन्न 13-15)।

मुसलमान स्वर्गदूत, शैतान और दुष्टात्माओं के बारे में क्या विश्वास करते हैं :

1. वे अल्लाह के संदेशवाहक और मानवजाति के अभिरक्षक हैं।
2. जिब्राईल स्वर्गदूतों का प्रधान, अल्लाह का दाहिना हाथ और प्रवक्ता है।
3. "जिन्न" (दुष्टात्माएं) आग से बनाए गए हैं; वे मनमौजी/सनकी हानि करनेवाले हैं।
4. इबलिस (शैतान) दुष्टात्माओं का प्रधान है, और वह लोगों से गलती करवाता है, इस्लाम के रास्ते से भटकाता है।
5. दुष्टात्माएं आत्मिक और शाश्वत हैं किन्तु वे मानव रूप धारण कर सकते हें। वे बुरे दूत हैं।

मुसलमान नबियों के बारे क्या विश्वास करते हैं :

1. इस्लाम विश्वास करता है कि समय के आरंभ से सब मनुष्यों को नबी दिए गए जिन्होंने लोगों को घोषणा की कि उन्हें ईश्वर के प्रति समर्पण करना चाहिए।
2. वे विश्वास करते हैं कि अल्लाह ने नबी दिये, जिनमें आदम, नूह, इब्राहीम, इसहाक, इश्माएल, याकूब, यूसुफ मूसा, अय्यूब, दाऊद और पुराना नियम से और भी है, ताकि लोगों को ईश्वर की ओर लौटने के लिये बुलायें।
3. कुरआन के अनुसार यीशु भी एक नबी था परंतु मोहम्मद से अधिक महान् नहीं था।
4. विश्वास किया जाता है कि मोहम्मद अंतिम और सब नबियों में सबसे महान् हैं।

मुसलमान पूर्वनियति या भाग्य से क्या समझते हैं :

1. मुसलमान बहुत दृढ़ता से विश्वास करते हैं कि अल्लाह सब का भाग्य पहले ही से लिख देता है।
2. वे विश्वास करते हैं कि अल्लाह की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए एक व्यक्ति को इस्लाम के पांच स्तंभों का पालन करना चाहिए, परन्तु उसकी नियति अंततः अल्लाह की मर्जी पर निर्भर होती है।

मुसलमान मृत्यु के पश्चात के जीवन पर क्या विश्वास करते हैं :

1. कोई भी मुसलमान, अपनी मृत्यु के पश्चात् परमेश्वर के साथ अनन्तजीवन पाने के प्रति निश्चित नहीं है। वह अपना भाग्य अल्लाह के हाथों में छोड़ देता है।
2. मुसलमान विश्वास करते हैं कि एक अभिरक्षक दूत प्रत्येक व्यक्ति के भले और बुरे कार्यों को लिखने के लिए एक रजिस्टर रखता है, जो पुनरूत्थान के दिन उसके अंतिम नियति का निर्धारण करने के लिए तौले जायेंगे।

प्रश्न :

1. इस्लाम के विश्वास किस तरह बाइबल के समान है?
2. इस्लाम के विश्वास बाइबल के विश्वास से कैसे भिन्न है?
3. क्या हम इन सिद्धान्तों का उपयोग मसीही विश्वास को बताने के लिए कर सकते हैं? यदि हां, तो कैसे?

पाठ 23

मुसलमान यीशु और पवित्र आत्मा के बारे क्या विश्वास करते हैं

कुरआन में यीशु के लिए अनेक नाम हैं :

नाम	कहां मिलता है
ईसा, मरियम का बेटा	आले इमरान 3:45
मसीह	आले इमरान 3:45
अल्लाह का कलाम	आले इमरान 3:39; अन निसा 4:171
रूह-ए-अल्लाह	अन निसा 4:171
नबी	आले इमरान 3:39
अल्लाह के सब से करीब	आले इमरान 3:55
दूसरा आदम	आले इमरान 3:59-60

कुछ और अन्य नाम : धर्मी, रोशनी, सही मार्ग, एक चिन्ह, गवाह, सत्य

कुरआन में यीशु के अनेक चमत्कारों को लिखा गया है : आले इमरान 3:45; अल मैदाह 5:109-114

उसने रचा, उसने कोढ़ियों को चंगा किया, उसने अंधों को आंखें दीं उसने मुर्दों को जिलाया, उसने भीड़ को भोजन खिलाया, उसने बेजान चीजों में जान डाल दिया।

कुरआन यीशु की शिक्षाओं के बारे क्या कहता है :

कुरआन कहता है कि यीशु मसीह सत्य को प्रगट करता है ताकि लोग स्वर्ग जा सकें।

वह यह भी कहता है कि यीशु मसीह ने परमेश्वर का राज्य प्रगट किया। 3:50; 4:170; 5:46

कुरआन यीशु के जन्म, मृत्यु, पुररूत्थान और न्याय की चर्चा करता है :

1. उसका कुँवारी से जन्म लेना आले इमरान 3:37-47; मरियम 19:16-21
2. उसकी मृत्यु 19:33-34; 3:48, 55
3. उसका पुनरूत्थान 3:48, 55; 4:156-157; 19:33
4. उसका न्याय (यीशु राज्य करेगा, वह न्याय करेगा, वह प्रतिफल देगा)

परमेश्वर के पुत्र यीशु के बारे कुरआन जो कहता है उसकी कठिनाईयां

1. कुरआन कहता है कि अल्लाह ने अपना पुत्र नहीं जना ।
2. यीशु बेटे के रूप में अल्लाह से जोड़ा नहीं गया। 4:169

मुसलमान विश्वास करते हैं कि पवित्र आत्मा जिब्राईल स्वर्गदूत है :

1. जिब्राईल स्वर्गदूत ने मरियम को यीशु के जन्म का समाचार सुनाया। 3:45
2. मुसलमान उस समाचार सुनाने की सामर्थ्य को पवित्र आत्मा की सामर्थ्य बताते हैं। 2:253

मुसलमान विश्वास करते हैं कि पवित्र आत्मा यह अल्लाह और यीशु कार्यरत है :

1. कुरआन पवित्र आत्मा के कार्यों की चर्चा तो करता है किन्तु यह नहीं कहता कि वह कौन है।
2. कुरआन कहता है कि पवित्र आत्मा अल्लाह का काम करने के लिए सामर्थ्य देता है। अल्बुकर्रम 2:253

3. कुरआन यीशु को "अल्लाह की रूह" कहता है। 4:171

मुसलमान विश्वास करते हैं कि पवित्र आत्मा, मोहम्मद है।

1. कुरआन के अनुसार पवित्र आत्मा बोलता है और स्वर्गदूत से भिन्न है । अल मैदाह 5:110
2. मुसलमान कहते हैं कि मोहम्मद ही वह सलाहकार या सहायक है जिसके आने की चर्चा यीशु ने यूहन्ना 14 में की है।
3. मसीही और मुसलमान दोनों ही सिखाते हैं कि यीशु ने कहा कि उसके बाद कोई आनेवाला है। कुरआन कहता है कि यीशु, मोहम्मद के बारे बोल रहा था। बाइबल कहती है कि यीशु, पवित्र आत्मा के बारे बोल रहा था। (यीशु ने कहा कि एक सहायक उसके शागिर्दों के साथ सदा तक रहेगा। यीशु किसी संसारिक सलाहकार की बात नहीं कर रहा था।)

प्रश्न :

1. कुरआन की कौन सी शिक्षाएं यीशु मसीह के बारे में बाइबल में मिलने वाली शिक्षाओं का समर्थन करती हैं?
2. कुरआन की कौन सी शिक्षाएं यीशु मसीह के बारे में बाइबल में मिलने वाली शिक्षाओं के विपरीत हैं?
3. यीशु के विषय के कौन कौन से सिद्धान्त मुसलमानों के लिए कठिन हैं?

पाठ 24

मुसलमान क्या विश्वास करते हैं और हमारा प्रतिउत्तर

मुसलमान मसीहियों के बारे क्या सोचते हैं?

1. मुसलमान सोचते हैं कि मसीही लोग भटक गए हैं (सुरह 61:6)। वे मानते हैं कि हम ईश्वर की निन्दा करते हैं जब कहते हैं कि यीशु, परमेश्वर का बेटा है (सुरह 19:88-89)।
2. वे सोचते हैं कि मसीही झूठ बोलते हैं जब हम कहते हैं कि मसीह यीशु मर गया, क्योंकि कुरआन मसीह की मृत्यु का इनकार करता है (सुरह 4:157)।
3. वे विश्वास करते हैं कि हम धोखेबाज हैं क्योंकि हम पर उस मूल बाइबल को बदल डालने का आरोप है जिसे कुरआन सही ठहराता है (सूरह 2:79)।
4. वे अपने बोलने में हमें मूर्तिपूजक कहते हैं क्योंकि हम पिता, पुत्र और माता (मरियम) की आराधना करते हैं (सूरह 5:116-117)।

मुसलमानों के प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए? प्रेमपूर्ण

1. यीशु ने मत्ती 5:43-48 में कहा, "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, अपने बैरी से बैर।' परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो, जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भले और बुरे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है।"
2. कुरआन भी मसीहियों को ऐसे लोगों की मान्यता देता है जो उनसे प्रेम करते हैं। (सूरह 5:82) : "जो इमान करने वालों से (मुसलमानों से) लगभग सक्रियता की मित्रता करनेवाल हैं वे वे हैं जो कहते हैं कि 'हम ईसाई हैं'।"

जब हम सुसलमानों के पास जाते हैं, हमें प्रार्थना के साथ जाना चाहिए।

1. मुसलमानों को यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाना आत्मिक कसरत है। हमारा प्रयास प्रार्थना की इस चादर से ढंका होना चाहिये कि मुसलमानों के मन में परमेश्वर का अलौकिक कार्य हो ताकि वे सत्य को देख सकें।
2. प्रार्थना एक गवाही है, और उसकी अलौकिक प्रभावशीलता एक मुसलमान पर छाप डाल सकती है।

जब हम मुसलमानों के पास जाते हैं तब यह सहायक होता है कि हम कुरआन से परिचित हो और उसे उनकी समझ के साथ संबंध बनाने में पुल जैसे उपयोग में लायें।

1. कुरआन मुसलमानों को "किताब" का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करती है; "किताब" से उनका अर्थ बाइबल है।

2. कुरआन में यीशु और परमेश्वर के बारे सत्य है जो एक मुसलमान के साथ सहमति बना सकने में और उसके साथं एक सीमा तक विश्वास पैदा करने में सहायक पुल हो सकता है।
3. कुरआन की कुछ आयतें या सुरह जैसे सुरह 2:136 और 4:136 एक मुसलमान की आंखों को यीशु के प्रति खोलने में सहायता कर सकते हैं।
4. कुरआन का ज्ञान बाइबल और कुरआन के मध्य की समानताओं और विभिन्नताओं को समझने में सहायता कर सकता है। उदाहरण के लिए, कुरआन एक ईश्वर पर विश्वास को महत्व देता है। (4:126) *"ऐ ईमानवालो! अल्लाह पर अपने ईमान में कायम रहो, और उसके नबी पर, ओर उसकी किताब पर जो उसने अपने नबी पर उतारा और उस किताब पर जो उसने पहले से ही उतारा।"*
5. कुरआन पूरा सुसमाचार प्रस्तुत नहीं करता किन्तु कुरआन में सीमित सच्चाई है जो यीशु को मात्र नबी होने से ऊपर उठाती है। उदा. के लिए, सुरह अल-इमरान 3:42-55 यीशु (ईसा) के ईश्वरीय गुणों का समर्थन करता है जिसे कोई मुसलमान अस्वीकार नहीं कर सकता (केविन ग्रीसन के अनुसार)। यह अंश घोषणा करता है कि ईसा पवित्र और सर्वशक्तिमान है और हमें स्वर्ग (जन्नत) की राह बता सकता है।

मुसलमानों तक बेहतर तरीके से पहुंचने के लिए हमें यीशु की नम्रता को धारण करना होगा।।

1. हमें यह स्वीकार करना होगा कि हमें परमेश्वर और उसके वचन की आवश्यकता है। यूह. 15:5; 2 तीमुथि. 3:16-17
2. हमें पौलुस के नमूने का अनुसरण करना चाहिए।
   ए. 1 कुरिंथि 9:20-23 में पौलुस ने कहा है, "मैं यहूदियों के लिए यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊँ। जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उनके लिए मैं व्यवस्था के अधीन न होने पर भी व्यवस्था के अधीन बना कि उन्हे जो व्यवस्था के अधीन हैं, खींच लाऊँ ...।"
   बी. मसीह के सुसमाचार के हित के लिये पौलुस सब कुछ बनने के लिए तैयार था ताकि कुछ-एक को बचा लाए। सुसमाचार की सच्चाई बहुत सरल है : परमेश्वर, मानवजाति को बचाने के लिए, यीशु मसीह में मनुष्य बन गया।

पाठ 25

मसीह के उद्धार को मुसलमानों के साथ बांटना - भाग 1

जब मुसलमानों के पास जा रहे हों, तब परमेश्वर का आत्मा कहां कार्य कर रहा है इस पर ध्यान दीजिए (इफि. 1:18)

1. अपनी पुस्तक *"द कैमल - हाउ मुस्लिम्स आर कमिंग टू फेथ इन ख्राईस्ट"* में केविन ग्रीसन सुझाव देते हैं कि परमेश्वर कार्य कर रहा है जब एक मुसलमान नीचे दिए गए किसी वाक्य में से एक के समान कोई बात कहता है:
   ए. "हम मुसलमान जिस तरह से काम करते आये हैं उसके लिये मैं शर्मिंदा हूँ।" (देखिए यूहन्ना 16:8-11)
   बी. "मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें एक नबी ने मुझसे बात की।" (देखिए प्रेरितों 10:30-33)
   सी. "मैं जानना चाहता हूँ कि सत्य क्या है।" (देखिए यूह. 16:13; 17:17)
   डी. "मैं समझना चाहता हूँ कि बाइबल क्या कह रही है।" (देखिए मत्ती 13:10-11)
   ई. "मैं सोचता हूँ कि अल्लाह मुझ से बोल रहा है।" (देखिए यूहन्ना 10:26-27)
   एफ. "मैं ईसा के बारे और अधिक जानना चाहता हूँ।" (देखिए यूहन्ना 6:44)
   जी. "मेरी मौत के बाद मेरा क्या होगा?" (देखिए इब्रा. 2:15)

इसप्रकार, जब हम जान लेते हैं कि परमेश्वर का आत्मा किसी मुसलमान में कार्य कर रहा है, तब हम वह सब बंद कर दे जो हम कर रहे होते हैं ओर इस खुले दरवाजे से प्रतिउत्तर देने पर ध्यान केंद्रित करें।

उनके बीच ऐसा "शांति का व्यक्ति" खोजिए जो आपको आतिथ्य प्रदान करेगा और आपके संदेश पर विचार करेगा।

1. लूका 10:1-20 में यीशु ने अपने उदाहरण से हमें सिखाया कि हमें उस समूह तक कैसे पहुंचना चाहिए जो आमतौर पर सुसमाचार नहीं ग्रहण करना चाहते है।

2. परमेश्वर के उद्धार के सुसमाचार को जो विरोध में हैं उनके साथ बांटने पर जोर देना न तो समझदारी है और न ही बाइबल सम्मत है। किन्तु "शांति का व्यक्ति" खोजिए (देखिए लूका 10:6), एक ऐसा व्यक्ति जिसे परमेश्वर की आत्मा ने आपकी गवाही ग्रहण करने के लिए तैयार किया है।
3. शांति के व्यक्ति और उसके परिवार पर ध्यान केन्द्रित कीजिए, पूरे समाज पर नहीं। समय आने पर वह व्यक्ति (या वे) बाकी समाज के लिए अच्छे गवाह होंगे।

ऐसी शब्दावली और नामों का उपयोग कीजिये जिसे मुसलमान समझते हैं।

1. जब मुसलमानों से बात कर रहे हैं तब हमें यीशु और परमेश्वर के लिए जो हमारे नाम है उनका उपयोग क्यों करना चाहिएं? यह ऐसे ही लगता है जैसे कि मानो एक अमेरीकी मिशनरी, एक ऐसे देश में जहां अंग्रेजी बोली नहीं जाती, यीशु के लिए अग्रेजी नाम (जो उसके उस नाम से बिल्कुल भिन्न है जो उसके दिनों में उच्चारित किया जाता था), का उपयोग करने के लिए जोर देता हो। (सच तो यह है कि अनेक जाति-समूहों में अंग्रेजी भाषा के "जीजस" के प्रथम अक्षर 'जे ' की ध्वनि ही नहीं है)।
2. पुरखाओं के नाम के लिए उनके उच्चारण का उपयोग कीजिये, जैसे कि, उनके लिए अब्राहम नहीं परंतु इब्राहीम है, मोजेस नहीं मूसा है।
3. चाहे आप जो करें, उन पर उपासना के लिए पाश्चात्य या विदेशी तौर तरीके मत थोपिए। उदाहरण के लिए, इस्लाम से आए हुये नए विश्वासियों से उन मसीही गीतों को गाने की मांग मत कीजिये जो यूरोप या अमरीका से लाए गए हैं। उन्हें वे गीत पराये या अस्वाभाविक लगेंगे।

मुसलमानों को परमेश्वर की सत्यता समझाने के लिए पुरखाओं के वृत्तांतों का उपयोग कीजिये (जो बाइबल और कुरआन दोनों में मिलते हैं) जैसे कि नीचे बताया गया है :

1. आदम और हव्वा का वृत्तांत शैतान के आज्ञा उलंघन के बारे में और परमेश्वर की पाप के प्रति संपूर्ण असहनशीलता के बारे में सिखाती है।
2. परमेश्वर के द्वारा इब्राहीम को बलिदान के लिए मेढ़ा प्रदान करने का वृत्तांत हमें ईसा के दोषरहित और अनन्त बलिदान को समझाने सकने का अवसर प्रदान करता है।

जब तक एक मुसलमान के समक्ष मसीह को प्रस्तुत करने का सही समय न आए, हमें बुद्धिमानी दिखानी चाहिए।

1. स्वयं मसीह से भी आशा की गई थी कि वह सही समय के लिए धीरज से रुकेगा। यूहन्ना 2:3-4
2. मुसलमानों से सुसमाचार के विषय में बातचीत करना भी परमेश्वर के हाथ में है। वह आपकी सहायता करेगा कि आप जान सके कि सही समय कब आया है।

मुसलमानों को यह समझने में सहायता कीजिए कि इसलिये कि परमेश्वर पूरी रीति से धर्मी है, सिर्फ एक पाप भी हमें उसकी उपस्थिति में प्रवेश करने से रोक सकता है। निम्नलिखित बातें सहायक हो सकती हैं :

1. "क्या आप उस एक कप पानी को पीएंगे जिसमें जहर की मात्र एक बूंद ही पड़ी हो?"
2. "क्या आप दस मूंगफल्ली दानों को एक साथ खा सकते हैं जब उनमें से एक सड़ा हुआ है? यदि नहीं, तो क्यों नहीं?"
3. "एक अच्छा निकाह, किसी एक सदस्य के सिर्फ एक व्यभिचार से नष्ट हो सकता है।"

पाठ 26

मसीह के उद्धार को मुसलमानों के साथ बांटना - भाग 2 *

मुसलमानों के पास कुरआन में उद्धार का कोई आश्वासन नहीं है

1. सुरह 3:131-132 "उस आग से डरो जो इमान का इनकार करने वालों के लिए तैयार की गई है। अल्लाह और उसके नबियों पर विश्वास करो; हो सकता है कि तुम फज़्ल के द्वारा बचाये जाओगे।"
2. सुरह 6:165 "उस किताब को देखो जो हमने नीचे उतारा है; वह मुबारक है। उसकी शिक्षा का पालन करो और पवित्र बनो। हो सकता है कि तुम पर मेरा फज़्ल हो जाए।"

3. हम देखते हैं कि इन दो आयतों में कुरआन "हो सकता है" की अभिव्यक्ति का उपयोग करता है, जो बीच में ही इस संदेह को डाल देता है कि क्या एक मुसलमान मोहम्मद, अल्लाह और कुरआन की शिक्षाओं को मानकर भी उद्धार पा सकेगा या नहीं।
4. यह तथ्य हमें अनन्त जीवन के उस अद्‌भुत आश्वासन के विषय में गवाही देने का अवसर देता है जो मसीह यीशु में हमें प्राप्त है।

मुसलमान भले काम करके उद्धार पाने की आशा करते हैं जो उनके बुरे कार्यों से अधिक वजन रखेंगे।

1. सुरह 7:8-9, "उस दिन (कयामत) न्याय का तराजू चलेगा। वह जिनके काम (नेकी के काम) तराजू को झुका लेंगे, वह सफलता पाएगा। वह जिसके काम तराजू पर हल्के पाए जाएंगे, वह अपने ही दण्ड के लिए जिम्मेदार होंगा।" (सुरह 101:6-7 भी देखिए)
2. ये आयतें उद्धार के आश्वासन की बात नहीं करती हैं, क्योंकि एक मुसलमान नहीं जानता कि उसने कितनी नेकी या बदी को किया है, न ही यह कि उसके काम से अल्लाह खुश हुआ है या नहीं। वह विश्वास करता है कि इसके पूर्व कि वह जाने कि वह नजात पाएगा या नहीं, उसके कामों को तौला जाना चाहिये।

स्पष्ट कीजिए कि कोई भी परमेश्वर के फज़्ल (अनुग्रह) के बिना नजात (उद्धार) नहीं पा सकता।

1. सुरह 24:14 को दिखाइए : "यदि अल्लाह की उदारता के साथ इस दुनिया में और आने वाली दुनिया में उसकी दया की बात न होती, जिसके आप कर्जदार हैं, तो उस बेकार बातचीत के लिए जिसे आप तुरंत स्वीकार कर लेते हैं एक बड़े यातना से दण्डित किए जाते।"
2. यदि एक मुसलमान स्वीकार करता है कि हम सिर्फ अल्लाह के फज़्ल से नजात पाते हैं तो उससे पूछिए कि अल्लाह के फज़्ल ने हमारे लिए क्या तैयार किया है ताकि हम नजात पा सकें। (चौकस रहिए: कि आप उन जवाबों के कारण अपने मकसद से दूर नहीं होंगे जो एक मुसलमान आपके इन प्रश्नों से बचने के लिए दे सकता है।) उसे यह देखने में सहायता कीजिए कि परमेश्वर अपने अनंत फज़्ल में ईसा मसीह की पाक कुरबानी के द्वारा हमें नजात और अनन्त जीवन देता है जिसके हम हकदार नहीं हैं।
3. यदि वह परमेश्वर के फज़्ल को नहीं समझता है, उसे ईसा मसीह के मार्फत दिखाइए।

मुसलमानों के साथ की अपनी बातचीत में यीशु (ईसा) को ऊँचा उठाइए '

1. यीशु ने कहा, "मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास खीचूंगा" (यूह. 12:32)।
2. सुरह-अल-इमरान 3:42-55 को एक मुसलमान के साथ पढ़ने से हमें सहायता मिलेगी कि मुसलमानों की नजरों में यीशु को ऊँचा उठायें, उसे एक नबी के स्तर से भी कहीं अधिक ऊँचा, बहुत ऊंचा दिखायें।
3. एक मुसलमान को, जो आत्मिक रीति से सचमुच बहुत भूखा हो, इस प्रकार का आत्मिक भोजन प्रदान करना उसकी आत्मिक भूख को और अधिक सत्य जानने के लिये बढ़ा देगा।

जब एक मुसलमान से बातचीत कर रहे हैं तो निर्णय सूचक प्रश्न पूछिए

1. जब मुसलमानों से बातचीत कर रहे हों, आप बहुत अधिक प्रभावशाली तब होंगे यदि आप उनसे निर्णय सूचक प्रश्न पूछते हैं, और उन्हें सत्य प्रचार करने की अपेक्षा उनसे सत्य निकलवाते हैं।
2. यीशु ने भी, दूसरों से सत्य निकलवाने के लिए उनसे निर्णय सूचक प्रश्न पूछे, जैसे कि, जब उसने पतरस से पूछा, "तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?" (मत्ती 16:15)।

3. जब आप एक शांति के व्यक्ति की खोज कर रहे हैं, तब जब तक आप कुरआन के अंदर रहेंगे और अपने प्रश्न आदरपूर्वक पूछेंगे तो मुसलमान आप पर दोष नहीं लगा सकते या आप पर हमला नहीं कर सकते कि आप उन्हें ईसा का शागिर्द बना रहे हैं। तौभी जब एक बार आप किसी शांति के पुरुष (या व्यक्ति) को पहचान लेते हैं, तब आप कुरआन को पीछे रख कर उसे मात्र बाइबल से सिखा सकते हैं।

* यह और पाठ 25-27 के अन्य अनेक विचार केविन ग्रीसन की पुस्तक The Camel-How Muslims are coming to Faith in Christ से लिए गए हैं।

पाठ 27

मसीह के उद्धार को मुसलमानों के साथ बांटना - भाग 3

जब मुसलमानों से बातचीत कर रहे हैं तब ऐसे अनुच्छेदों और विचारों का उपयोग कीजिये जिन्हे वे आसानी से समझ सकते हैं

1. उपयोग करने के लिए बाइबल के पद : 1 पतरस 3:18; यूहन्ना 5:24
2. यूहन्ना 3:16 से बचिए क्योंकि उसमें परमेश्वर के "पुत्र" का उल्लेख है। (अधिकतर मुसलमान यह विश्वास करते हैं कि यह वाक्यांश कहता है कि परमेश्वर ने लैंगिक रूप से पुत्र उत्पन्न किया। निश्चय ही मसीही लोग ऐसा विश्वास नहीं करते, परन्तु यीशु के लिए इस शीर्षक से तब तक बचना बेहतर होगा जब तक कि आप अपनी बातचीत में आगे न बढ़ जाएं।)
3. कुरआन का उपयोग कीजिये : सुरह 19:21 "उसने कहा, 'तुम्हारे प्रभु ने इस प्रकार कह दिया है: वह सरल नहीं है, परन्तु इसलिये कि हम आदमजात को एक चिन्ह और हमारी दया का परिणाम दे सकें। और ऐसा किया गया।'" यह पद स्पष्ट करता है कि ईसा आदमजात (मनुष्यों) के लिए एक चिन्ह है।
4. समझाइए या स्पष्ट कीजिए कि ईसा इस दुनिया में हमारे लिए कुरबान होने और हमें परमेश्वर के पास खींचने के लिए आए।
5. सुरह 3:55-57 का उपयोग करिए, "जब अल्लाह ने कहा, 'ऐ ईसा! मैं तुम्हारे संसार के जीवन को समाप्त करने जा रहा हूं, तुम्हें अपने पास ऊपर खींचने के लिए और उनसे पाक करने के लिए जिन्होंने तुम्हारा इनकार कर दिया है। मैं तुम्हारे शागिर्दों को कयामत के दिन तक उनसे ऊपर उठाउंगा जिन्होंने मेरा इनकार किया है। इसके बाद, तुम मेरे पास वापस आओगे, और मैं तुम्हारे और तुम्हारे बीच मतभेद की बातों को सुलझाऊँगा। वे जिन्होंने इनकार किया होगा, मैं उन्हें इस दुनिया में और आनेवाली दुनिया में कठोर यातनाओं के अधीन करूंगा, और कोई उन्हें सहायता करने वाला न होगा। जिन्होंने ईमान लाया और अच्छे काम किये हैं, वे भी अपना ईनाम पाएंगे। अल्लाह अत्याचारियों को पसंद नहीं करता है।'"
6. सुरह 3:59 यह आयत यीशु की उद्धारकर्ता के रूप में जो भूमिका है उसे बिगाड़ती है। "अल्लाह के लिए, ईसा की मिसाल आदम के जैसे ही है। उसने उसे मिट्टी से बनाया, और उससे कहा, 'हो जा', और वैसा ही हो गया।"
7. सुरह 37:102-107 इब्राहीम के बेटे की कुरबानी के बारे में बताता है : ''जब वह इतना बड़ा हो गया कि अपने अब्बा के साथ जा सके, (इब्राहीम ने) उससे कहा : ''ऐ मेरे बेटे, मैंने ख्वाब में देखा कि मैं तुझे अग्नि-बलि करके कुरबानी चढ़ा रहा हूं। तुम क्या सोचते हो?'' (इश्माएल ने) कहा : 'ऐ मेरे प्रिय अब्बा हुजूर, वह कीजिए जो आपसे कहा गया है। आप मुझे इमानवालों के बीच पाएंगे, यदि यह अल्लाह को पसन्द आता है।'' दोनों ने अल्लाह को समर्पण कर लेने के बाद, और इश्माएल उसके सामने फेंक दिया गया, देखों, हम ने उसे पुकारा, 'इब्राहीम! तुमने दर्शन की बात को माना है, और हम उनको ईनाम देते हैं जो भला करते हैं।'"
8. मुसलमानों में तबास्की दावत के समय एक भेड़ की कुंरबानी के द्वारा कुरबानी को सराहा जाता है। उसे वह कारण सिखाइए जिसके लिए परमेश्वर ने इब्राहीम से उस कुरबानी को करने कहा :
   ए) यह कि उसके विश्वास को आजमाने के लिए कि क्या इब्राहीम अपने बेटे को अल्लाह को कुरबान करेगा।
   बी) उसका प्यार दिखाने के लिए क्योंकि उसे एक मेढ़ा देने में परमेश्वर ने इब्राहीम को दिखाया कि वह उससे और उसके बेटे से प्यार करता था।
   स) अंतिम कुरबानी के आने की तैय्यारी करने हेतु।

मसीह की मौत के साथ एक समानता बनाइये

1. मुसलमान की यह समझने में सहायता कीजिए कि परमेश्वर ने यीशु को वह मेम्ना बनने भेजा जो संसार का पाप उठा ले जाता है (यूहन्ना 1:29)।
2. ठीक वैसा ही जैसे परमेश्वर ने इजाजत दी कि मेम्ने के द्वारा इब्राहीम का बेटा अपनी जिंदगी वापस पाएगा, परमेश्वर हमें भी ईसा मसीह के द्वारा अनन्त जीवन पाने की इजाजत देता है।
3. मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने के द्वारा परमेश्वर हमें अनन्त जीवन को पाने की इजाजत देता है यदि हम उसकी कुरबानी को स्वीकार करते हैं। बिलकुल वैसे ही जैसे परमेश्वर ने इब्राहीम के बेटे का स्थान लेने के लिए एक मेढ़े की कुरबानी

दी, वह हमें ईसा को अनन्त और निर्दोष कुरबानी के रूप में ग्रहण करने की इजाजत देता है।

4. यदि इब्राहीम ने परमेश्वर के प्रबंध को अस्वीकार कर दिया होता तो कौन मरता? (तब उसका पुत्र मर गया होता।) इसी तरह, यदि हम ईसा को अस्वीकार कर देते हैं, जो परमेश्वर का मेम्ना है, तो कौन मरेगा? (तब हम मरेंगे यदि हम उसके कुरबानी के मेम्ने को स्वीकार नहीं करते हैं।)

पाठ 28

मुसलमान यीशु के पास आ रहे हैं

"जाति जाति की ओर चित्त लगाकर देखो, और बहुत ही चकित हो। क्योंकि मैं तुम्हारे ही दिनों में ऐसा काम करने पर हूँ कि जब वह तुम को बताया जाए तो तुम उसकी प्रतीति न करोगे" (हबक्कूक 1:5)।

पवित्र आत्मा हमारे दिनों में ऐसा कुछ कर रहा है जो पूरा पूरा अचंभित करनेवाला है! मुसलमान अनेक स्थानों में और ऐसी संख्या में यीशु मसीह के पास आ रहे हैं जिसकी आज से कुछ वर्षों पूर्व कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। आज पूरे संसार में 200 के लगभग 'चर्च प्लांटिंग मूवमेंट्स' हैं - विभिन्न जाति समूहों के मध्य कार्यरत परमेश्वर के आत्मा के मूवमेंट्स, जो बहुत बड़ी संख्या में आत्माओं को परमेश्वर के राज्य में ला रहे हैं। इनमें से अनेक मुस्लिम समूहों के मध्य हो रहे हैं।

हजारों-लाखों लोगों के मसीह के पास आने की खबरें मिल रही हैं वह भी ऐसे स्थानों से जहां इसकी बिल्कुल संभावना नहीं लगती। उदाहरण के लिए, डेविड गैरिसन अपनी पुस्तक *चर्च प्लांटिंग मूवमेंट्स* में लिखते हैं कि 1991 से 2001 के मध्य 1,50,000 से अधिक मुस्लिम मसीह के पास आए और दक्षिण एशिया के मुस्लिम देशों में चार हजार से अधिक चर्च स्थापित किए गए। सुरक्षा के कारणों से पुस्तक यह नहीं बताती कि वे स्थान कहां हैं किन्तु हम अन्य स्रोतों से यह निर्णय ले सकते हैं कि वह इंडोनेशिया के बारे लिख रहे हैं। प्रभु की महिमा हो!

अन्य स्थानों से भी मुसलमानों के मध्य नाटकीय, ऐतिहासिक आत्मिक कटनी के रिपोर्ट्स आ रहे हैं। उदाहरण के लिए:

1. बांग्लादेश में 1000 गांव हैं जहां के मुस्लिम पृष्ठभूमि के विश्वासी प्रतिदिन ईसा (यीशु) से अपनी दुआएं मांगते हैं।
2. अल्जीरिया से रिपोर्ट है कि 50,000 मुस्लिम पृष्ठभूमि के बरबरों ने (उत्तरी अफ्रीका के अधिकांश घुमंतू जीवन जीनेवाले लोगों ने) मसीहीयत को अपना लिया है।
3. मोरक्को एक मुस्लिम देश में, जहां नागरिकों के लिए वैधानिक रीति से मुस्लिम होने का कानून है, यह अनुमान लगाया गया है कि बीते पांच वर्षों में ईसा के शागिर्दों की संख्या 1500 से बढ़कर लगभग 3000 हो गई है।
4. ईरान में 1979 की क्रांति के समय मुस्लिम पृष्ठभूमि के ज्ञात विश्वासी 500 से भी कम होने की जानकारी थी। आज सतर्क अनुमान लगाया जाता है कि वहां 1,00,000 से अधिक विश्वासी है।
5. जेरी ट्राउसडेल अपनी किताब *मिरैकुलस मूवमेंट'* में लिखते हैं कि 18 विभिन्न देशों में मुसलमानों के मध्य 6000 से अधिक नए चर्च स्थापित किए गए हैं और सैकड़ों भूतपूर्व शेख और इमाम जो अब ईसा के शागिर्द हैं, मुसलमानों को इस्लाम से बाहर निकालने के आंदोलनों का दमखम से नेतृत्व कर रहे हैं।
6. भारत में भी नई घरेलू कलीसियाएं बन रही हैं जिनमें से अनेक मुस्लिम गांवों और घरों में हैं।

मुसलमानों के मसीह के पास आने के तीन तरीके या उपाय हैं :

1. पहला, व्यक्तिगत् सम्पर्क के द्वारा; एक व्यक्ति जो यीशु में विश्वास करता है अपने किसी मुसलमान मित्र को मसीह के उद्धार का सुसमाचार सुनाता है और उसे मसीह के पास लाता है। इस तरीके में अनेक वर्ष लग सकते हैं किन्तु मुसलमान सुसमाचार के लिए अधिक खुल रहे हैं और अधिक प्रतिउत्तर भी दे रहे हैं।
2. दूसरा बारंबार घटने वाला तरीका यह है कि मुसलमान यीशु को को स्वप्न में देखने के कारण यीशु के पास आ रहे हैं। पूरे विश्व में हजारों मुसलमान यीशु को स्वप्न में देख रहे हैं। कुछ को एक से अधिक बार यीशु के स्वप्न आ रहे हैं। कई बार एक मुसलमान जिसने इस तरह का स्वप्न देखा है एक विश्वासी से उसका अर्थ पूछने के लिए एक से भी अधिक वर्ष लगा देता है।
3. तीसरा वह तरीका जिसके द्वारा मुसलमान यीशु के पास आ रहे हैं, वह है इंटरनेट और सेटलाईट टेलीविजन कार्यक्रम।

मसीही सेवकाईयां मध्य पूर्व और उत्तर अफ्रीका में अनेक टी.वी. कार्यक्रमों के द्वारा सुसमाचार का भरपूर प्रसारण कर रहे है।

अनेक मुसलमान हैं जो गुप्त विश्वासी हैं।

1. असंख्य मुसलमान हैं जिन्होंने सताव की धमकी के कारण गुप्त में यीशु से अपने गुनाहों की माफ़ी मांगी है और उससे अपने दिल में आने की मांग की है। ऐसे विश्वासियों का तो अनुमान भी लगाना असंभव है।
2. इसलिये कि इन गुप्त विश्वासियों की संख्या में वृद्धि होती जा रही, उन्हें अचानक एक दूसरे के बारे में पता चलता हैं, और वे एक दूसरे को शांति, ढ़ाढस और पारस्परिक सहयोग देते हैं।

पाठ 29

हिन्दू धर्म - परिचय

विकीपीडिया (इंटरनेट) हिन्दू धर्म को इस प्रकार परिभाषित करता है : हिन्दू धर्म भारतीय उपमहाद्वीप का प्रमुख धर्म है जिसके भारत में अनुमानत: 950 मिलियन, और पूरे विश्व भर में मिलाकर एक बिलियन अनुयायी हैं। हिन्दू धर्म में नियमों का और "दैनिक नैतिकता" का व्यापक दृष्टिकोण है जो कर्म, धर्म और सामाजिक नियमों पर आधारित है। हिन्दू धर्म, आस्थाओं के दृढ़ सामान्य संग्रह की अपेक्षा विशिष्ट बुद्धिमता अथवा दार्शनिक मतों का संचय है।

हिन्दू धर्म की स्थापना विविध परम्पराओं से हुई है और इसका कोई संस्थापक नहीं है। इसके मूल में भारत के लौह-युग के समय का ऐतिहासिक वैदिक धर्म है, उसी रूप में, हिन्दू धर्म को बहुधा "सर्वाधिक प्राचीन विद्यमान धर्म" या विश्व का "सर्वाधिक प्राचीन विद्यमान धर्म" कहा गया है। यह, मसीहीयत और इस्लाम के बाद, विश्व का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है।

हिन्दू शब्द संस्कृत के सिन्धु शब्द से लिया गया फारसी शब्द है जो भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर पश्चिम भाग में बहनेवाली सिन्धु नदी के लिए ऐतिहासिक नाम है, जिसका सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में आया है।

हिन्दूओं के मूल विश्वास - हिन्दू धर्म संगठित धर्म नहीं है और उसके मूल्यों की शिक्षा देने के लिए कोई एक व्यवस्थित विधि नहीं है। न ही हिन्दूओं के पास अनुसरण करने के लिए नियमों का कोई स्पष्ट सेट है, जैसे कि, दस आज्ञाएं। सम्पूर्ण हिन्दू जगत में स्थानीय, क्षेत्रीय, जाति, और समाज-संचालित व्यवहार या परम्पराएं विश्वासों के अर्थानुवाद और अनुपालन को प्रभावित करते हैं।

तौभी, एक सर्वोच्च ईश्वर में विश्वास और सत्य, कर्म और धर्म जैसे कुछ विश्वासों से जुड़ाव इन सब भिन्नताओं को पिरोनेवाला एक आम धागा है। और वेदों (पवित्र धर्मग्रंथ) के अधिकृत होने में विश्वास करना, एक वृहद सीमा तक हिन्दू को परिभाषित करता है, यद्यपि वेदों का अर्थ कैसे निकाला जाता है इसमें बहुत भिन्नताएं हो सकती हैं।

हिन्दूओं के मध्य पाए जानेवाले कुछ प्रमुख विश्वास :

1. **सत्य शाश्वत् है** - हिन्दू सत्य के ज्ञान और समझ की खोज करते हैं; जो ब्रह्माण्ड का सच्चा मूल और एकमात्र सच्चाई है। वेदों के अनुसार सत्य एक है परन्तु ज्ञानी उसे विभिन्न रूपों में व्यक्त करते हैं।
2. **ब्रह्मा ही सत्य और वास्तविकता है** - हिन्दू विश्वास करते हैं कि **ब्रह्मा** ही एकमात्र सच्चा ईश्वर है जो निराकार, असीमित, सर्वसमावेशी, और शाश्वत है। ब्रह्मा कोई अमूर्त धारणा नहीं है; वह एक वास्तविक सच्चाई है जो ब्रह्माण्ड में पाए जाने वाले सभी (दृश्य या अदृश्य) को अपने में समेटे हुए है।
3. **वेदों का अधिकार सर्वोपरि है** - वेद हिन्दू धर्मशास्त्र हैं जिनमें प्राचीन ऋषि-मुनियों के द्वारा प्राप्त प्रकाशन पाए जाते हैं। हिन्दू विश्वास करते हैं कि वेद का न आरंभ है और न अंत है; जब इस ब्रह्माण्ड का सब कुछ समाप्त हो जाएगा (काल चक्र के समाप्त होने के साथ) तब सिर्फ वेद ही बचेंगे।
4. **सब को धर्म का पालन करने का प्रयास करना चाहिए** - धर्म की धारणा को समझना आपको हिन्दू विश्वास को समझने में सहायता करेगा। दुर्भाग्यवश अंग्रेजी भाषा का कोई भी एक शब्द उसके अर्थ को पूरी रीति से समाविष्ट नहीं कर सकता। धर्म का विवरण सही चाल-चलन, धार्मिकता, नैतिक नियम, और कर्तव्य के रूप में किया जा सकता

है। जो कोई धर्म को अपने जीवन का केन्द्र बिन्दु बनाता है वह सारे समय अपने कार्य और क्षमतानुसार सही करने का प्रयास करता है।

5. **एक व्यक्ति की आत्मा अमर है** - हिन्दू विश्वास करते हैं कि व्यक्ति की आत्मा को न सृजा गया है और न ही वह नाश हो सकती है; वह रही है, वह है और वह रहेगी। एक देह में निवास करने के दरम्यान उस आत्मा के द्वारा किए गए क्रियाकलाप की मांग यह है कि वह अगले जन्म में - वही आत्मा एक भिन्न देह में होकर -इसके परिणामों को भोगेगी।

ए) आत्मा का एक देह से दूसरे देह में जाना पुनर्जन्म कहलाता है।

बी) आत्मा किस तरह का देह धारण करेगी वह उसके पूर्व जन्म के कर्मों पर निर्भर होता है।

6. **एक आत्मा का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है**

ए) मोक्ष छुटकारा है: जन्म और मृत्यु के चक्र से आत्मा का मुक्त होना। यह तब होता है जब आत्मा को अपने असली स्वभाव का बोध हो जाता है और तब वह ब्रह्मा में विलीन हो जाती है।

बी) अनेक मार्ग इस बोध और एकता की ओर ले चलते हैं : कर्म मार्ग, ज्ञान मार्ग, भक्ति मार्ग (ईश्वर के प्रति शर्तहीन समर्पण)।

पाठ 30

हिन्दू देवी-देवतागण

परिचय : हिन्दू स्वीकार करते हैं कि, सर्वाधिक बुनियादी स्तर पर, ईश्वर एक ही है- परम, निराकार, और सर्वोच्च, विश्वव्यापी आत्मा के रूप में जाना गया एकमात्र अस्तित्व ब्रह्मा - और दूसरा नहीं है। ब्रह्मा ही ब्रह्माण्ड और उसमें पाया जानेवाला सब कुछ है। ब्रह्मा निराकार और असीमित है; यह सच्चाई और सत्य है।

अत: हिन्दू धर्म सर्वेश्वरवादात्मक धर्म है : वह ईश्वर और ब्रह्माण्ड को एक बनाता है। तौभी हिन्दू धर्म अनेक ईश्वरवादी धर्म भी है: असंख्य देवी देवताओं से भरा है जो एक सच्चे ईश्वर के पहलुओं को व्यक्त करते हैं, ये लोगों को अपने पारिवारिक, सामाजिक और धार्मिक और अन्य उपयुक्त परम्पराओं के अनुसार असंख्य तरीकों से पूजा करने की अनुमति देते हैं।

अनेक हिन्दू देवी-देवेताओं में से कुछ यहां नीचे दिए जा रहे हैं :

1. **ब्रह्मा, सृष्टिकर्ता** - हिन्दू त्रिमूर्ति का प्रथम सदस्य और "सृष्टिकर्ता" है क्योंकि वह समय समय पर ब्रह्माण्ड में सब कुछ बनाता रहता है। (यहां 'समय समय पर' ये शब्द उस हिन्दू विश्वास को दिखाते हैं कि समय चक्र रूप में चलता है; ब्रह्म और कुछ हिन्दू शास्त्रों को छोड़कर ब्रह्माण्ड का सब कुछ रचा गया है, कुछ निश्चित समय के लिए बनाकर रखा जाता है और फिर नष्ट किया जाता है ताकि पुन: अपने आदर्श रूप को प्राप्त करे।)

2 **विष्णु, संरक्षक** - यह हिन्दू त्रिमूर्ति का द्वितीय सदस्य है। वह उस ब्रह्माण्ड में व्यवस्था और क्रम बनाए रखता है जो समय समय पर ब्रह्मा के द्वारा रचा जाता है और अगली रचना के लिए शिव के द्वारा नष्ट किया जाता है।

विष्णु की पूजा अनेक रूपों और विभिन्न अवतारों में की जाती है। विष्णु महत्वपूर्ण किन्तु कुछ रहस्यमय देवता है। तत्वों, जैसे कि अग्नी और वर्षा, पर हावि होने वाले अन्य प्रकृति-देवताओं से कम दिखाई देने वाला विष्णु व्याप्त है -वह दैवीय सत्व है जो ब्रह्माएड में सब जगह व्याप्त है। वह आमतौर पर अवतार के किसी रूप में पूजा जाता है।

3. **विष्णु के अवतार** - अवतार का शाब्दिक अर्थ अवतरण होता है और आमतौर पर इसका अर्थ भगवान का अवतरण समझा जाता है। अवतार भगवान के बचानेवाले रूप हैं जो धरती पर जब भी धर्म (नैतिक व्यवस्था) को बचाने और शांति बनाए रखने की आवश्यकता होती है तब अवतरित होते हैं। राम और कृष्ण विष्णु के दस अवतारों में से दो हैं।

ए) श्री राम - हिन्दू देवताओं में सर्वाधिक प्रिय और हिन्दू पुराण रामायण के नायक है। उसे आदर्श पुत्र, भाई, पति, और राजा और धर्म का कड़ाई से पालन करनेवाला के रूप में प्रस्तुत किया गया है। लाखों हिन्दू नवयुवक राजकुमार के रूप में राम की परीक्षा और कष्ट उठाने की कहानियों को पढ़कर संतोष प्राप्त करते हैं जो अपने राज्य से 14 वर्षों के लिए बनवास भेज दिया गया था।

ब) श्री कृष्ण – यदि पूरी दुनिया में किसी एक हिन्दू देवता का नाम जाना पहचाना जाता है तो वह कृष्ण का है। हिन्दू कृष्ण को पवित्र धर्मग्रंथ भगवद्गीता के शिक्षक और राजकुमार अर्जुन के मित्र और परामर्शदाता के रूप में पहचानते हैं जो महाभारत नामक महाकाव्य या पुराण में मिलता है।

अपने भक्तों के लिए श्री कृष्ण आनन्द और चंचल शरारतों वाला है। परन्तु इन सब से बढ़कर मानवजाति को श्री कृष्ण की इस प्रतिज्ञा ने कि जब-जब धर्म का विनाश होगा तब-तब वह अवतार लेकर आते रहेंगे, हजारों सालों से हिन्दुओं की आस्था को सर्वोच्च ईश्वर में जीवित रखा है।

4. **शिव, संहारक** – यह हिन्दू त्रिमुर्ति का तृतीय सदस्य है, प्रत्येक काल चक्र की समाप्ति पर उसे पुनः नया बनाने के लिए ब्रह्माण्ड का संहारक देवता। शिव की विनाशक शक्ति पुनः नया बनानेवाली है; वह एक छोटा कदम है जो पुनर्निमाण को संभव बनाता है।

   हिन्दू प्रचलित रीति से किसी भी धार्मिक या आत्मिक कार्य को आरंभ करने के पूर्व शिव का आह्वान करते हैं; वे विश्वास करते हैं कि पूजा स्थल के आस पास यदि कोई बुरी शक्तियां होंगी तो वे शिव के नाम का उच्चारण मात्र करने से या उसकी प्रशंसा करने से दूर हो जाती हैं।

5. **गणपति, बाधा दूर करनेवाला** – इसे गणेश के नाम से भी जाना जाता है, यह शिव का जेठा पुत्र है। श्री गणेश जिसका सिर हाथी का सिर है, हिन्दुओं के दिलों में विशेष स्थान रखता है क्योंकि वे उसे विघ्नहर्ता के रूप में देखते और मानते हैं। अधिकांश हिन्दू परिवारों में इस भगवान का चित्र या मूर्ति पाई जाती है और किसी कार या ट्रक के अन्दर दर्पण में इसकी छोटी मूर्ति या प्रतिकृति का मिलना सामान्य बात है!

पाठ 31

हिन्दू देवी-देवतागण (क्रमशः), और जाति व्यवस्था

6. **सरस्वती, विद्या की देवी** – यह ब्रह्मा की पत्नी' और सीखने, बुद्धि, बोली और संगीत की देवी के रूप में पूजी जाती है। हिन्दू कोई भी बौद्धिक कार्य आरंभ करने के पूर्व सरस्वती की पूजा करते हैं और हिन्दू विद्यार्थियों को अपने विद्यालय और महाविद्यालय की पढ़ाई के समय और विशेषकर परीक्षाओं के समय या आरंभ होने के पूर्व इस देवी की पूजा करने के लिए उत्साहित किया जाता है।
7. **लक्ष्मी** – यह सौभाग्य, धन और सम्पन्नता की देवी है। विष्णु की पत्नी के रूप में वह प्रत्येक अवतार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। (वह राम की पत्नी सीता है; कृष्ण की पत्नी रूक्मणी है; और विष्णु के एक और अवतार परशुराम की पत्नी धारणी है।)
8. **दुर्गा देवी** – यह एक शक्ति-सम्पन्न और भयानक देवी भी है जो धर्म (नैतिकता) की रक्षा के लिए बहुत युद्ध करती है। तौभी जबकि दुर्गा अपने विरोधियों के लिए बहुत डरावनी है, वह अपने अनुयाइयों के लिए करूणा और प्रेम से भरी हुई है।
9. **इन्द्र** – स्वर्ग का राजा और देवताओं का स्वामी है- बिजली कड़काता और वर्षा का रक्षक और देनेवाला है।
10. **सूर्य** – यह रथ पर सवार स्वर्णिम योद्धा है जिसके रथ को सात सफेद घोड़े खींचते हैं।
11. **अग्नि** – यह आज तक हिन्दू धार्मिक परम्पराओं में विशेष स्थान रखती है, आहुती देनेवाले के रूप में (उस पुजारी के रूप में जो धार्मिक क्रिया को सम्पन्न कराता है); बलि के रूप में (आहुति में काम आने वाली अग्नि और बलि दोनों के रूप में); और समस्त धार्मिक क्रियाओं के गवाह के रूप में।
12. **हनुमान** – यह वानरों का राजा और समर्पित भक्त है- महान हिन्दू काव्य या महापुराण *रामायण* में प्रस्तुत किया गया है। उसने अनेक रोमांचक घटनाओं में राम (विष्णु के अवतार) की सहायता करते हुए अपने साहस, बल और समर्पण के द्वारा देवता बनने का पथ प्रशस्त किया।

हिन्दु धर्म और जाति व्यवस्था

सभी समाजों में किसी न किसी प्रकार की सामाजिक व्यवस्था है जिसमें लोग शिक्षा, संस्कृति और आमदनी के आधार पर वर्गीकृत किए जाते हैं। प्राचीन भारत में ऐसी व्यवस्था की प्रेरणा हिन्दू धर्मशास्त्रों से ली गई और ऐसे समाज के निर्माण के तरीके के

रूप में लागू की गई जिसमें समस्त अनिवार्य कार्यों का ध्यान रखा गया और सब लोग अपनी वंश परम्परा के अनुसार अपनी भूमिका निभाते गए। सदियों बाद इस वर्गीकरण को जाति व्यवस्था कहा गया। इसका विचार इस विभाजन पर आधारित था :

1. **ब्राह्मण : पुरोहित या बुद्धिजीवी वर्ग** – आदर्श ब्राह्मण में शांति, संयम, शुद्धता, क्षमा, ईमानदारी, ज्ञान, आत्म अनुभूति, और ईश्वर में विश्वास के गुण पाए जाते हैं। इससे सम्बंधित "कार्य विवरण" निम्न है :
   ए) ब्रह्म ज्ञान के रखवाले के रूप में सेवा देना,
   बी) शासन करने वाले वर्ग को बौद्धिक सलाह देना,
   सी) पुरोहितीय कार्य सम्पन्न कराना और धार्मिक नेतृत्व प्रदान करना,
   डी) जीवन के मूलभूत प्रश्नों को हल करना।

2. **क्षत्रिय, योद्धा वर्ग** – क्षत्रियों से शारीरिक पराक्रम, साहस, वैभव, दृढ़ता, निपुणता, युद्ध में वीरता, उदारता और प्रताप की अपेक्षा की जाती थी। संबंद्ध कार्यों में विदेशी हमलों से या आंतरिक द्वन्द से देश की रक्षा करना युद्ध कौशल और रणनीतियों में सिद्धहस्त होने की अपेक्षा की जाती थी।
3. **वैश्य : व्यापारी वर्ग** – वैश्य व्यवसाय और व्यापार में महारत रखते हैं। आधुनिक वैश्य प्राथमिक रूप से व्यापारी और उद्योगपति हैं। हिन्दू धर्म ग्रंथों में इस वर्ग और इसके बाद के वर्गों के कार्य के लिए कोई विशेष विवरण या गुण नहीं लिखे गए हैं।
4. **शुद्र : कृषक या मजदूर वर्ग** – शुद्र शारीरिक परिश्रम करते हैं, जैसे कि भूमि खोदना, खेतों में कार्य करना और कृषि उपज उत्पन्न करना और पशुधन की देखभाल और पालन पोषण करना। व्यवहार में यह जाति उन सब लोगों को समेटती है जो ऊपर की तीन जातियों में नहीं आते हैं, सिवा अछूतों के अर्थात् ऐसे लोगों के जो सर्वाधिक नीच कार्य करते हैं जैसे सड़कों-गलियों में झाड़ू लगाना और चमड़े की वस्तुएं तैयार करना।

नोट कीजिए कि अछूत कहलाने वाला जाति समूह हिन्दू शास्त्रों में बताए गए जाति विचारधारा का मानव निर्मित विकृत रूप था – ऐसी विकृति जिसके विरूद्ध महात्मा गांधी जैसे भारतीय नेताओं ने मुहिम चलायी।

पाठ 32

मसीहीयत और जाति व्यवस्था

परिचय : बाइबल जाति व्यवस्था के विषय में क्या कहती है? यीशु ने विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक स्तर के लोगों के साथ कैसा व्यवहार किया? इस हिन्दुत्व से उत्पन्न हुई इस विचारधारा के साथ हमारा क्या व्यवहार होना चाहिए?

परमेश्वर पिता ने सब मनुष्यों को बराबर बनाया। प्रेरित 17:26 कहता है, *"उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाईं है ...।"*

1. रोमियों 2:11 हमें बताता है, *"क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता।"*
2. इफि. 6:9 और कुलु. 3:25 में इसी तथ्य को दोहराया गया है।
3. गलातियों 2:6 हमें बताता है कि *'परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता।'*
4. प्रेरित पतरस ने प्रेरितों 10:34-35 में इसी तथ्य पर प्रकाश डाला जब उसने कहा, *"अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, परन्तु हर जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है।"*

यीशु ने सब के प्रति आदर और प्रेम दर्शाया – उनके वर्ग या जाति, इत्यादि पर ध्यान दिए बिना।

1. यीशु के दिनों में कुष्ट रोगी अक्षरश: अछूत थे। यीशु ने उन्हे चंगा करके उनके प्रति अपना प्रेम दिखाया परन्तु उसी के साथ उसने उन्हे शारीरिक रूप से स्पर्श करके और उन तक पहुचकर सामाजिक निषेध को तोड़ दिया। (लूका 5:12-13)
2. अन्य अछूत जिसके प्रति यीशु तरस खाया वह लूका 8:43-44 की वह स्त्री थी जिसे निरंतर लहू बहने का रोग था। उन दिनों में इस दशा की स्त्रियों को दूसरों को स्पर्श करना वर्जित था किन्तु यीशु ने उसके स्पर्श को स्वीकार किया

और उसे चंगा किया।

3. यीशु ने समाज से बहिष्कृत सभी लोगों के प्रति तरस दिखाया, जैसे वह स्त्री जिसने पापमय जीवन निर्वाह किया था। (ऐसा माना जाता है कि वह एक वेश्या थी या कम से कम असंयमी स्त्री थी।) (लूका 7:36-39)।
4. यीशु के दिनों के यहूदी पुरूष लैंगिकवादी (वे स्त्रियों को पुरूषों से कम मानते थे) और जातिवादी थे (वे अन्य जातियों के लोगों को कमतर आंकते थे)। एक यहूदी पुरूष किसी सामरी स्त्री से बात नहीं किया होता तौभी यीशु ने ऐसी स्त्री से बातचीत की और उसे जीवन का जल दिया (यूह. 4:4-26)।
5. यीशु का सम्पूर्ण जीवन और प्रेम और सब को स्वीकार करने का व्यवहार यूहन्ना 3:16 में निकुदेमुस को दिए उसके कथन में लक्षित है, *"... ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।"*

प्रेरित पौलुस जो "इब्रानियों का इब्रानी" था, गलातियों 3:26-28 में समान बात कहा, *"क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।"*

1. वह इस महत्वपूर्ण बात को रोमियों 10:12 में दोहराता है और पुन: 1 कुरिंथि. 12:13 में दोहराता है, जहां वह कहता है, *"क्योंकि हम सब ने, क्या यहूदी हों क्या यूनानी, क्या दास हों क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।"*
2. पौलुस कुलु. 3:11 में इस शिक्षा को और विस्तार देता है और यह निष्कर्ष देता है कि *"... केवल मसीह सब कुछ और सब में है"* (उसके सब संतानों में)।
3. 2 कुरिंथि 5:17 में पौलुस हमें बताता है, "इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।" मसीह में सब पुराने सामाजिक कलंकों और जातिगत दुर्व्यवहारों की समाप्ति हो चुकी हैं। वे जो मसीह में हैं सब परमेश्वर के द्वारा बराबरी से छुड़ाए गए और प्रेम किए गए हैं। मसीह में अब और कोई जाति, कुल, वंश या रंग का विभाजन नहीं रहा।

समापन : डॉ. एस.डी.पोनराज अपनी पुस्तक *'अन्डरस्टैण्डिंग हिन्दूइजम'* में लिखते हैं : संवाद, संदर्भ या सामाजिक सम्बंधों में होता है और जातियां मजबूत सामाजिक सम्बंध होते हैं जिसे मिशनरी को अपने लाभ के लिए उपयोग में लाना चाहिए ..। प्रारंभिक स्थिति में जाति व्यवस्था की पहचान करना और उसे संवाद के एक माध्यम के रूप में उपयोग करना चाहिए किन्तु आगे चलकर जब लोग मसीही विश्वास को ग्रहण करते हैं, उन्हे जाति के ऊँच-नीच के विचार के बिना मसीही भाईचारे और परमेश्वर के लोगों की संगति की शिक्षा देना चाहिए।"

परमेश्वर के सब संतानों को मसीह में एक होना है (यूह. 17:23)। हमें बिना किसी भेदभाव के परमेश्वर के प्रेम से सब से सच्चा प्रेम करना चाहिए (रोमियो 12:9-10)। जबकि यह सत्य है कि मनुष्य बाहरी रूप को देखता है, परमेश्वर हमारे हृदय को देखता है (1 शमु. 16:7)! काश मसीह की कलीसिया इस तथ्य को प्रतिबिंबित करे! काश हमारी सब सेवाएं हमारे सब कार्यों में इस सच्चाई को दिखा सकें!

पाठ 33

हिन्दू धर्म और दैवीय अधिकार

हिन्दू धर्म अनेक विभिन्न धार्मिक अधिकारों को स्वीकार करता है। हो सकता है कि विभिन्न हिन्दू समूह विभिन्न अधिकारों पर जोर देते हों।

1. हिन्दू धर्म में वेदों को सर्वोच्च लिखित अधिकार हैं।
2. उससे कम अधिकार प्राप्त ग्रंथों में *रामायण* और *महाभारत* महाकाव्य आते हैं। महाभारत में *भागवत गीता* आती है। इन्हें अधिकारों में वेदों के बराबर तो नहीं माना जाता तौभी लोकव्यवहार में इनका प्रभाव अधिक प्रचलित है।
3. वेदों के विषय ये दावे किए जाते हैं : *"विश्व के सबसे प्राचीन धर्मग्रंथ वेदों में परम सत्य पाया जाता है। वेदों का*

सार भागवत गीता में मिलता है जो श्रीकृष्ण के वचनों का शब्दशः दस्तावेज है।"

4. 'ब्राह्मण-ग्रंथ' मूल वेदों की अधिकृत टीकाएं हैं। उपनिषद और अरण्यक बाद में लिखे गए हैं और आमतौर पर अधिकार माने जाते हैं।
5. इसके साथ-साथ ब्राह्मण (धार्मिक शिक्षक) भी अधिकार माने जाते हैं।
6. हिन्दू यह दावा नहीं करते कि ये अधिकार प्राप्त लेख ईश्वर के द्वारा सोचा समझा जाकर सीधे प्रकाशित किया गया कार्य है (जैसा कि बाइबल दावा करती है)। आमतौर पर हिन्दू विश्वास करते हैं कि ईश्वर प्रकृति में सर्वत्र उपस्थित है और ईश्वर-भक्त उनके आस पास या इनमें प्रगट किए गए सत्य को पहचान सकते हैं। ये धर्मग्रंथ सत्य माने जाते हैं जिन्हें इन भक्तों ने अपने अध्ययन के द्वारा महसूस किया है। तथापि, *भागवत गीता* दावा करती है कि वह असली में श्रीकृष्ण के हैं।

अधिकार प्राप्त होने का बाइबलीय सिद्धान्त

1. सिर्फ ईश्वरीय प्रकाशन के द्वारा ही लोग परमेश्वर को प्रसन्न करना सीख सकते हैं।
   ए) यशायाह 55:8-9 परमेश्वर के विचार और गति हमारे विचार और गति से ऊँचे हैं; जैसे आकाश पृथ्वी से ऊँचा हैं।
   बी) गलतातियों 1:8,9 - यीशु मसीह के सुसमाचार को छोड़ और कोई भी शिक्षा उद्धार और परमेश्वर के साथ सही सम्बंध नहीं ला सकती।
2. मनुष्य अपने भीतर आत्मावलोकन करके आत्मिक सच्चाई को प्राप्त नहीं कर सकता। अवश्य है कि मनुष्य को आत्मिक सच्चाई प्रकट करने के लिए परमेश्वर स्वयं मनुष्य के बाहर से उससे बात करे।

बाइबल परमेश्वर के द्वारा बोली गयी थी।

1. 1 थिस्स. 2:13 - यह मनुष्यों का वचन नहीं परन्तु परमेश्वर का वचन है। परमेश्वर ने पवित्र आत्मा को भेजा कि प्रेरणा देकर लोगों की अगुवाई करे और उन्हें परमेश्वर की ईच्छा की शिक्षा दे। अतः प्रत्येक शब्द जो मूलभाषा में आरंभ में दिया गया था वह वास्तव में वही था जो परमेश्वर ने चाहा था।
2. 1 कुरिंथि. 14:37 - पौलुस ने दावा किया कि जो बातें उसने लिखी वे प्रभु की आज्ञाएं थीं। बाइबल के लगभग अन्य सभी लेखकों ने ऐसा ही दावा किया है। ऐसे कथन बाइबल में बारम्बार मिलते हैं।

बाइबल में वह संपूर्ण सच्चाई मिलती है कि मनुष्य के लिये परमेश्वर की इच्छा क्या है।

1. यूहन्ना 16:13 - पवित्र आत्मा ने समस्त सच्चाइयों में उभारते हुये प्रेरितों की अगुवाई की। यह वह संदेश है जिसे फिर उन्होंने मनुष्यों के लिए पवित्रशास्त्र में दर्ज किया।
2. 2 तीमुथियुस 3:16,17 - फलस्वरूप संपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर के लोगों को सिद्ध करता है, सब भले कार्य करने के लिए पूर्णतः सुसज्जित करता है। अब और किसी प्रकाशन की आवश्यकता नहीं है।
3. [यूहन्ना 14:26; 16:13; 2 पतरस 1:3; प्रेरितों 20:20,27]

परमेश्वर संपूर्ण पवित्रशास्त्र को संरक्षित करता है ताकि वह मनुष्यों के उपयोग के लिए सदैव उपलब्ध रहे।

1. 1 पतरस 1:22-25 - घास तो ऊगती और मर जाती है, इसके विपरीत सुसमाचार जीवित रहेगा और सर्वदा तक बना रहेगा।
2. 2 यूहन्ना 2 - सत्य हमारे साथ सदैव बना रहेगा।

बाइबल के अलावा और कोई धार्मिक मार्गदर्शक गाइड परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं है।

1. इसलिये कि बाइबल परमेश्वर की इच्छा का एक सिद्ध प्रकाशन है, अन्य किसी अधिकृत मार्गदर्शक गाइड की आवश्यकता नहीं है। और इसलिये कि मनुष्य में कोई आत्मिक सच्चाई नहीं पाई जा सकती जो उसे परमेश्वर के द्वारा प्रकाशित नहीं की गई थी, परमेश्वर ने यह आज्ञा दे दी है कि हमें मात्र उसी संदेश का पालन करना चाहिए जो बाइबल में प्रकाशित किया गया है। आत्मिक अधिकार के किसी अन्य स्रोत को स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए।

मानव निर्मित नियम और मानवीय परम्पराएं आत्मिक मार्गदर्शक गाइड के रूप में स्वीकार्य नहीं हैं।

1. मत्ती 15:1-9, 13- मनुष्यों के सिद्धान्त हमारी आराधना को व्यर्थ ठहराते हैं।
2. नीतिवचन 14:12- जब मनुष्य उन मार्गों का अनुसरण करते हैं जो मानवीय बुद्धि से सही जान पड़ते हैं तब अंतिम परिणाम मृत्यु ही होता है।

पाठ 34

हिन्दू धर्म में ईश्वर की संकल्पना

हिन्दू धर्म की ईश्वर संबंधित संकल्पना में सर्वेश्वरवादी और बहुदेववादी दोनों तत्व मिलते हैं।

सर्वेश्वरवाद - हिन्दू धर्म सिखाता है कि अन्तत ईश्वर अस्तीत्व का अवैयक्तिक, शाश्वत शक्ति या ताकत है जिसमें व्यक्ति संबंधित कोई भी गुण या लक्षण (जैसे कि जानना, विचार करना, प्रेम करना, इत्यादि) नहीं हैं। यह शक्ति जिसे ब्रह्मा कहते हैं, प्रकृति में पाए जाने वाले सब वस्तुओं में पाया जाता है, विशेषकर सब जीवित प्राणियों में : प्रत्येक पौधे, प्रत्येक प्राणी और विशेषकर प्रत्येक मनुष्य में पाया जाता है।

1. ब्रह्म को एक आत्मिक शक्ति के रूप में समझा जा सकता है जिसमें कोई व्यक्तिगत गुण नहीं हैं, परंतु जो सृष्टि की समस्त वस्तुओं में व्याप्त है। विश्वास किया गया है कि व्यक्तित्व के गुण शारीरिक और भौतिक वस्तुओं में पाये जाते हैं। परन्तु ईश्वर अपने शुद्ध रूप में अवैयक्तिक है और उसमें कोई व्यक्तिगत गुण नहीं हैं।
2. यह अवैयक्तिक तत्व जो सब में व्याप्त है, हमारे भीतर भी पाया जाता है। अत: हमारे भीतर की "आत्मा" दैवीय है। वह ईश्वर का अंश है। आपका असली भीतरी भाग ईश्वर है। आपका भीतरी अंश ईश्वर का अंश है।
3. भागवत गीता कहती है कि हमारी शाश्वत आत्मा "ईश्वर का अहम् हिस्सा हैं।"
4. जब आप ऐसी संकल्पनाओं को समझते हैं, आप उनके प्रति आम उद्धरणों पर ध्यान देना आरंभ करते हैं। उदाहरण के लिए, 'स्टार वार्स' नामक फिल्मों का 'फोर्स' अनिवार्यत: ब्रह्मा ही है - वही जो सब स्थानों में सब वस्तुओं में व्याप्त अवैयक्तिक वैश्विक शक्ति है।
5. इन संकल्पाओं को 'न्यू एज मूव्हमेंट' के द्वारा भी प्रचलित किया गया हैं।

बहुदेववाद - दैवीय तत्व या ब्रह्मा स्वयं को भौतिक संसार में भौतिक हस्तियों के रूप में प्रगट या व्यक्त करता है जिनमें व्यक्तित्व है। इस प्रकार, ईश्वरत्व अनेक देवताओ या अनेक रूपों में प्रगट किया गया है।

1. तीन सर्वोच्च देवता हैं : (1) ब्रह्मा, सृष्टिकर्ता (2) विष्णु, संरक्षक और (3) शिव, विनाशक। आमतौर पर ये बराबर के माने जाते हैं, यद्यपि कुछ विशिष्ट संप्रदाय किसी एक या दूसरे पर अधिक जोर देते हैं। और ध्यान दीजिए कि ये शक्ति और अधिकार के क्षेत्रों में एक दूसरे से भिन्न हैं।
2. अवतार इन्ही देवताओं के मानवीय देहरूप हैं जो मनुष्य के रूप में इस पृथ्वी पर आए हैं।
3. और भी अनेक छोटे छोटे देवी देवता हैं जिनके पास विभिन्न स्तरों और क्षेत्रों के अधिकार पाए जाते हैं। कुछ धरती के कुछ क्षेत्रों में या प्रकृति के निश्चित पहलुओं पर शासन करते हैं, जैसे कि अग्नि, सूर्य, धन, जल, इत्यादि।
4. धर्म गुरू और मृत पूर्वज भी देवताओं की तरह पूजे जाते हैं।
5. विभिन्न देवी-देवताओं की और प्रतिमाओं की पूजा प्रचलित है। इस पूजा में अनेक प्रतिमाओं का उपयोग शामिल है। सर्वव्यापी ब्रह्मा की संकल्पना मुख्यत: धार्मिक अगुवों के मध्य सैद्धान्तिक है।

बाइबल में परमेश्वर की संकल्पना - सच्चा परमेश्वर एक ही है।

1. तीन अलग-अलग अस्तित्वों में ईश्वरत्व पाया जाता है : पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा। परन्तु हिन्दू देवताओं के विपरीत ये तीनों इच्छा, लक्ष्यों, उद्देश्यों इत्यादि में पूर्णत एक हैं। इन तीनों को सृष्टि के समस्त पहलुओं पर पूर्ण अधिकार है (एक को अग्नि, एक को धन, इत्यादि ऐसा नहीं है।)। अत: वे एक परमेश्वर की रचना के लिए पूर्णत: एकजुट हैं (यूहन्ना 17:20-21)।
2. व्यवस्था. 4:35-39 - "यहोवा ही परमेश्वर है; उसको छोड़ और कोई है ही नहीं।"
3. यशायाह 43:10-11 - "मुझ से पहले कोई परमेश्वर न हुआ और न मेरे बाद कोई होगा। मैं ही यहोवा हूँ और मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्ता नहीं।"
4. निर्गमन 20:3 - "तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।"

परमेश्वर में जीवित व्यक्तिगत आत्मिक अस्तित्व के गुण पाए जाते हैं।

1 बाइबल कहती है कि परमेश्वर आत्मा है (यूहन्ना 4:24) और मांस और लहू नहीं है (मत्ती 16:17)।

2. तथापि, परमेश्वर में ऐसे गुण हैं जो जीवित, व्यक्तिगत, अकेले व्यक्ति को परिभाषित करते हैं। इन गुणों में निम्न बातें आती हैं :

जीवन होना (यूहन्ना 5:26)
जानना (मत्ती 6:8,32)
प्रेम करना (यूहन्ना 3:16; रोमियों 5:6-11)
ईच्छा करना (मत्ती 7:21)
बोलना/बात करना (मत्ती 3:16)
देखना (मत्ती 6:4,6,16)
क्रियाशील होना (यूह. 5:17,20)

पाठ 35

मनुष्य की अंतिम नियति पर हिन्दू धर्म की संकल्पना

मनुष्य की अंतिम नियति पर हिन्दू संकल्पना

हिन्दू विश्वास करते हैं कि जब एक व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो उसकी आत्मा को एक नयी संसारिक देह दी जाती है, जो एक पशु की, अन्य जाति के मनुष्य की, या एक देवता की हो सकती है जो इस बात पर निर्भर होती है कि उसने वर्तमान जीवन को किस प्रकार से जीया है। जन्म और मृत्यु के पुनर्जन्म का यह चक्र तब तक चलता है जब तक कि वह पूर्णत: मुक्त नहीं हो जाता।

मनुष्य की अंतिम नियति पर तीन विशेष हिन्दू संकल्पनाएँ

1. **पुनर्जन्म :** हिन्दू विश्वास करते हैं कि आत्मा पुनर्जन्मों से तब तक गुजरता रहता है जब तक कि उसके पूरे कर्मों का निपटारा नहीं हो जाता और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति नहीं मिल जाती। कोई भी आत्मा इस नियति से अछुता नहीं है।
2. **कर्म :** यह विश्वास है कि किसी के जीवन की परिस्थितियां पूर्णत: उसके पूर्वजन्म के या इस जीवन के पहले कर्मों पर निर्भर होती हैं। हमारे इस जीवन में प्रत्येक भली या बुरी बात जो हमारे साथ होती है वह हमारे गुजरे हुये समय में किए गए कार्य के फल के रूप में आती हैं। कुछ भी ऐसा नहीं जो दूसरों के किए का फल हो वरन् हमारे ही बीते समय के कार्य का परिणाम होता है। इसलिए इस जीवन में भले कार्य करने के द्वारा एक व्यक्ति अपने भावी पूर्नजन्म की परिस्थितियों को बेहतर कर सकता है।
3. **मुक्ति:** हिन्दू धर्म का अंतिम लक्ष्य पुनर्जन्म के चक्र से बचना या निकल जाना है। हिन्दू जन्म, मृत्यु, और पुनर्जन्म के चक्र से छुटकारा प्राप्त करके भौतिक शरीर-रहित शुद्ध निर्गुण दशा में पहुंचने का प्रयास करते हैं। इस अंतिम स्थिति की सही प्रकृति को स्पष्टता से परिभाषित नहीं किया गया है। कुछ उसे चेतना की शून्यता के रूप में देखते हैं और कुछ उसे आनन्द की अनुभूति के रूप में। किन्तु अंतिम परिणाम यह है कि मनुष्य किसी न किसी तरह देवता का भाग बनते हुए शाश्वत ब्रह्मा में विलीन हो जाता है। बिना अपवाद सभी आत्मा इस सर्वोच्च आत्मिक स्थिति को प्राप्त होंगे चाहे इसके लिएं उन्हें अनेक जन्म क्यों न लेने पड़े। अत: यह निष्कर्ष निकलता है कि हिन्दू धर्म में कोई अनन्तकालीन नरक या नरकदण्ड नहीं है।

बाइबल मनुष्य की अंतिम नियति के बारे में क्या शिक्षा है :

1. मनुष्य के लिये इस पृथ्वी पर एक ही बार जन्म लेना और मरना है (इब्रा. 9:27)।
2. मृत्यु होने पर शरीर मिट्टी में मिल जाता है और आत्मा परमेश्वर के पास लौट जाती है जिसने उसे बनाया है (अन्य देह में नहीं जाती)। सभोपदेशक 12:7
3. जब एक व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तब उसकी अंतिम नियति तय हो जाती है। वह दण्ड सहने की नियति से आनन्द की जगह पर नहीं जा सकता और न ही इसके विपरीत (लूका 16:26)। इसका अर्थ यह है कि पुनर्जन्म जैसी कोई बात ही नहीं है।

मनुष्य की अंतिम नियति के बारे तीन विशिष्ठ मसीही शिक्षाएँ :

1. **पुनरूत्थान**
   ए) जो मर गए हैं वे यीशु के वापस आने पर जीवित होंगे (यूह. 5:28,29)।
   बी) यीशु की मृत्यु के पश्चात वह मुर्दो में से जी उठा (1 कुरं. 15:22)।
   सी) ध्यान दीजिए कि प्रत्येक मनुष्य अपने ही रूप में मुर्दो में से जी उठेगा, किसी पशु, देवता, या दूसरे व्यक्ति के रूप में नहीं।
2. **न्याय**
   ए) जैसे मनुष्य के लिए एक बार मरना निश्चित है वैसे ही उसके पश्चात न्याय का सामना करना निश्चित है (इब्रा. 9:27)।
   बी) न्याय के समय प्रत्येक को अपने शरीर में जिये गये भले या बुरे जीवन के अनुसार प्रतिफल मिलेगा (2 कुरिंथियों 5:10)।
   सी) पौलुस ने अथेने के मूर्तिपूजक निवासियों को बताया कि सब का न्याय होगा (प्रेरितों 17:31-32)।
3. **अंतिम नियति**
   ए) न्याय के पश्चात् मनुष्य अपनी शाश्वत नियति प्राप्त करेंगे। धर्मी लोग परमेश्वर की उपस्थिति में आनन्द के स्थान में अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं। दुष्ट लोग कष्ट और दु:ख सहने का, परमेश्वर से अलग होने का अनन्तकालीन दण्ड प्राप्त करते हैं (मत्ती 25:46)।
   बी) परमेश्वर महान श्वेत न्याय सिंहासन से सब का न्याय करेगा (प्रका. 20:11-16)।

बाइबल मात्र हिन्दू धर्म के पुनर्जन्म की शिक्षा का विरोध ही नहीं करती, वह यीशु मसीह के पुनरूत्थान के द्वारा जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान का प्रमाण प्रस्तुत करती है - ऐसा प्रमाण जिसे विश्व का कोई भी धर्म प्रदान नहीं कर सकता या करने का प्रयास भी नहीं कर सकता है।

पाठ 36

मनुष्य की अंतिम नियति पर हिन्दू धर्म की संकल्पना (क्रमश:)

हिन्दूओं के अनुसार मनुष्य की अंतिम नियति क्या है और उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

पारलौकिक के संबंध में हिन्दू संकल्पना :

1. भौतिक संसार और पुनर्जन्म के चक्र से बाहर निकल जाना ही हिन्दूओं की अंतिम नियति और आशा है। यह तब पूरा होता है जब प्रत्येक मनुष्य अंतत: ब्रह्मा में विलीन हो जाता है। इस भौतिक जीवन को त्यागना अथवा इस संसार से आगे जाना इसे आमतौर पर "पारलौकिक" में चले जाना कहते हैं। इस लक्ष्य की प्राप्ति में जो भी बातें सहायक होती हैं उन्हें "पारलौकिक" कहते हैं (इस शब्द का उपयोग भागवद गीता के परिचय में बारंबार उपयोग किया गया है)।
2. अनेक मार्ग सिखाए गए हैं जिनके द्वारा मनुष्य "पारलौकिक" की अवस्था प्राप्त कर सकता है। विभिन्न समूह विभिन्न पद्धतियों पर जोर देते हैं परंतु वे दूसरों के द्वारा सिखाए गए मार्ग का तिरस्कार भी नहीं करते हैं।
3. वर्तमान हिन्दू धर्म के अनुसार, "प्रत्येक आत्मा अपना मार्ग खोजने के लिए स्वतंत्र है, चाहे वह भक्ति, त्याग, साधना, योग या नि:स्वार्थ सेवा के द्वारा क्यों न हो। हिन्दू विश्वास करते हैं कि कोई भी धर्म दूसरों को नीचा दिखाकर सिर्फ अपने बताए मार्ग को ही उद्धार का मार्ग होने की शिक्षा नहीं देता है। इसप्रकार वे सहिष्णुता और समझदारी बनाये रखते हैं।"

मोक्ष (मुक्ति) प्राप्त करने के कुछ प्रचलित हिन्दू मार्ग निम्नलिखित हैं :

1. **भले कार्य (कर्म)** - माना जाता है कि यदि लोग पर्याप्त भले कार्य करें - विशेषकर ऐसे कार्य जो नि:स्वार्थ हैं और भौतिक वस्तुओं की महिमा को कम करते हों- तो वे उच्च वर्ण में पुर्नजन्म प्राप्त करेंगे। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक कि एक मनुष्य अंतत: पुनर्जन्म के चक्र और भौतिक अस्तित्व से पूर्णत: मुक्ति प्राप्त नहीं कर लेता है।

2. **तपस्या और आत्मत्याग** – एक व्यक्ति को बैरागी के समान रहना चाहिये, अर्थात् व्यक्तिगत जीवन के आमोद-प्रमोद और रूचियों से संबंध-विच्छेद करते हुये, धन-सम्पत्ति इत्यादि पर जोर न देते हुए जीना चाहिये। इसके परिणाम-स्वरूप, उस मनुष्य का भौतिक जीवन उसके भीतरी व्यक्तित्व पर अपनी पकड़ खोता जाता है। जब उसकी मृत्यु होती है तब वह सदा के लिए मुक्त हो जाता है।
3. **ज्ञान** – जब एक व्यक्ति अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित करता है, विशेषकर वेदों का ज्ञान, तब वह यह समझ प्राप्त करता है कि उसकी असली प्रकृति ईश्वर का हिस्सा है। जब वह अपने मन को ऐसे विचारों से भर लेता है, उसके कार्य और विचार भौतिक वस्तुओं से दूर कम चिंतित होते हैं। जब उसकी मृत्यु होती है तब उस पर उसके भौतिक जीवन का कोई प्रभाव नहीं रह जाता और वह मुक्त हो जाता है।
4. **श्रद्धा (भक्ति)** – यदि कोई ईश्वर के प्रति निरंतर प्रेम और समर्पण व्यक्त करता है तोवह ईश्वर के लिए इतना लगन रखने लगता है कि इस जीवन का आकर्षण खो जाता है। जब उसकी मृत्यु होती है तब वह पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त हो जाता है।

   इस मार्ग पर हरे कृष्णा भक्ति आंदोलन में विशेष जोर दिया गया था। यदि कोई कृष्ण के बारे उचित विचारों को सोचते मरता है तो उसे गारंटी दी जाती है कि वह तुरंत पुनर्जन्म के चक्र से बाहर निकाला जाकर आत्मा के संसार में प्रवेश पाता है। यह निश्चय करने के लिए कि एक व्यक्ति अपनी मृत्यु के समय सही सोच रहा है, उसके जीवन को कृष्ण के विचारों से निरंतर भरा होना चाहिए। ऐसा सही विचार वेदों को पढ़ने से आता है, परन्तु विशेषकर हरे कृष्णा का मन्त्रोच्चार करने से।
5. **ध्यान (योग)** – हिन्दू विश्वास करते हैं कि जीवन (भौतिक परिस्थितियां) अस्थायी भ्रम (माया) है। यह अंतिम सत्य नहीं है। हम इसे सिर्फ इसलिए सच मान लेते हैं क्योंकि हम नहीं समझते कि हमारी आत्मा (आन्तरिक स्वयं) ईश्वर का भाग है, जो अंतिम सत्य है।

   एक व्यक्ति अपने स्वचेतन मन में गहरे आन्तरिक मनन के द्वारा अपने असली स्वत: को खोज सकता है। इसे आत्म-अनुभूति होना या ज्ञान प्राप्त करना कहते हैं। जब हम इसे समझ लेते और उसके अनुसार सोचना और कार्य करना आरंभ करते हैं तब हम इस जीवन के महत्व से विलग होते हैं। तब इस जीवन में चीजें बेहतर होती जाती हैं, परन्तु विशेषकर हमारी मृत्यु के समय हम पुनर्जन्म के चक्र से छूट जाते हैं। 'ट्रांसिडेंटल मेडिटेशन' (पारलौकिक चिंतन) में यही विधि चलती है।

इन सब मार्गों में पुनर्जन्म की बारंबार आवश्यकता होती है जिसमें मनुष्य उच्च से उच्चतर स्तर पर पहुंचता जाता है, जब तक कि वह इस चक्र से बाहर नहीं हो जाता। उसे यहां तक अपने ही प्रयास से पहुंचना होता है। ईश्वर सहायता तो कर सकता है परंतु इसमें सर्वोच्च व्यक्तित्व की संकल्पना नहीं है जो एक पापी के बदले में उसके पाप का दण्ड चुका सके।

पाठ 37

मनुष्य की अंतिम नियति पर मसीहीयत की संकल्पना

परिचय : बाइबल सिखाती है कि हर एक मनुष्य, भौतिक और शारीरिक जीवन जीने के लिए एक बार जन्म लेता है और इस जीवन के पश्चात् वह या तो परमेश्वर की उपस्थिति में अनंतकालिक आनन्द के स्थान में या अनन्तकालिक वेदना के स्थान में जीएगा (इब्रा. 9:27-28)।

हमारे पाप हमें आत्मिक रीति से परमेश्वर से अलग कर देते हैं।

1. रोमियो 3:23 – सब पाप के अर्थात् परमेश्वर की ईच्छा का उलंघन करने के दोषी हैं (1 यूहन्ना 3:4)।
2. यशा. 59:1-2 – हम अपने पापों के कारण परमेश्वर की संगति और सामंजस्य से वंचित हैं। तब वह हमारे अंदर निवास **नहीं** कर रहा है। परमेश्वर से इस आत्मिक अलगाव के कारण हम सदा के लिए परमेश्वर से अलग कर दिए जाएंगे यदि हमारे पाप क्षमा नहीं किये गये।

परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह के कारण, ईश्वर इस पृथ्वी पर मनुष्य (यीशु) के रूप में आया और मनुष्य के पापों

का दण्ड चुकाने के लिए बलिदान के रूप में मारा गया।

1. यूहन्ना 3:16 – क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।
2. 1 पतरस 2:4 – यीशु हमारे पापों को अपने शरीर में उठाकर क्रूस पर चढ़ गया ताकि हम जीवन पाएं।
3. सुसमाचार की अतुलनीय सुंदरता यह है कि स्वयं परमेश्वर ने मनुष्यों के लिए वह करने का चुनाव किया जो मनुष्य स्वयं के लिए नहीं कर सकता था। उसने इसे स्वयं पीड़ा और कष्ठ उठाने की बहुत बड़ी कीमत चुकाकर पूरा किया। यह ईश्वरीय अनुग्रह की सुसमाचारीय संकल्पना है, ऐसी संकल्पना जो हिन्दू धर्म में बिल्कुल भी नहीं पायी जाती है।

यीशु मसीह के बलिदान को छोड़ अन्य कोई भी मानवीय प्रयास क्षमा प्रदान नहीं कर सकता या परमेश्वर से फिर से सम्बंध ठीक नहीं कर सकता।

1. इफि. 2:8,9 – यीशु मसीह पर विश्वास के बिना हमारे भले कार्य हमे नहीं बचा सकते हैं। जबकि यह सच है कि हमें अच्छा जीवन जीना चाहिए और परमेश्वर की आराधना इत्यादि करना चाहिए, तथापि ये बातें हमारा उद्धार नहीं कर सकतीं। हमें उद्धार पाने के लिए यीशु से क्षमा प्राप्त करना ही होगा। यह बात उस हिन्दू विचार के सीधे विपरीत है कि ईश्वर तक ले जाने वाला प्रत्येक मार्ग मनुष्य के कार्यों पर आधारित है।
2. मत्ती 6:7 – कुछ निश्चित वाक्यों का अंतहीन दोहराव – जैसे कि हिन्दू मंत्र – हमारा उद्धार नहीं कर सकता।
3. प्रेरित 4:12 – यीशु को छोड़ और किसी में उद्धार नहीं है। (यूहन्ना 14:6 भी देखिए।)

परमेश्वर के द्वारा प्रदान किए जा रहे उद्धार को पाने के लिए मनुष्य को पश्चाताप, विश्वास और अंगीकार करना चाहिए।

1. हमें अपने पापों से पश्चाताप करना चाहिए – प्रेरितों 17:30
2. हमें विश्वास करना चाहिए – यूहन्ना 8:24
3. हमें मसीह का अंगीकार करना चाहिए – रोमियो 10:9,10

जो मसीह को अपने हृदयों मे ग्रहण नहीं करते वे सदा के लिए वेदना में जीएंगे।

1. मत्ती 25:41में इस अनन्तकाल को "अनन्त आग" कहता है।
2. दानिएल 12:2 में इसे "नामधराई और सदा तक अत्यंत घिनौने ठहरना" कहा गया है।
3. बाइबल के अन्य अनुच्छेद जो नरक की चर्चा करते हैं – यशा. 66:24; मरकुस 9:43; प्रका. 14:11

जो मसीह को अपने हृदयों में ग्रहण करते हैं वे सदा के स्वर्गसुख में परमेश्वर की उपस्थिति में जीएंगे।

1. यूहन्ना 3:16 हमें बताता है कि जो मसीह यीशु पर विश्वास करेंगे वे अनन्त जीवन का आनन्द उठाएंगे।
2. यूहन्ना 14:2 स्वर्ग का वर्णन इस तरह करता है कि वहां रहने के अनेक स्थान हैं।
3. प्रका. 22:1-5 स्वर्ग का वर्णन ऐसे स्थान की तरह करता है जहां श्राप नहीं है (इसलिए कोई कष्ट, रोग, पीड़ा या मृत्यु नहीं है), वहां रात नहीं है, और ऐसा नगर है जहां परमेश्वर का सिंहासन है। वहां जीवन का वृक्ष भी है।
4. प्रका. 21:4 हमें बताता है कि वहां कोई आंसू, कोई दु:ख, मृत्यु और पीड़ा नहीं होगी।
5. प्रका. 21:18-25 स्वर्ग का वर्णन सोने की सड़कों वाले, सुंदरता में अद्भुत, सूर्यकान्त की दीवारों वाले, सब तरह के बहुमूल्य पत्थरों से निर्मित नेंव वाले नगर के रूप में करता है। उसके बारह फाटक होंगे और प्रत्येक फाटक एक-एक मोती का बना होगा।
6. 2 पतरस 3:13 और प्रका. 21:1 में "नया आकाश और नई पृथ्वी, धार्मिकता के घर" की चर्चा की गई है। अनेक लोग हैं जो विश्वास करते हैं कि जब मसीह वापस आएगा वह समस्त सृष्टि को छुटकारा देगा और सब कुछ नया करेगा और तब पृथ्वी पर अपना सिंहासन स्थापित करेगा – नयी, छुड़ायी गई, पाप से चंगाई प्राप्त की हुई, सिद्ध पृथ्वी।

पाठ 38

जनजातियों और दलितों के द्वारा पालन किया जाने वाला हिन्दू धर्म[1]

अनुसूचित जनजातियाँ और अनुसूचित जातियाँ : प्रत्येक मसीही कार्यकर्त्ता को यह महत्वपूर्ण घटक समझना चाहिए कि सब हिन्दू एक से नहीं हैं। भारत में जनजातिय और दलित समूहों के अपने अपने स्थानिय धर्म हैं। वे मुख्यत: जीववाद हिन्दुत्व (आत्माओं के संसार में विश्वास) का पालन करते हैं, जबकि वे एक सर्वोच्च परमेश्वर में विश्वास करते हैं। शास्त्रसंमत हिन्दू धर्म के प्रभाव के बावजूद, जनजातियों और दलितों में से अधिकांश लोग अभी भी अपने ही प्रकार के हिन्दू मतों का पालन करते हैं। हम उनके विश्वासों का वर्णन जनजातीय हिन्दू धर्म और दलित हिन्दू धर्म के रूप में कर सकते हैं जो बहुत हद तक रूढ़िवादी, दार्शनिक और शास्त्रीय हिन्दू धर्म के विपरीत है। ऊँची जाति के हिन्दू गाय की पूजा करते हैं जबकि जनजातीय और दलित हिन्दू गाय को काटकर खा जाते हैं। किन्तु भारतीय जनगणना के अनुसार दोनों को हिन्दू माना जाता हैं।

कुछ कारक जो मसीहीयत को जनजातियों और दलितों के मध्य आकर्षक बनाते हैं:

1. मसीही विश्वास सब लोगों को, चाहे वे कितने भी वंचित क्यों न हों, समान मानवीय प्रतिष्ठा और बराबरी प्रदान करता है। जैसा पाठ 32 में बताया गया है, परमेश्वर किसी को भी दूसरे से कम नहीं देखता परन्तु इसकी अपेक्षा हमारे हृदयों को देखता है। 1871 की जनगणना रिपोर्ट कहता है, "मसीही मिशनरी लम्बे समय से कानूनी रीति से पेरिया लोगों को धूल-मिट्टी मानने की चली आ रही लम्बी मान्यता-प्राप्त परम्परा को तोड़ने का प्रयास करते रहे हैं और उन्हें बराबरी का अधिकार और सुविधाएं देने में सफल हुए हैं।"
2. अनुसूचित जनजाति के लोग मसीहीयत को हिन्दू जाति-व्यवस्था से बाहर निकलने के उपाय के रूप में देखते हैं। पीढ़ियों से चली आ रही गुलामी और सामाजिक अन्याय की हिन्दु जाति-व्यवस्था के लिये मसीहियत एक विकल्प प्रस्तुत करती है।
3. अनेक दलितों का जो पूर्व में बुद्ध धर्म (या नवबौद्ध) की ओर चले गए थे मोह-भंग हो गया है क्योंकि बुद्ध धर्म यथार्थ में किसी ईश्वर की उपासना नहीं करता। अनेक दलित, जो इस बात के प्रति सजग हैं कि कोई एक ईश्वर है जिसकी उपासना करनी चाहिए, अपनी आत्मिक भूख में मसीह की ओर मुड़ रहे हैं।
4. अनुसूचित जाति के लोग विश्वासियों में पाए जाने वाले भाईचारे के प्रेम और एकता की ओर आकर्षित होते हैं। वे मसीही विश्वास को शांतिप्रिय धर्म के रूप में देखते हैं जहां प्रत्येक, चाहे वह किसी भी जाति से आया हो, बराबरी का व्यवहार पाता है।
5. जनजातीय और दलित लोग विश्वास का एक उच्च स्तर चाहते हैं जो मसीही विश्वास के करीब है।

कुछ कारक जो दलितों को यीशु के चेले बनने से हतोत्साहित करते हैं।

1. संविधानिक कठिनाई - भारत के संविधान के अनुसार हमारे अनुसूचित जनजातियों और अनुसूचित जातियों को शिक्षा, नौकरी और इस प्रकार के और अन्य बातों में विशेषाधिकार मिलते हैं। परन्तु व्यवहार में ये सब विशेषाधिकार सिर्फ उन्हें मिलते हैं जो हिन्दू होने की घोषणा करते हैं। यह अन्याय उन दलितों के लिए बहुत बड़ा रोड़ा है जो मसीहीयत को ग्रहण करना चाहते हैं।
2. सताव की धमकी वह दूसरा कारण है जो अनुसूचित जातियों को मसीही बनने से निराश करता है। बहुधा इस सताव का उच्च राजनैतिक व्यक्तियों के द्वारा समर्थन होता है। अनेक लोग मसीही बनने का खतरनाक कदम उठाने से हिचकिचाते हैं।
3. सामाजिक निष्कासन - जब दलित मसीही बनने का साहसिक निर्णय लेते हैं तो बहुधा वे अपने परिवारों, गांवों, और पड़ोस से निष्कासित कर दिए जाते हैं। विशेषकर, किसी दलित मसीही युवक या युवती के लिए सर्वदा कठीनाई होती है कि उसे विवाह के लिए कौन स्वीकार करेगा।
4. बहुधा मसीही कार्यकर्त्ता भी अनुसूचित जाति के विश्वासियों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होते हैं। कुछ कार्यकर्त्ता सामूहिक निर्णय (जब अनेक दलित एक साथ मसीह के पास आते हैं) की वैधता पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं। कुछ मसीह के पास आने वाले लोगों के अभिप्राय पर संदेह करते हैं।

जनजातीय धर्मों के पांच गुण :

1. एक सर्वोच्च शक्ति में विश्वास
2. आत्माओं के संसार में विश्वास

3. अलौकिक शक्ति में विश्वास
4. जादू टोना में विश्वास
5. लहू के बलिदान में विश्वास

ध्यान दीजिये कि मसीही सच्चाई और जनजातीय धार्मिक विश्वासों कैसे एकदूसरे के नीकट हैं

1. दोनों ही उस सर्वोच्च शक्ति को स्वीकार करते हैं जिसने ब्रह्माण्ड को और हमारी दुनिया को, और जो कुछ उसमें है उसे भी, बनाया।
2. दोनों ही आत्मा के संसार पर विश्वास करते हैं (मसीही लोग शैतान, दुष्टात्माओं और स्वर्गदूतों पर विश्वास करते हैं)।
3. दोनों ही लहू के बलिदान पर विश्वास करते हैं; मसीह यीशु ने स्वयं अपनी देह को हमारे प्रायश्चित के रूप में अंतिम बलिदान करके चढ़ा दिया और भविष्य के किसी भी लहू के बलिदान की आवश्यकता को समाप्त कर दिया।

[1]यह पाठ और इसके बाद का पाठ डॉ. एस. डी. पोनराज की पुस्तक 'अनडरस्टैण्डिंग हिन्दुइजम' (Understanding Hinduism) से लिए गए हैं। यह पुस्तक मिशन एजुकेशन बुक्स, चेन्नई में उपलब्ध हैं।

पाठ 39

प्रचलित हिन्दू धर्म

प्रचलित हिन्दू धर्म की विविधता : प्रचलित हिन्दू धर्म अनेक विभिन्न धर्मों का मिश्रण है जिसमें जीववाद, प्राचीन द्रविड़ धर्म और आर्य धर्म आते हैं। इसमें जनजाति या गांव इत्यादि पर आधारित असंख्य विविधताएं मिलती हैं।

प्रचलित हिन्दुओं के कुछ आम विश्वास और व्यवहार नीचे दिए जा रहे हैं:

1. अनेक देवी देवताओं में विश्वास - कहा गया है कि हिन्दू धर्म में तैतीस करोड़ देवी देवता हैं। विभिन्न जातियों के द्वारा विभिन्न त्योहारों पर विभिन्न देवी देवताओं की पूजा की जाती है।
2. मूर्तियों की और मंदिरों में पूजा में विश्वास - दार्शनिक हिन्दुओं के विपरीत प्रचलित हिन्दू मूर्तियों की पूजा करते, मंदिरों में जाते हैं और पूजा करते हैं। मूर्तियां सर्वत्र पाई जाती हैं।
3. परम्पराओं में, चढ़ावा चढ़ाने में और त्योहारों में विश्वास - सब आवश्यक परम्पराओं और त्योहारों के कारण प्रचलित हिन्दू धर्म का पालन करना महंगा धर्म है।
4. तीर्थयात्राओं में विश्वास - प्रचलित हिन्दू धर्म के अनुयायी वाराणसी, तिरूपति, रामेश्वरम् और सबरीमाला जैसे विभिन्न पवित्र स्थानों की तीर्थयात्राओं पर जाते हैं।
5. अलौकिक शक्तियों में विश्वास - जनजातियों की ही तरह प्रचलित हिन्दू भी भले और बुरे दोनों तरह की आत्मिक शक्तियों में विश्वास करते हैं। उनके जीवन बहुधा इन शक्तियों के भय और उनके बंधनों से नियंत्रित होते हैं।
6. लहू के बलिदान में विश्वास - अधिकांश प्रचलित हिन्दू देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए लोहू के बलिदान पर विश्वास करते हैं।
7. मंत्र-तंत्र, जादू-टोना, भूतसिद्धि और बुरी नज़र में विश्वास - अनेक हिन्दू काली नज़र से बचने के लिए, आत्माओं को वश में करने के लिए, श्रापों का जवाब देने के लिए, जादू-टोना और रोगों से बचने के लिए, संतान पाने के लिए, देवी देवताओं का आर्शीवाद पाने के लिए, और अच्छी फसल और सफलता पाने के लिए परम्पराओं, शुद्धिकरण और गंडे-ताबीजों का उपयोग करते हैं।
8. ज्योतिष शास्त्र में विश्वास - लाखों हिन्दू ज्योतिष, भविष्यफल, आत्माओं से पूछना और मांगलिक या शुभ मुहूर्त और शकुन का पालन करते हैं।
9. गुरूओं और देव-पुरूषों में विश्वास - हिन्दू विश्वास करते हैं कि कुछ गुरू और देव-पुरूष (भगवान तुल्य संत पुरूष) आश्चर्यकर्म कर सकते हैं, उन्हे उन्नति दे सकते हैं और ईश्वर तक ले जा सकते हैं। इन देव-पुरूषों में से कुछ स्वयं को भगवान के अवतार की तरह प्रस्तुत करते हैं और पूजा भी स्वीकार करते हैं।

हिन्दुओं को सुसमाचार सुनाने की विधियाँ : (इनमें से अधिकांश तरीके जनजातियों को सुसमाचार पहुंचाने में भी काम आ सकते हैं क्योंकि उनके कुछ विश्वास एक दूसरे से मेल खाते हैं।)

1. स्थायी रूप से निवास करने वाले साक्षी की आवश्यकता - लोगों के मध्य रहनेवाले मिशनरी के जीवन में सुसमाचार का संदेश दिखाई देना चाहिए।
2. सामुहिक निर्णय का महत्व होता है - लोकप्रिय हिन्दूओं में सामूहिक चेतना होती है, और इसलिए कोई भी निर्णय संयुक्त परिवार का या संयुक्त-समाज का होना चाहिए।
3. कौटुम्बिक/रिश्तों के सम्बंध का उपयोग महत्वपूर्ण है - कुटुम्ब का बंधन बहुत मजबूत होता है इसलिए मिशनरी को सुसमाचार प्रसारण के लिए इनका उपयोग करना चाहिए। सामान्य हिन्दुओं को एक एक कर सुसमाचार सुनाना सिर्फ निष्फल ही नहीं होगा है परंतु इससे सुसमाचार का विरोध भी होगा।
4. लिखित और मौखिक दोनों प्रसारण अनिवार्य हैं - कुछ सामान्य हिन्दू अशिक्षित हैं और उन्हें कहानी, गीत, नाटक और नृत्य के द्वारा सबसे अच्छे से सुसमाचार सुनाया जा सकता है। गांवों में सत्संग सुसमाचार प्रसारण का अच्छा तरीका है। यह सही है कि जो शिक्षित हैं उनके लिए साहित्य भी सहायक होता है।
5. अंधकार की शक्तियों का सामना करना प्रभावकारी होता है - आम हिन्दूओं के मध्य 'शक्ति' असली मामला है। मसीह यीशु की सामर्थ्य को उन देवी देवताओं की शक्ति से अधिक सामर्थी प्रदर्शित किया जाना चाहिए जिन पर उन्होंने पीढ़ियों से विश्वास किया और उनकी पूजा करते आये है। दूसरे शब्दों में आश्चर्यकर्म आम हिन्दूओं के मध्य सुसमाचार के शक्तिशाली प्रमाण हैं।
6. समग्र सेवा को मिशन कार्य का भाग अवश्य बनाना चाहिए - अधिकांश आम हिन्दू समाज गरीब, पिछड़ा और दलित है। वे सदियों से न्याय से वंचित रखे गये हैं। वे सामाजिक मुक्ति के साथ साथ आत्मिक मुक्ति के लिए मिशनरी की ओर देखते हैं। वे ऐसी समग्र सेवा की आशा करते हैं जो उनके जीवन की आशा को पूर्ण करेगी और उनके समाज को परिवर्तित भी करेगी। मिशनरी को सकारात्मक प्रतिउत्तर देना चाहिए और सुसमाचार को समग्र विकासकारक के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

पाठ 40

जनजातीय धर्म

अगले दो पाठ डॉ. एस.डी.पोनराज की पुस्तक 'स्ट्रैटजीज़ फॉर चर्च प्लान्टिंग मूवमेंट' से लिए गए हैं।

दो राज्यों की संकल्पना :

<u>स्वर्ग का राज्य</u>	<u>संसार का राज्य</u>
1. परमेश्वर शासक है	1. शैतान शासक है।
2. पवित्र आत्मा	2. दुष्ट आत्माएं
3. प्रभु यीशु की आराधना	3. मूर्तियों, दुष्ट आत्माओं और भौतिकतावाद की पूजा
4. मिशनरी इत्यादि के द्वारा प्रतिनिधित्व	4. बैगा, जादू-टोना इत्यादि करनेवालों के द्वारा प्रतिनिधित्व
5. सुसमाचार का प्रचार	5. झूठे सुसमाचार का प्रचार
6. पाप की क्षमा, स्वतंत्रता और आनंद	6 पाप, भय और दोष भावना का बंधन
7. प्रार्थना, प्रशसा और आराधना का चलन	7. जादू-टोना और भौतिकतावाद
8. चंगाई और दुष्टात्माओं से छुटकारा	8. अस्थायी चमत्कार परन्तु दीर्घकालीन बंधन
9. पश्चाताप और जीवन परिवर्तन	9. पराजय और विनाश
10. परमेश्वर के साथ स्वर्ग में अनन्त जीवन	10. शैतान के साथ नरक में अनन्त मृत्यु

विश्वासी लोग स्वर्ग के राज्य के हैं और उन्हें संसार के राज्य के विरूद्ध अवश्य लड़ना चाहिए।

यह शक्ति की लड़ाई निम्नलिखित विभिन्न स्तरों पर लड़ी जाती है :

1. *व्यक्तिगत स्तर* : शरीर और आत्मा के मध्य नैतिक स्तर और नीतिपरक व्यवहारों में व्यक्तिगत संघर्ष। प्रेरित पौलुस कहता है, "मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ। मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?" (रोमियो 7:24)। यह व्यक्तिगत स्तर पर आत्मिक संघर्ष है।
2. *संरचनात्मक स्तर* : शैतान के द्वारा उपयोग किए जा रहे समाज के दमनात्मक संरचनाओं के विरूद्ध युद्ध। हमें स्मरण रखना चाहिए कि मानवीय संरचनाएं स्वयं में नारकीय नहीं हैं। वे तटस्थ होती है और समाज के सही कार्य करने के लिए उनकी आवश्यकता है। परन्तु शैतान और दुष्ट शक्तियों के द्वारा उनका उपयोग किया जाता है। वे राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक प्रणालियों और संरचनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं - उदाहरण के लिए, रूढ़िवादी हिन्दू समाज के द्वारा बनायी गयी और कार्य में लायी गयी जाति व्यवस्था।
3. *क्षेत्रीय स्तर* : यह क्षेत्र विशेष के या समाजों के ऊपर राज्य कर रही आत्माओं और अन्धकार की शक्तियों के गढ़ों को दिखाता है (इफि. 6:10-18)। हम अंतरिक्ष के क्षेत्र में इस प्रकार के संघर्षों के बारे में दानि. 10 में पढ़ते हैं। यह आत्मिक संसार में संघर्ष है।
4. *मिशन-फील्ड स्तर* : यहां मिशनरी दुष्ट आत्माओं से ग्रस्त, जादू-टोना से परेशान, मूर्तिपूजा और अनैतिक जीवन में लगे लोगों से जूझता है। उसे जादगरों, टोन्हों, बैगाओं-ओझाओं और धार्मिक पुजारियों का सामना करना होता है। उसे इन्हें अंधकार के और शैतान के बंधनों से छुड़ाना और मसीह के पास लाना होता है।

आदिम धर्म में धार्मिक पदाधिकारी - धार्मिक अधिकारी वह व्यक्ति है जिसके पास एक सामान्य आदिवासी व्यक्ति से अधिक दक्षता, व्यक्तिगत गुण, और विद्या और परम्परा है। धार्मिक अधिकारियों के कुछ विभिन्न स्तर नीचे दिए जा रहे हैं :

1. आदिवासी पुरोहित, अनुष्ठान करनेवाले, ओझा, बली चढ़ाने वाले, चंगाई कराने वाले और भविष्य बताने वाले। ये पूरे समाज के द्वारा स्वीकार किए गए हैं, उन पर विश्वास किया जाता है और समाज के कल्याण के लिए जिम्मेदार माने जाते हैं। पारम्परिक और सम्मानित तरीकों से उनका चुनाव किया जाता है।
2. डायन और ओझा। आमतौर पर डायनों को कठिनाई उत्पन्न करनेवाली, लोककष्टक, भय उत्पन्न करनेवाली और खतरा माना जाता है। ओझा अनियमित और गुप्त अभ्यास के कारण ओझा बनते हैं जिन पर समाज का कोई नियंत्रण नहीं है।
3. अन्य कार्य करनेवाले जैसे कि दोनों प्रकार के जादूगर, वे जो सिर्फ अच्छा कार्य करने का दावा करते हैं (सफेद जादू) और वे जो काला जादू करते हैं। अनेक जादूगर दोनों तरह के जादू करते हैं, काला जादू और अच्छा जादू। यह पुनः आत्मिक प्रकृति के परे के क्षेत्र है जहां शैतान और उसकी दुष्ट सेनाएं लोगों को गुलाम बनातीं और एक दूसरे को नाश करने और समाज को बर्बाद करने का कार्य करती हैं। मिशनरी को इन दुष्ट शक्तियों का सामना करना ही होगा और परमेश्वर के अलौकिक सामर्थ्य के द्वारा लोगों को छुड़ाना होगा।

पाठ 41

भारत के ग्रामों में आत्मिक शक्तियों की सच्चाई

भारत के जनजातीय और ग्रामीण समाजों में आत्मिक अलौकिक शक्तियाँ सच्चाई हैं। ये आत्मिक शक्तियां निम्न प्रकार से प्रगट होती हैं :

1. ***मन (या माना)*** - यह शब्द दक्षिण पैसिफिक द्वीप से आया है जो व्यक्तित्व रखनेवाले प्राणियों से भिन्न आत्मिक शक्तियों को बताता है। यह आध्यात्मिक शक्ति अवैयक्तिक रहस्यमय जीवन बल है जो सब वस्तुओं में समा जाता है। लोग विश्वास करते हैं कि एक व्यक्ति की सफलता उसके पास उपलब्ध *मन* के अनुपात में होती है। मन को धार्मिक कर्मकाण्डों, आत्माओं की पूजा और लोहू का बलिदान चढ़ाने के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।
2. ***शकुन*** - इसे ऐसे अद्‌भुत घटना या दृश्य के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें अलौकिक पूर्वसूचना अन्तर्निहित होने का विश्वास किया जाता है। शकुन एक वर्तमान घटना नहीं है बल्कि आनेवाली घटना की चेतावनी है।

3. ***जादू*** – जादू एक विशेषज्ञ कला है जो नियमों और धर्मविधियों, मंत्रों और विशेष पूजा के द्वारा संचालित होते हैं जिसमें अलौकिक शक्तियों का (दुष्ट आत्माओं का भी) उपयोग करने के लिए बलिदान और लोहू का बलिदान चढ़ाया जाता है ताकि जादूगर की चाही गई बातें पूरी की जा सके।

4. ***जादू-टोना*** – यह कुछ लोगों के द्वारा रहस्यमय शक्तियों को आमंत्रित करना है जो उसके नियंत्रक के द्वारा विशेषकर दुष्टता और सामाज विरोधी कार्य के लिए उपयोग की जाती हैं (ऐसा व्यक्ति जादूगर या बैगा या टोन्हा कहलाता है)। टोन्हा एक व्यक्ति होता है आमतौर पर महिला (टोन्ही) जो आत्माओं की सहायता से दुष्टता का कार्य करती हैं। जादूगर, बैगा, टोन्हा या टोन्ही दूसरों के प्रति अहितकर कार्य के लिए जादू या काला जादू करते हैं।

5. ***बुरी नज़र*** – यह ऐसा विश्वास है कि कुछ लोगों की आंखें असामान्य अलौकिक शक्ति का बाण फेंकती हैं जो किसी लक्ष्य को बेधती है, हानि पहुंचाती या नष्ट भी कर देती हैं। बहुधा चुभती नज़र वाला या बदसूरत इंसान, या जो अपंग, बात-बात में क्रोध करनेवाला, या चिड़चिड़ा व्यक्ति हो उसे बहुधा काली नज़र या बुरी नज़र वाला कहा जाता हैं।

बुरी नजर से बचने का तरीका यह होता है कि उसे दूसरे ऐसे लक्ष्य या चिन्ह की ओर विचलित कर देना जो उसके प्रभाव को खींच लेगा। मंत्र और अनुष्ठान का भी प्रयोग किया जाता है ताकि विध्वंसकारी प्रभाव से बचा जा सके।

6. ***वस्तुपूजा या तावीज़*** – आमतौर पर तावीज़ को एक ऐसे वस्तु के रूप में माना जाता है जिसे किसी आत्मिक व्यक्ति के द्वारा दिए जाने या धारण कराये जाने के कारण उसमें अलौकिक शक्ति आ गई है। जादूगर कर्मकाण्ड में उस वस्तु पर कुछ दृश्य चिन्ह करने का अधिकार चलाते हुए दिखाता है कि उसमें अदृश्य शक्ति भर दी गई है।

7. ***दिवंगत पंथ*** – यह ऐसा विश्वास है कि मृत्यु के बाद मनुष्य जीवित रहते हैं और कुछ निश्चित शक्तियों के साथ मिलकर व्यक्तिगत अलौकिक अस्तित्व बन जाते हैं। आदिम लोग विश्वास करते हैं कि एक व्यक्ति का जीवन, आत्मा और प्राण मृत्यु के बाद भी बना रहता है। दिवंगत अर्थात् मरे हुये लोगों की पूजा पद्धतियों को दो भागों में बांटा जा सकता है : आत्मा की पूजा और पूर्वजों की पूजा।

   ए. **आत्मा पूजा।** यह "साधारण मृतक संबंधियों या रिश्तेदारों के देहरहित प्राणों पर धार्मिक निर्भरता है।" वे विश्वास करते हैं कि जब वे किसी मृतक को आदरपूर्वक मिट्टी देते हैं, तब वे उनसे आशीष का निवेदन कर सकते हैं परन्तु जब वे उन्हे अनुचित रीति से मिट्टी देते हैं, तब उन्हें क्षमायाचना करना होगा। यह विश्वास किया जाता है कि ये आत्माएं उनके पूर्वजों या देवताओं की तुलना में कमजोर होती है। उदाहरण के लिए, झारखण्ड राज्य के छोटा नागपूर इलाके के ऊँराव विश्वास करते हैं कि उनके निकट कुटुम्बियों की आत्माएं उनकी सहायता करती है और उन्हें चंगा करती हैं। चेटि्टयागढ़ क्षेत्र में रहने वाली जनजातियां अपने परिवार में रहने के लिए अपने मृत लोगों को बुलाते हैं और उन्हें मिट्टी के बर्तन में स्थान देते हैं जो उनका निवास स्थान बन जाता है। गुजरात के ढोढ़िया, डुब्ला और नायक विश्वास करते हैं कि उनके मृतकों के प्राण वापस नहीं बुलाए जा सकते क्योंकि वे देवताओं के साथ निवास करने के लिए चले जाते हैं। किन्तु वृहद कुटुम्बी समूह प्रत्येक चार या पांच वर्ष में एक बार एक साथ आते हैं ताकि मृतकों के लिए विलाप कर सकें और उन्हें स्मरण कर सकें।

   बी. पूर्वजों की पूजा। यह किसी भी मृतक की आत्मा के लिए प्रायश्चित करना या उसका धार्मिक आदर करना होता है। यह उन आदिवासी नायकों पर निर्भरता को दिखाता है जिन्हें अलौकिक रीति से शक्तिशाली माना जाता है। "पूर्वज" वह मृतक व्यक्ति होता है जो पहले पृथ्वी पर रह चुका है, जिसकी यादों और कपोल कल्पित जीवनगाथा पर एक धार्मिक पंथ रच दिया गया है। वह उस समूह के लिए पंथिक नायक बन जाता है जिसका वह कभी सदस्य था। उदाहरण के लिए गोंड़ आदिवासी अपने आदिवासी नायक लिंगो को ऐसा ही सम्मान देते हैं।

पाठ 42

उग्रवादी हिन्दू धर्म

अगले दो पाठ डॉ.एस.डी.पोनराज की पुस्तक 'अन्डरस्टैन्डिंग हिन्दुइसम' से लिए गए हैं।

हिन्दूत्व (जिसे हिन्दू राष्ट्रवाद भी कहा जाता है)

1. वीर सावरकर ने "हिन्दू धर्म" और हिन्दुत्व के मध्य भेद करते हुए हिन्दुत्व विचारधारा की नेंव डाली। जबकि हिन्दू धर्म को एक धर्म माना गया था, "हिन्दुत्व" में हिन्दू जीवन के धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषाई, सामाजिक और राजनैतिक

पक्ष भी सम्मिलित किए गए हैं।

2. हिन्दुत्व विचारधारा ने हिन्दू समाज और धर्म को मजबूती देते हुए विभिन्न हिन्दू समाजों और पंथों के मध्य एकता को बढ़ाने का कार्य किया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस), विश्व हिन्दू परिषद (वीएचपी), भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी), शिव सेना और संघ परिवार के अन्य सदस्य हिन्दुत्व की विचार धारा का बड़े जोर-शोर से समर्थन करते हैं।

हिन्दुत्व चार सिद्धान्तों पर आधारित है (डेविड बर्नेट के अनुसार 'द स्पिरिट ऑफ हिन्दुइसम' के पृष्ठ 55 के अनुसार) :

1. सिर्फ वेद ही सत्य हैं, बाकी अन्य सब ग्रंथ सत्य का अपभ्रंश हैं।
2. सिर्फ हिन्दू धर्म में संसार की समस्याओं का उत्तर है।
3. सिर्फ भारत सिद्ध धार्मिकता का देश है, अत: पृथ्वी पर वही एकमात्र श्रेष्ठ राष्ट्र है।
4. एक सच्चा भारतीय एक हिन्दू है और सिर्फ एक हिन्दू ही सच्चा भारतीय है।

हाल के वर्षों में असहिष्णुता बढ़ती गई है, "संघ परिवार" के कारण हिन्दूओं की ओर से।

1. यह विशेषकर भारत के ऐसे विभिन्न राज्यों में सत्य रहा है जहां बीजेपी का राज्य रहा है।
2. इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि मिशनरी और सुसमाचार प्रचारक हिन्दुत्व को समझें और स्वयं को अच्छे से तैयार करें ताकि समझ सकें कि विरोध और सताव कब आते हैं।

हिन्दुत्व विचारधारा के निहितार्थ : डॉ. सी.वी.मैथ्यू ने हिन्दुत्व विचारधारा पर बहुत रिसर्च किया है। वे अपनी पुस्तक "Hindutva: A Christian Response" के पृष्ठ 175-177 में ऐसी विचारधारा के प्रमुख निहितार्थों को सूचिबद्ध करते हैं:

1. हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति के पारस्परिक सम्बंध के द्वारा हिन्दुत्व की मांग नैसर्गिक रीति से सांस्कृतिक राजशाही में ले चलती है। "आओ हम पूरे विश्व को आर्य बना डालें।"
2. हिन्दुत्व एकलौते दर्शन को पोषित करता है : "एक राष्ट्र, एक लोग, एक धर्म, एक भाषा, एक संस्कृति, और एक नेतृत्व।" एकमात्र संस्कृति और एक देश का यह दर्शन अपने मूल में तानाशाही और एकदलीय है।
3. हिन्दुत्व धार्मिक राष्ट्रवाद के लिए आधार प्रदान करता है। धर्म का राजनीतिकरण किया गया है। साम्प्रदायिक संविधान के साथ धर्मतंत्रीय राष्ट्र की कल्पना की गई है।
4. अहिन्दू धार्मिक मिशन राष्ट्रद्रोही उपक्रमों की तरह देखे जाते हैं।
5. हिन्दुत्व की विचारधारा राष्ट्रवाद को देवतुल्य बना सकती है जो बल के उपयोग - *धर्मयुद्ध* (पवित्र युद्ध) - को भी उचित ठहराती है।
6. हिन्दुत्व अन्य धर्मों और जातिगत समाजों के साथ अर्थपूर्ण और उन्नत करनेवाला विचार विमर्श करने के लिए कोई आम मंच या सिद्धांत साझा नहीं करता है।

हिन्दुत्व को मसीही प्रतिउत्तर - डॉ.सी.वी.मैथ्यू (पृष्ठ 177-187)

1. प्रभु यीशु मसीह के विश्वसनीय भारतीय शिष्य बनिए।
2. देश के प्रामाणिक राष्ट्रभक्त नागरिक बनिए। हमें देशभक्ति में किसी से कम नहीं होना चाहिए।
3. स्थानीय और राष्ट्रीय मंचों पर हिन्दुत्व के आधार और निहितार्थों को चुनौती दीजिये।
4. मानवाधिकारों के प्रति चिंता कीजिये और "अल्प संख्यक अधिकारों" की मानसिकता से बचिए।
5. राजनैतिक निर्णय लेने वाली प्रक्रिया में - ग्राम पंचायतों से लेकर संसद तक - सहभागी बनिए। ऐसी प्रक्रिया में सक्रिय सहभागिता अनिवार्य है। राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी अति-महत्वपूर्ण है।
6. हमारे देश और लोगों की आवश्यकताओं के प्रति जो रूचि रखते हैं उन सब के मध्य वार्तालाप का आयोजन कीजिए। मेल मिलाप और न्याय के अभिकर्ता बनिए सिर्फ तब नहीं जब मसीही उसमें पार्टी हों। बल्कि इसकी अपेक्षा चर्च को "पूरे समाज की चेतना" के रूप में कार्य करना चाहिए।
7. इन विषयों में विश्वासियों को प्रशिक्षित कीजिए और उन्हें सहृदयता, संवेदना, विश्वास और साहस के साथ किसी भी आपदा का सामना करने के लिए तैयार कीजिए। नबियों का विश्वास और निर्भीकता और प्रेरितों का तरस और सेवक-स्वभाव चर्च के लिए अनिवार्य दिखाई पडता है।

पाठ 43

उग्रवादी हिन्दू धर्म को प्रतिउत्तर देना

भारत में हिन्दू उग्रवादियों से मसीही विश्वासियों के विरोध और सताव के कारण

(डॉ.एस.डी.पोनराज की 'स्ट्रेटिजीस फॉर चर्च प्लान्टिंग मूवमेंट' नामक पुस्तक के पृष्ठ 295 से लिया गया है।)

1. *मसीहियों और अमसीहियों के मध्य मूल्यों का संघर्ष होता है :* विश्वासी दूसरों के साथ परमेश्वर का प्रेम और उद्धार बांटने के लिए बाध्य हैं, यह बात सताव को उभारती है।
2. *सामाजिक-सांस्कृतिक मामले :* हिन्दू उग्रवादी पिछड़ों और अशिक्षितों को ऊपर उठते हुए और उच्च हिन्दू जातियों की बराबरी में आते हुए नहीं देखना चाहते हैं।
3. *आर्थिक विषय :* मसीही मिशनों के प्रयासों ने आदिवासियों और अन्य पिछड़ों को आर्थिक सीढ़ी चढ़ने के योग्य बनाया है। जब एक व्यक्ति भीतर से बदल जाता है, वह परिवर्तन का जीवन भी जीता है जो उसके सामाजिक-आर्थिक उन्नति में परिवर्तित होता है। इस बात ने ऊँची जाति के हिन्दू भूस्वामियों को क्रोधित कर दिया है जो दलितों और पिछड़ों का सदियों से शोषण करते आए हैं।
4. *राजनैतिक शक्ति का खेल :* आरएसएस का राजनैतिक विभाग, भारतीय जनता पार्टी, सत्ता में आने के लिए वोट पाने हेतु सदैव धर्म का उपयोग करता आया है।
5. *मसीही आसान शिकार हैं :* मुसलमानों और सिखों ने बारम्बार प्रतिकार करने की क्षमता का प्रदर्शन किया है। अब तक मसीहियों ने प्रतिकार के मार्ग का चुनाव नहीं किया है।
6. *हिन्दू उग्रवादियों को भाजपा समर्थित सरकारों का परोक्ष या अपरोक्ष समर्थन :* जब 1998 में भाजपा शासन में आई तब से मसीही मिशन कार्यों का विरोध अत्यधिक बढ़ गया। यह विशेषकर गुजरात और मध्य प्रदेश में अधिक हुआ है।
7. *पूरे देश में चर्च का विस्तार :* कुछ हिन्दू उग्रवादियों ने देखा है कि सम्पूर्ण भारत में चर्च का विस्तार हो रहा है। वे जानते हैं कि मसीही विश्वास आम हिन्दू को अत्यधिक आकर्षक लगता है। संघ परिवार मानता है कि मसीहीयत हिन्दू धर्म के लिए खतरा है।

इसलिए मसीहियों के विरूद्ध सताव को भारत के आम लोगों के द्वारा सुसमाचार के विरोध के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। अनेक अमसीही भारतीय अभी भी मसीही विश्वास की प्रशंसा करते हैं और यदि उन्हे अवसर दिया जाए तो वे उसे ग्रहण कर लेंगे।

हिन्दू उग्रवादियों को कैसा प्रतिउत्तर दें : ((डॉ.एस.डी.पोनराज की 'स्ट्रेटिजीस फॉर चर्च प्लान्टिंग मूवमेंट' नामक पुस्तक के पृष्ठ 295 से पुनः लिया गया है।)

1. *नए विश्वासियों को मसीही सताव सहने की शिक्षा दें :* मसीहियों को सताव का सामना करने के लिए तैयार करें। उनके लिए "अपना क्रूस उठाकर मसीह के पीछे हो लो" का बुलावा है (लूका 9:23)।
2. *नए विश्वासियों के साथ सताव सहने को तैयार रहें :* मसीही कार्यकर्त्ता होने के कारण हमें लोगों के साथ दुःख उठाना चाहिए। कुछ अवसरों पर सुरक्षा की दृष्टि से मिशनरी अगुवे या पासबान को सुरक्षित स्थान पर जाना पड़ता है किन्तु सताए गए लोगों के साथ सदा सम्पर्क, सहायता और संवाद बनाए रखकर उनका उत्साहवर्धन करते रहिए।
3. *जनता के धार्मिक और सांस्कृतिक भावनाओं के प्रति संवेदनशील रहें :* सुसमाचार का प्रचार करते समय हमें असंवेदनशील भाषा का उपयोग करके विरोध और सताव को आमंत्रित नहीं करना चाहिए। हमें बुद्धिमान और व्यवहारकुशल होने की आवश्यकता है। तौभी हम मसीह के अनोखेपन के साथ समझौता नहीं कर सकते।
4. *बुद्धिमान बनें और आमना-सामना से बचें :* जब कहीं सताव हो, हमें अत्यधिक सावधान होना और धीरे-धीरे आगे बढ़ना चाहिए। आइए हम नम्र बनें और बदला और न्याय के लिए परमेश्वर के लिए ठहरे रहें।
5. *देश के कानून के अनुसार चलें :* जब भी हमला होता है यथाशीघ्र निकटस्थ पुलिस थाने में प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ. आई.आर.) दर्ज करवाएं। पुलिस और शासकीय अधिकाररियों की जांच में उनका सहयोग करें। जब वे एफ.आई.आर. दर्ज करने से इन्कार करें तब हमें इसे दर्ज करने के लिए जोर देना चाहिए।
6. *जनता का सहयोग प्राप्त करें :* स्थानीय व्यापारियों, बैंक अधिकारियों, आपके बच्चों के स्कूल के शिक्षकों, राजनैतिक नेताओं और अन्य अमसीहियों के साथ विशेषकर मुसलमानों के साथ मजबूत सम्बंध बनाइए। सताव के समय ये लोग आपकी मित्रता के कारण आपका सहयोग करेंगे।

7. *नए विश्वासियों की सुरक्षा के लिए कष्ट सहने को तैयार रहिए :* नए विश्वासियों की सुरक्षा सर्वोपरि होना चाहिए। मसीही कार्यकर्त्ताओं को अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए। बदले में नए विश्वासी मसीही कार्यकत्ताओं को सुरक्षा प्रदान करेंगे। सताव के समय में उन्हें एक दूसरे की आवश्यकता होती है।
8. *प्रार्थना करें और प्रार्थना सहयोग बढ़ाएं :* हमें स्थानीय के साथ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्टीय स्तरों से भी प्रार्थना सहयोग की आवश्यकता है। हमें स्वयं को और विश्वासियों को इस विश्वास और प्रार्थना के साथ प्रभु के हाथों में सौंपना चाहिए कि "प्रभु हमारे लिए लड़ेगा।"

पाठ 44

हिन्दू धर्म में गुरू और संत

(अगले दो पाठ डॉ.एस.डी.पोनराज की पुस्तक 'अन्डरस्टैंडिंग हिन्दुइज़म' से लिए गए हैं।)

इंडिया टुडे के विशेष अंक में, अजीत पिल्ले के अनुसार नए युग के तीन तरह के "देव-पुरूष" या "संत" (god-man) हैं:

1. **तर्क से परे चमत्कार करने वाले मनुष्य :** आँखे खोलने वाली बाजीगरी और हाथों के करतब उनके खेल का नाम है। वे विरल वायु में वस्तुओं को प्रगट कर देते हैं और अलौकिक शक्ति होने का दावा करते हैं।
2. **वेद-व्याख्या करने में शब्दों के महारथी :** व्याख्यान देना उनकी विशेष योग्यता है जो कठिन पवित्र ग्रंथों को सरल शब्दों में समझाता और बिन्दुओं को जोड़ने का कार्य करता है।
3. **योग और लोक कल्याण गुरू :** संगीत, ध्यान और वैकल्पिक दवाइयों का ज्ञान बांटने के साथ-साथ शारीरिक योग्यता और मानसिक शांति के लिए चरणबद्ध अगुवाई प्रदान करने के द्वारा संसारिक सफलता पाने के लिए अनुचरों की सहायता करनेवाले जीवन-मार्गदर्शक।

भारत के कुछ गुरू और देव-पुरूष :

1. **महर्षि महेश योगी :** इन्होंने पश्चिम में भावातीत ध्यान को अत्यधिक लोकप्रिय बनाया। 'बीटल्स' संगीत समूह भी उनका दीवाना हो गया। 1969 के बुडरॉक उत्सव में उन्होंने अपनी विशेष उपस्थिति प्रदान की।
2. **ओशो रजनीश :** चूंकि उन्होंने अधिक खुले सेक्स का पक्ष लिया वे सेक्स गुरू भी कहलाए। 1990 में उनकी मृत्यु के पश्चात् वे प्रकाश में अधिक स्पष्ट दिखाई दिए।
3. **साधु वासवानी :** वे साधु वासवानी मिशन के प्रमुख हैं। वे अपने संत अंकल के पदचिन्हों पर चले। यह मिशन शालाओं, महाविद्यालयों और अस्पतालों का संचालन करता है।
4. **आनन्दमयी माँ :** वह बंगाल से आनेवाली आध्यात्मिक गुरू और शिक्षिका है। उन्हे संत का सम्मान दिया गया है।
5. **आसाराम बापू :** अभी नरेन्द्र मोदी के गुजरात में कठिन दौर से गुजर रहे हैं, उनके 350 आश्रम आध्यात्मिक प्रवचन का आयोजन करते हैं। वे वेब साईट पर भी मिलते हैं। (वर्तमान में वे बाल-यौन अपराध के आरोप में राजस्थान की एक जेल में बंद हैं और उन पर मुकदमा चल रहा है और गुजरात की एक अदालत ने उन्हे बलात्कार के अपराध में उम्र कैद की सजा दी है।)
6. **बाबा रामदेव :** इन्होंने टीवी कार्यक्रमों और कैम्पों के आयोजनों के द्वारा योग को बहुत लोकप्रिय बनाया है। वे भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना हजारे के आंदोलन का भाग थे। वे आर.एस.एस. के करीब हैं।
7. **कल्की भगवान :** उनका आत्मिक आंदोलन कल्की धर्म कहलाता है। लोगों को प्रबुद्ध करना और "स्वर्ण-युग" के आगमन की तैयारी करना इनका मिशन है।
8. **चन्द्रा स्वामी :** वे भूतपूर्व स्वर्गवासी प्रधान मंत्री पी.वी.नरसिम्हाराव के करीब थे। विवादास्पस्द और जुड़े हुए, उनका नाम धोखाधड़ी के अनेक मामलों में आ चुका है।
9. **गणपति सच्चिदानंद स्वामी जी :** वे मैसूर में अवधूत पंथ पीठ का नेतृत्व करते हैं। उन्होंने "रागरागिनी विद्या" को

लोकप्रिय बनाया है।

अधिकांश गुरू और देव-पुरूष "हिन्दू-पक्ष" के हैं इसलिए हमें उन्हे हिन्दू गुरू और देव-पुरूष के रूप में देखना होगा।

1. देव-पुरूष सिर्फ जादू का उपयोग नहीं करते किन्तु हिन्दू अधिकारों का खतरनाक रीति से पक्ष लेते हैं। उनमें से अधिकांश ने हिन्दुत्व विचार-धारा और कार्यक्रमों के पक्ष में बोला है।
2. अयोध्या विवाद के समय के समान निर्णायक समयों में लगभग सब गुरूओं और देव-पुरूषों ने हिन्दुत्व के और विवादग्रस्त स्थान में हिन्दू मंदिर बनाने के पक्ष में बोला है।

कौन गुरू और देव-पुरूष बन सकता है?

लेखक किम नॉट लिखते हैं, ''गुरू का अधिकार जाति व्यवस्था, प्रशिक्षण, या अच्छे गुणों की अपेक्षा चमत्कार करने की शक्ति में है। कुछ गुरूओं को औपचारिक शिक्षा या वैदिक शिक्षा भी नहीं मिली है। कुछ अशिक्षित हैं। परन्तु इन सब के पास उनके अपने आत्मिक अनुभव के साथ इसे दूसरों के लाभ के लिए उपयोग में लाने की बड़ी योग्यता है" *("हिन्दूइसम-ए वेरी शॉर्ट इन्ट्रोडक्शन"* [ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000] पृष्ठ 23 से लिया गया है)।

रहस्यमय आत्मिक अनुभव

1. लगभग सभी गुरूओं का रहस्यमय अनुभव रहा है और वे इसे अपने अनुयाइयों के साथ बांटने की योग्यता रखते हैं। सभी अनुभव आत्मिक नहीं हैं, कुछ शारीरिक कल्याण के हैं और कुछ अन्य उनके स्वप्नों और दर्शनों पर आधारित हैं।
2. इसी के समान, मसीही सुसमाचार प्रचारकों को भी पवित्र आत्मा के साथ उनके सम्बंधों और अनुभवों को बांटना चाहिए। इससे बढ़कर यीशु का अपने पिता के साथ इतना रहस्यमय सम्बंध था जब उसका बपतिस्मा हुआ था। और प्रेरित पौलुस का भी दमिश्क के मार्ग में ऐसा ही अद्‌भुत अनुभव रहा है।

पाठ 45

गुरूओं और संतों के चेलों को सुसमाचार प्रस्तुत करना

1. लोग हिन्दू मूर्तिपूजा से संतुष्ट नहीं हैं; वे एक व्यक्तिगत परमेश्वर से व्यक्तिगत सम्बंध चाहते हैं। गुरू और देव-पुरूष या संत इसे पूरा करने का प्रयास करते हैं। **प्रतिउत्तर :** *यीशु मसीह को सत् गुरू और महागुरू (व्तमंज ज्मंबीमत), सब गुरूओं और देव-पुरूषों में अंतिम के रूप में प्रस्तुत कीजिए जो इस संसार में आए हैं। यीशु मसीह को ऐसे प्रभु के रूप में प्रगट कीजिए जो अपने भक्तों को व्यक्तिगत और न समाप्त होने वाला सम्बंध देता है।*
2. लोग हिन्दू दर्शनों से संतुष्ट नहीं हैं, गुरूओं और देव-पुरूषों के द्वारा संघ परिवार की हिन्दुत्व विचारधाारा को प्रस्तुत किए जानेवाली बातों को तो छोड़ ही दें। वे कुछ देवी-देवताओं के साथ हुए अपने रहस्यमय अनुभव के बारे बताते हैं। **प्रतिउत्तर :** *यीशु मसीह को "व्यक्तिगत परमेश्वर" के रूप में प्रस्तुत कीजिए जो उनसे प्रेम करता है और उन्हें आशीष देना चाहता है। ये भक्त मसीह में सर्वसामर्थी शाश्वत परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता के साथ भी व्यक्तिगत आत्मिक सम्बंध बना सकते हैं।*
3. लोग हिन्दू परम्पराओं और त्योहारों से संतुष्ट नहीं हैं। वे शांत और आनन्द से भरा जीवन चाहते हैं और अपना कल्याण खोज रहे हैं। गुरूओं और देव-पुरूषों में से कुछ इस विषय का उपाय कर रहे हैं और समाधान देने का प्रयास कर रहे हैं। **प्रतिउत्तर :** *यीशु को इस तरह प्रस्तुत कीजिए कि वह शांति और आनन्द देता है। वह अपनी शांति देता है जिसे संसार नहीं दे सकता और न ही चुरा सकता है। यीशु को हमारा कल्याण करनेवाले - अच्छा स्वास्थ्य, आनंदित परिवार प्रदान करने वाले, इत्यादि के रूप में प्रस्तुत कीजिए।*
4. लोग असली चमत्कार देखना चाहते हैं। अनेक गुरू और देव-पुरूष या तो नकली चमत्कार करते या लोगों को करतब दिखाकर या सर्कस की तरह कलाबाजियां दिखाते हैं। वे लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिए चमत्कार करते हैं कि उनके पास कुछ अद्भुत करने की शक्ति है; उनके अनेक भक्त मूर्ख बन जाते हैं। **प्रतिउत्तर :** *यीशु ख्रीष्ट को "आश्चर्यकर्म करनेवाले सत्गुरू" के रूप में प्रस्तुत कीजिए। यीशु ने जो आश्चर्यकर्म इस पृथ्वी पर रहते हुए किए उन्हें बताइए और उन्हें नाटक के रूप में प्रस्तुत कीजिए। और विश्वासियों के जीवनों में हुए आश्चर्यकर्मों की गवाहियां भी*

बताइए। ऐसी व्यक्तिगत गवाही आम हिन्दू को यीशु के पास लाने और उस पर भरोसा करने के लिए विश्वास दिलाने हेतु सामर्थी होगी।

5. लोगों को कोई व्यक्ति चाहिए जो उनकी समस्याओं और आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना कर सके और परमेश्वर की आशीष का भरोसा दिला सके। **प्रतिउत्तर :** *यीशु मसीह को "सत्गुरू" के रूप में प्रस्तुत करते समय पासबान या सुसमाचार प्रचारक को स्वयं को "गुरू" के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए जो "सद्गुरू" का प्रतिनिधित्व करता है। प्रत्येक सुसमाचार प्रचारक और पासबान को (पुरूषों और स्त्रियों दोनों को) अपने व्यक्तिगत जीवन और सेवा में "गुरू" के रूप में कार्य करना चाहिए। उनकी वेशभूषा और जीवन शैली एक "गुरू" की तरह होना चाहिए।*

6. लोग हमेशा नए और अनोखे अनुभवों के प्रति जिज्ञासु होते हैं। इसीलिए वे विभिन्न गुरूओं और संतों के पीछे भागते रहते हैं। इन गुरूओं में से प्रत्येक का अपना समय होता है किन्तु उनकी लोकप्रियता थोड़े समय की होती है। **प्रतिउत्तर :** *यीशु मसीह को इस तरह प्रस्तुत कीजिए कि वह नए अनुभव और नई आशीषें देता है। बाइबल में गहरे आत्मिक अनुभवों की शिक्षा है और सुसमाचार प्रचारक को सदैव नई शिक्षा और नए अनुभवों के साथ जाना चाहिए।*

7. लोग यह जानना चाहते हैं कि यीशु मसीह वह क्या दे सकता है जिसे हिन्दू-पक्षधर गुरू और देव-पुरूष या संत नहीं दे सकते। इसलिए मसीही सुसमाचार प्रचारकों को मसीही विश्वास की अद्वितीय बातों और आत्मिक लाभों को बताना चाहिए जिसे हिन्दू गुरू और संत नहीं दे सकते हैं।

   ए. यीशु मसीह को क्रूस पर उसकी पीड़ा और मृत्यु के द्वारा पापों की क्षमा देनेवाले के रूप में प्रस्तुत कीजिए। यह बेजोड़ है जिसे कोई भी हिन्दू गुरू नहीं दे सकता। यीशु मसीह का जीवन, क्रूस पर उसकी पीड़ा और मृत्यु और उसके पुनरूत्थान की प्रस्तुति इन गुरूओं के भक्तों को मसीही विश्वास की ओर आकर्षित करेगी।

   बी. सुसमाचार में दिए गए नए जीवन के ईनाम को प्रस्तुत कीजिए। पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म पाने का अनुभव इन भक्तों के सुनने के लिए नया संदेश होगा। मसीही सुसमाचार प्रचारक इसे अपने अनुभव के साथ बांट सकता है।

   सी. भावी अनन्त जीवन और स्वर्ग की आशा को प्रस्तुत कीजिए। कोई भी गुरू या देव-पुरूष या संत अपने भक्तों को कैसे मोक्ष पाना है या स्वर्ग जाना है नहीं बता सकता है। वे स्वयं स्वर्ग का मार्ग नहीं जानते। परन्तु यीशु ने कहा, "मार्ग मैं हूँ ...।" वही एकमात्र मार्ग है इस बात को बारम्बार बताया जाना चाहिए और भक्त इस सुसमाचार की ओर आकर्षित होंगे।

पाठ 46

प्रचलित हिन्दू धर्म में (अंधकार की) शक्तियों से मुठभेड़

अगले तीन पाठ डॉ. एस. डी. पोनराज की पुस्तक 'स्ट्रैटिजीस फॉर चर्च प्लान्टिंग मूवमेंट' से लिए गए हैं।

आत्मिक युद्ध : शैतान ने, इतिहास में लाखों-करोड़ों को अपना गुलाम बनाया है, और आज भी करोड़ों के ऊपर राज करता है। जब सुसमाचार प्रचारक स्वतंत्रता के इस शुभ संदेश के साथ इन बंधुओं के पास जाता है, तो मात्र सुसमाचार के पास उन्हें शैतानी शक्तियों से मुक्त कराने और उनके व्यक्तिगत जीवनों के साथ-साथ सामाजिक जीवन में सब शैतानी शक्तियों पर जय देने की सामर्थ्य है। जब सुसमाचार की सामर्थ्य लोगों के जीवनों में कार्य करती है, वे उस नया जीवन, शान्ति और आनन्द का वह अनुभव करते हैं जो पवित्र आत्मा से आता है।

सुसमाचार सुनाने के लिए आश्चर्यकर्म शक्तिशाली साधन हैं।

जैसा हम प्रेरितों के जीवनों में, और आरंभिक कलीसिया में देखते हैं, चिन्ह और आश्चर्यकर्म पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के जीते-जागते प्रमाण हैं। चिन्ह और आश्चर्यकर्मों में सिर्फ चंगाइयां ही नहीं किन्तु अशुद्ध आत्माओं को निकालना भी था (प्रेरित 5:12-16)। हम देखते हैं कि चिन्ह और आश्चर्यकर्म दुष्ट की शक्तियों के विरूद्ध परमेश्वर की सामर्थ्य के प्रगटीकरण थे। परमेश्वर ने इस प्रकार चिन्हों और आश्चर्यकर्मों के द्वारा सुसमाचार के प्रचार को दृढ़ किया (इब्रा. 2:4)।

मिशनरी को कार्यक्षेत्र में चमत्कारों को ही अपना लक्ष्य बनाने की अपेक्षा परमेश्वर की सामर्थ्य के प्रगटीकरण के प्रति सावधान रहना चाहिए ताकि लोग सुसमाचार सुनें और मसीह पर विश्वास करें और उसे ग्रहण करें।

मिशनरी के लिए कुछ दिशा-निर्देश, जब वह कार्य क्षेत्र में आत्माओं की पूजा, पूर्वज पूजा, जादू, तंत्र-मंत्र, इत्यादि का सामना करता है:

1. *मिशनरी को विश्वास करना चाहिए कि आत्माओं की दुनिया और दुष्ट की शक्तियां वास्तविक हैं* - मिशनरी को कार्य क्षेत्र में इन शक्तियों के अस्तित्व को स्वीकार करना और उनके साथ व्यवहार के लिए तैयार होना चाहिए। उसे यह समझना चाहिए कि ये शक्तियां परमेश्वर की ओर से नहीं हैं किन्तु शैतान और दुष्ट आत्माओं के द्वारा संचालित हैं जो स्वयं को दुष्ट आत्माओं, गौण भगवानों, देवताओं और देवियों के द्वारा प्रगट करते हैं।

   मिशनरी को सिर्फ शैतानी शक्तियों की सत्यता पर ही विश्वास नहीं करना चाहिए परन्तु दुष्ट आत्माओं के बारे बाइबल की शिक्षा को भी समझना चाहिए। उसे अपने मन में बाइबल की इस सच्चाई को सदा बनाए रखना चाहिए कि परमेश्वर ने शैतान को पराजित किया है। पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में विश्वासियों के पास दुष्ट आत्माओं पर जय पाने की सामर्थ्य है। दुष्टात्माओं का ज्ञान, फुरसत में जिज्ञासा के कारण सीखने का विषय नहीं है, किन्तु लोगों के दैनिक जीवनों से सीधे जुड़ा हुआ एक महत्वपूर्ण विषय है। इसलिए इस विषय की अज्ञानता कार्य क्षेत्र में मिशनरी की सेवा को सीधे-सीधे प्रभावित करेगी।

2. *आत्मा की दुनिया की ताकतें मानवीय ताकतों से कहीं अधिक शक्तिशाली हैं* - एक मिशन संस्थापक आर. स्टैनली धर्मशास्त्र से दुष्ट आत्माओं और उनके क्रियाकलापों के बारे निम्न तथ्य देते हैं :

   ए. दुष्ट आत्माओं में मनुष्यों से अधिक ज्ञान और बुद्धिमानी होती है। लूसिफर "बुद्धि से भरपूर" था (यहेज. 28:12)। दुष्ट आत्माओं को मनुष्यों के हजारों अनुभव हैं। वे मानवजाति की कमजोर नसों को जानते हैं। चालाकी या धूर्तता शैतान के चरित्र का प्राथमिक गुण है (उत्प. 3:1)।

   बी. दुष्ट आत्माओं में असाधारण बल होता है (मर.5:1-4; प्रेरित 19:14-16)।

   सी. दुष्ट आत्माएं अपने विनाशकारी क्रियाकलापों के लिए जाने जाते हैं। दुष्ट आत्माएं गूंगापन (मत्ती 9:32,33), अंधापन (मत्ती 12:22), विकलांगता (लूका 13:11-13,16), ऐंठन लाने वाली मिर्गी (मत्ती 17:15-18); वे मानसिक असंतुलन (लूका 8:27) पैदा कर सकते और आत्म हत्या की प्रवृत्ति भी डाल सकते हैं (मर.9:22)।

   डी. दुष्ट आत्माओं में चमत्कार करने की भी शक्ति होती है (प्रेरितों 16:16; 2 थिस्स. 2:9)।

3. *परमेश्वर की सामर्थ्य सब दुष्ट आत्माओं से भी बढ़कर है* - एक महत्वपूर्ण सच्चाई जिसे मिशनरी को पूरे समय स्मरण रखना चाहिए वह यह कि परमेश्वर की सामर्थ्य जो उसमें कार्य कर रही है वह संसार में कार्यरत समस्त दुष्ट आत्माओं की शक्तियों से भी बढ़कर है। बाइबल स्पष्टता से सिखाती है कि "...जो तुम में है वह उस से जो संसार में है बड़ा है" (1 यूहन्ना 4:4)। इसी सामर्थ्य के साथ वह हमें प्रचार करने, चंगा करने, दुष्ट आत्माओं को निकालने और लोगों को शैतान के राज्य से छुड़ाकर उन्हें परमेश्वर के राज्य में लाने के लिए भेज रहा है। "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम ... और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे" (प्रेरितों 1:8)। हम यह भी पढ़ते हैं, "क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है; और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है" (1 यूह.5:4)।

पाठ 47

प्रचलित हिन्दू धर्म में शक्तियों से मुठभेड़ - क्रमशः

4. *सुसमाचार प्रचार में शक्तियों से मुठभेड़ जुड़ी हुई है* - मिशन सेवा क्षेत्र के लोग आत्मिक युद्ध में सम्मिलित हैं। सुसमाचार प्रचार के विरूद्ध सबसे ताकतवार विरोध अलौकिक शक्तियों से मिलता है जिसका प्रतिनिधित्व जादूगर और तांत्रिक जैसे लोग करते हैं।

5. *आत्मिक शक्तियों से मुठभेड़ करने और उन्हे पराजित करने के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य से भरा जाना आवश्यक है* - मिशनरी सिर्फ दुष्ट आत्माओं की वास्तविकताओं पर ही विश्वास नहीं करता किन्तु दुष्ट आत्माओं का सामना करने

और उन्हें पराजित करने के लिए पवित्र आत्मा की आवश्यकता को भी महसूस करता है (1 यूहन्ना 4:4)। मिशनरी को पवित्र आत्मा की भरपूरी का प्रतिदिन अनुभव होना चाहिए (इफि. 4:18)। उसे शुद्ध और पवित्र जीवन जीना चाहिए ताकि वह अपनी सेवा में परमेश्वर की सामर्थ्य का सतत अनुभव पाता रहे।

ए. रोगियों को चंगा करने, दुष्ट आत्माओं को निकालने और लोगों को बुरे प्रभावों से बाहर निकालने के लिए मिशनरी को पवित्र आत्मा पर निर्भर होना चाहिए। चूंकि प्राचीन धार्मिक लोग विश्वास करते हैं कि चमत्कार उनके देवों से आते हैं, आश्चर्यकर्म करने के लिए पवित्र आत्मा की अलौकिक शक्ति का उपयोग करना उन्हें सुसमाचार सुनाने का सर्वथा प्रभावशाली तरीका होता है।

बी. लोकप्रिय हिन्दुओं, मुसलमानों और आदिवासियों के मध्य मुख्य मुद्दा शक्ति ही है। जब तक मिशनरी उनकी शक्ति से "अधिक बड़ी शक्ति" नहीं दिखा सकता, वे सुसमाचार के संदेश को नहीं स्वीकार करेंगे।

6. *रणनीतिक मध्यस्थता मिशनरी को विरोध पर जय पाने के योग्य बनाएगी* – सुसमाचार अनेक कारणों से विरोध का सामना करता है जिनमें सामाजिक-आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक कारक होते हैं। अनेक परिस्थितियों में लोगों पर दुष्ट आत्माओं का कब्जा एक प्रमुख कारण होता है। शैतान कभी कभी लोगों को अपने नियंत्रण में रखने के लिए ताने-बाने और प्रणालियों का उपयोग करता है। प्रेरित पौलुस ने कुलुस्सियों की कलीसिया से निवेदन किया, "प्रार्थना में लगे रहो, और धन्यवाद के साथ हमारे लिए भी प्रार्थना करते रहो कि परमेश्वर हमारे लिए वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे, कि हम मसीह के उस भेद का वर्णन कर सकें जिसके कारण मैं कैद में हूँ" (कुलु. 4:2-4)।

7. *शैतानी ताकतों पर आत्मिक अधिकार का उपयोग सुसमाचार प्रचार और चर्च स्थापना के संदर्भ में किया जाना चाहिए* – सुसमाचार प्रचार और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य का उपयोग के मध्य निकट का सम्बंध है। यह आरंभिक प्रेरितों की सेवा में स्पष्ट था जैसा हम फिलिप के विषय जानते हैं (प्रेरितों 8:5-7)। बारह शिष्यों को कार्यादेश देते हुए यीशु ने कहा, "सुसमाचार प्रचार करो, ... रोगियों को चंगा करो ... दुष्ट आत्माओं को निकालो" (मत्ती 10:1-8)। सुसमाचार प्रचार का अर्थ राज्य के संदेश की घोषणा करना है। जहां कहीं दुष्टात्माएं निकाली जाती हैं वहां राज्य की सामर्थ्य का देखने योग्य प्रगटीकरण होता है (लूका 11:20)।

8. *मिशनरियों को समाज में अंधकार के आत्मिक गढ़ों को पहचानना और उनसे छुटकारे के लिए प्रार्थना करना चाहिए* – पूजा स्थल, मूर्तियां और पूजनीय वस्तुएं होती हैं जो समाज में अंधकार की शक्तियों के मजबूत गढ़ हो सकते हैं। व्यक्तियों पर दुष्ट आत्माओं के गढ़ देखे जा सकते हैं जैसे गंडे तावीज का बंधा होना। पूर्ण छुटकारा पाने के लिए इन्हें काट कर अलग किया जाना चाहिए, पूर्वजों की टोकरियों को अलग किया जाना चाहिए और गांवों को मूर्तियों और पूजनीय वस्तुओं से मुक्त किया जाना चाहिए। कुछ गांवों में आदिवासियों ने अपने पूजा स्थलों को हटा या गिरा दिया है, जैसा हाल ही में दक्षिण बिहार के संथाल गांवों में से एक में हुआ है। कभी कभी स्थानीय लोग ही अपने पुराने पूजा स्थलों को गिरा देते हैं।

9. *मिशनरी, कार्य क्षेत्र में युद्ध भूमि में रहनेवाले की जीवन शैली के लिए बुलाए गए हैं* – मिशन कार्य क्षेत्र में सुसमाचार विहीन लोगों तक पहुंचने और चर्च की स्थापना करने के कार्य में सिर्फ सुसमाचार सुनाने और दुष्ट आत्माओं को निकालने ही से आत्मिक युद्ध नहीं लड़ा जा सकता है। यह युद्धकाल की जीवन शैली जिसमें पवित्र जीवन यापन, निरंतर प्रार्थनामय जीवन, नियमित उपवास, और परमेश्वर की उपस्थिति में जीवन जीने की चेतना की मांग करता है। सिर्फ मिशनरी ही नहीं किन्तु उसकी पत्नी और संतानों को महसूस करना चाहिए कि वे भी युद्ध में प्रथम पंक्ति में हैं और युद्धकाल में जीते हैं क्योंकि शैतान बहुधा सिर्फ मिशनरी पर ही हमला नहीं करता बल्कि उसकी पत्नी और बच्चों पर भी करता है। मिशनरी को अपनी गृह कलीसिया से – उसके मित्र, प्रार्थना सहयोगी, और अन्य सहयोगी से भी – प्रार्थना सहयोग पाने का उपाय करना चाहिए। उसे उन्हें यह महसूस कराना चाहिए कि वे भी कार्य क्षेत्र में अपने मिशनरी के साथ आत्मिक युद्ध में सम्मिलित हैं।

पाठ 48

प्रचलित हिन्दू धर्म में शक्तियों से मुठभेड़ - समापन

लुसान वाचा में आत्मिक युद्ध के विषय निम्न कथन मिलता है : *"हम विश्वास करते हैं कि हम दुष्ट की शक्तियों और प्रधानों के साथ निरंतर युद्धरत हैं जो कलीसिया को उखाड़ फेंकने और सुसमाचार प्रचार के कार्य में निराशा लाने का प्रयास कर रहे हैं। हम स्वयं को परमेश्वर के हथियारों से सुसज्जित करने और इस युद्ध को सत्य और प्रार्थना के आत्मिक हथियारों के साथ लड़ने की आवश्यकता को समझते हैं।"*

सावधानी के वचन : अतिरेक से बचें

1. शक्ति मुठभेड़ और या आत्मिक युद्ध और उनसे सम्बंधित विषयों पर - जैसे कि, दुष्टात्मा ग्रसित होना, दुष्ट आत्माओं को निकालना, विश्वासियों या मिशनरियों पर दुष्ट आत्माओं का हमला इत्यादि पर - अत्यधिक जोर देने से बचिए। दूसरे शब्दों में हर घटना के पीछे दुष्ट आत्मा का होना न देखें।
2. आध्यात्मिक मानचित्रण, गढ़ों को बांधना, प्रार्थना करते हुए चलना, और स्थानीय गवाहों को खतरे में डालकर पवित्र तैरना, सक्रिय सुसमाचार प्रचार, और सामाजिक सरोकार जैसे विषयों पर आवश्यकता से अधिक जोर देने से बचिए। मिशनरी की बुलाहट और वरदानों के अनुसार उसकी सहभागिकता होनी चाहिए। तौभी मिशन कार्य क्षेत्र में उचित संतुलन बनाकर रखना चाहिए।
3. "परमेश्वर में विश्वास" और "बाइबल की सच्चाई" से "शक्ति" में होने वाले जोर पर बदलाव की प्रवृति से बचिए। एक व्यक्ति की बाइबल के सत्य की समझ और परमेश्वर में विश्वास से असली आत्मिक शक्ति आती है जो ऐसी सामर्थ्य का स्रोत है।
4. पुन: "सत्य से मुठभेड़" और "शक्ति से मुठभेड" के मध्य उचित संतुलन बनाया जाना चाहिए।
5. आत्मा के संसार से मेलजोल करने से बचिए। भूत-प्रेत निकालना आपके मिशन का केन्द्रीय कार्य नहीं बनना चाहिए। इस तरह अधिक जोर देना शैतान को महत्वपूर्ण स्थान और यीशु मसीह को द्वितीय स्थान दे सकता है। इस प्रकार की गलत प्राथमिकता असली सुसमाचार प्रचार को बाधित कर सकती है। शैतान को आपका एजेंडा बनाने की अनुमति मत दीजिए।
6. आत्मा के संसार से व्यवहार करते समय शैतान के सभी धोखों से बचिए। प्रभु से आत्माओं की परख का वरदान मांगिए (1 कुरिंथि. 12:10; 1 यूहन्ना 4:1)। कभी कभी दुष्ट आत्मा भी प्रकाश के संदेशवाहक का स्वांग धर सकता है, और पवित्र आत्मा के वरदानों की नकल कर सकता है।
7. आत्माओं को बुलाकर बातचीत करने जैसे अन्य अमसीही कार्यों से बचिए। ऐसे कार्य बाइबल के विपरीत और पापपूर्ण हैं (यशा. 8:19; 19:3)।
8. लोगों में से दुष्ट आत्माओं को निकालने के समय आत्माओं से मित्रवत् बातचीत से बचिए। उन्हें अपनी कहानी बताने की अनुमति न दें। यीशु की उन्हें डांटने की विधि का अनुसरण कीजिए और उन्हें यीशु के नाम में बाहर आने का आदेश दीजिए।
9. स्वयं मसीही विश्वास को जादू का नया रूप देने से बचिए और विशेषकर प्रार्थना को ऐसा सूत्र बनाने से या उसे दोहराने से बचिए जो परमेश्वर को हमारी ईच्छानुसार कार्य करने कहता हो। प्रार्थनाओं के अतिशीघ्र परिणामों की आशा करने से बचिए। कभी कभी हम लड़ाई हार भी सकते हैं परन्तु परमेश्वर की सहायता से हम युद्ध अवश्य जीतेंगे।

सारांश - आत्मिक शक्ति से मुठभेड़ का कार्य और स्वस्थ और संतुलित समझ निम्नलिखित अनिवार्य कारकों पर आधारित है:

1. यह हमारे अनुभवों पर नहीं किन्तु बाइबल पर आधारित है। प्रत्येक अनुभव को बाइबलीय शिक्षा के अनुरूप जांचा जाना चाहिए।
2. यह शैतान और उसके दुष्ट शक्तियों के द्वारा प्रस्तुत विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक और धार्मिक प्रणालियों और ढ़ांचों पर आधारित है।
3. यह पवित्र और समर्पित जीवन शैली पर आधारित है।
4. यह सक्रिय सुसमाचार प्रचार और सहानुभूतिशील सेवाओं पर आधारित है, सिर्फ आत्मिक कार्य करने पर नहीं।

समापन नोट्स

1 विन्सलेड, *डिमॉलिशिंग स्ट्रांगहोल्ड!*, पृष्ठ 5

2. आर; स्टैनली, *ब्लेसिंग,* पृष्ठ 3

पाठ 49

शक्ति से मुठभेड़ के लिए बाइबलीय आधार

यह पाठ डॉ.एस.डी.पोनराज की पुस्तक *'एन इन्ट्रोडक्शन टू मिशनरी एन्थ्रोपोलॉजी'* से उद्धरित किया गया है।

परिचय : बाइबल, विशेषकर नया नियम, दो राज्यों की सच्चाई बयान करता है : परमेश्वर का राज्य और शैतान का राज्य। इन दो राज्यों के मध्य का संघर्ष, विशेषकर प्रभु यीशु मसीह के जीवन और शिक्षाओं में पूरे नया नियम में दिखाई देता है।

यीशु मसीह और शक्ति से मुठभेड़ :

1. यीशु और शैतान यीशु की सेवकाई के आरंभ में ही आपस में भिड़ गए (मत्ती 4:1-11)। ये परीक्षाएं शारीरिक (शैतान ने यीशु को भोजन प्रस्तुत किया), भौतिक (शैतान ने यीशु को दुनिया के राज्यों पर अधिकार का प्रस्ताव दिया) और आत्मिक (शैतान ने यीशु को उसे प्रणाम करने कहा) (लूका 4:4,8,12) थीं।
2. अपनी साढ़े तीन वर्ष की सेवा के दरमम्यान् यीशु ने अंधकार की ताकतों का विभिन्न रूपों में लगातार सामना किया। उपदेश देने के अतिरिक्त यीशु ने रोगियों को चंगा किया और पीड़ित लोगों में से दुष्टात्माओं को भी निकाला (मत्ती 4:23; 10:7,8)।
3. प्रचार करने, चंगाई करने और दुष्ट आत्माओं को निकालने की तीन प्रकार की सेवा के द्वारा शैतानी ताकतों का सामना करना यीशु की विधि थी। तीनों सहदर्शी सुसमाचार सत्रह बार मसीह की सेवा से सम्बंधित दुष्ट आत्माओं का उल्लेख करते हैं और नौ मामलों में यह विशेष उल्लेख है कि यीशु ने दुष्टात्माओं को निकाला।
4. मात्र यीशु ने दुष्ट आत्माओं को नहीं निकाला किन्तु अपने शिष्यों को भी दुष्ट आत्माओं को निकालने का अधिकार दिया (मत्ती 10:1)।

आरंभिक कलीसिया और शक्ति से आमना-सामना :

1. चिन्ह और चमत्कार शैतान की शक्ति पर पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के स्पष्ट प्रमाण है, जैसा हम प्रेरितों और आरंभिक कलीसिया के जीवन में देखते हैं। चिन्ह और चमत्कार में मात्र रोगों की चंगाई ही नहीं थे किन्तु दुष्ट आत्माओं को निकालना भी था (प्रेरितों 5:12-16)।
2. ये चिन्ह सुसमाचार प्रचार के साथ चलते थे। उदाहरण के लिए, मंदिर के फाटक पर लंगड़े भिखारी की चंगाई के पश्चात् पतरस के द्वारा सुसमाचार का प्रचार किया जाना (प्रेरितों 3)।
3. प्रभु ने चिन्हों और चमत्कारों के द्वारा प्रेरितों के संदेश को दृढ़ किया (प्रेरितों 14:3)।

पौलुस प्रेरित और शक्ति से आमना-सामना

1. प्रेरितों 19 में पौलुस इफिसुस के मूर्तिपूजकों से बातचीत कर रहा था। यह बातचीत न ही दर्शनशास्त्रीय थी और न ही परम्पराओं पर आधारित धार्मिक वार्तालाप था (जैसा प्रेरितों 17 में एथेन्स में और प्रेरित 18 में कुरिंथुस में हुआ था) बल्कि अंधकार की शक्तियों से मुठभेड़ था। सुसमाचार चिन्हों और चमत्कारों के साथ प्रसारित किया गया था जिसमें दुष्ट आत्माओं से छुटकारा और चंगाई सम्मिलित थे (प्रेरित 19:11,12)।
2. इफिसुस में आत्मिक शक्ति से आमना-सामना होने के पश्चात् पौलुस चर्च को अपने पत्र में लिखता है कि एक विश्वासी को कैसे स्वयं को अंधकार की शक्तियों से लड़ने के लिए तैयार करना चाहिए : *"इसलिए प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अंधकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है।"* (इफि. 6:10-12)।

समापन :

1. कार्य क्षेत्र में कार्य करनेवाले मिशनरी को आत्मिक संसार की शक्तियों का सामना करने के लिए बाइबल में शिक्षित - और आत्मिक रीति से तैयार - होना चाहिए। इससे बढ़कर, उसे इसके प्रति सजग होना चाहिए कि जब भी कोई व्यक्ति पवित्र आत्मा के द्वारा उपयोग किया जाता है तब वह व्यक्ति विभिन्न रूपों में शैतान के हमलों का सामना करेगा।
2. यह हमला शारीरिक परीक्षा, परिवार या टीम में विखण्डता, लोगों के द्वारा सुसमाचार के संदेश का विरोध, या अवसाद जैसे कुछ और भी हो सकता है।
3. यह जाहिर तथ्य है कि मिशन कार्य क्षेत्र के लोग गृह क्षेत्र में रहनेवालों की अपेक्षा अधिक हमले सहते हैं। यदि मिशनरी परमेश्वर के वचन का वैसा ही उपयोग करना सीख जाता है जैसा यीशु ने किया, और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य पर पूर्णत: निर्भर हो जाता है, तो दुष्ट पर अंतिम विजय उसी की होगी (कुलु.3:16)।

पाठ 50

हिन्दू धर्म को विश्वासियों का प्रतिउत्तर

परिचय : विश्वासियों के द्वारा हिन्दुओं को कैसा प्रतिउत्तर दिया जाना चाहिए? आगे दी जा रही सामग्री को पुन: डॉ.एस.डी. पोनराज की पुस्तक *'अन्डरस्टैन्डिंग हिन्दुइजम'* से लिया गया है।

सर्वप्रथम, हमें अमसीही धर्मों की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। इसलिये कि हिन्दू धर्म में अंतहीन रूपान्तरण हैं, हमें उन लोगों के विश्वास से अच्छे से परिचित होना चाहिए जिन्हें हम यीशु का सुसमाचार पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं। जब हम उनके विश्वास प्रणाली से परिचित हो जाते हैं तब हम हमारे संदेश के प्रति उनके प्रश्नों और आपत्तियों को बेहतर समझ सकेंगे और हमारे संदेश की सच्चाई को समझाने और प्रगट करने में सक्षम हो सकेंगे।

1. यीशु अपने दिनों के अधिकांश धर्मों का पूरा ज्ञान रखता था। उसने अक्सर पवित्र यहूदी धर्म ग्रंथों को उद्धरित किया और दिखाया कि वे कैसे उस पुरानी वाचा की पूर्णता थे (और हैं)। जब हम हिन्दुओं की सेवा करते हैं – या किसी और धर्म के लोगों की – हमें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उत्कृष्ट सत्य को स्पष्टता से इस तरह समझाने में सक्षम होना चाहिए जो उनके आत्मिक और धार्मिक मनोभाव को अर्थपूर्ण लग सके जिन्हें हम सुसमाचार पहुंचा रहे हैं।
2. डॉ. एस. डी. पोनराज साधु सुंदर सिंह को इस तरह उद्धरित करते हैं, "मैं उन मिशनरियों को जो हमारे पास विदेश से आते हैं यह बताता हूं। आप भारतीयों को विदेशी कप में जीवन का जल परोस रहे थे। इसीलिए हम उसे स्वीकारने में धीमे रहे हैं। यदि आप हमें उसे भारतीय कटोरे में परोसें तो इसकी संभावना अधिक है कि हम उसे स्वीकार करें।" जिन्हें हम सुसमाचार पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं उनकी मानसिकता को समझने के द्वारा यह बेहतर होगा यदि हम अपने संदेश को ऐसे 'कटोरे' में परोसें जिसे वे समझ सकें और उसकी प्रशंसा कर सकें।

द्वितीय, हमें मिशन के बाइबलीय ईश्वरज्ञान को – और यीशु में उद्धार के हमारे संदेश की अद्वितीयता को – दूसरे धर्मों के सम्बंध में समझना चाहिए।

1. बाइबल और बाइबलीय ईश्वरविज्ञान की अच्छी समझ यह पक्का करेगी कि हम बाइबलीय संदेश को हल्का नहीं करते, अथवा उनके धर्मों की शिक्षाओं से प्रदूषित नहीं होने देते हैं। (यदि वह प्रदूषित होती है तो उसे समन्वयवाद या समझौता कहते हैं।)
2. उदाहरण के लिए, कुछ मसीही हैं जो कर्म पर विश्वास करते हैं या जो अगुवाई के लिए पंचांग या भविष्यफल देखते हैं। हमें हिन्दू धर्म के ऐसे असत्य विश्वासों को पहचाननें मे सक्षम होना चाहिए (या दूसरे धर्मों से भी) और परमेश्वर के सत्य को त्रुटि रहित अथवा दूषित किए बिना प्रस्तुत करना चाहिए।
3. इसी के साथ, हमें शत्रु के अबाइबलीय असत्य (जैसे कर्म, इत्यादि) और हानिरहित सांस्कृतिक रूपों के मध्य भिन्नता को पहचानना चाहिए जिसे मिशनरी आराधना के लिएं उपयोग कर सकता है। उदाहरण के लिए, किसी जाति विशेष के संगीत अथवा नाटक को आराधना करने या सुसमाचार प्रचार के लिए उपयोग किया जा सकता है, यदि उसमें मसीही विश्वास के विपरीत कोई बात न हो।

तृतीय, हमें लोगों की विचारधारा और उनके लिए परमेश्वर के समय को समझना/पहचानना चाहिए।

1. डॉ. पोनराज 2010 के एडिनबर्ग मिशन कॉन्फ्रेंस के लिए भारतीय जाति समूहों और आनेवाले वर्षों में भारत में बड़े पैमाने पर चर्च की स्थापना करने के आंदोलन के मध्य सीधे सम्बंध पर एक विस्तृत रिसर्च तैयार करते हैं। डॉ. पोनराज लिखते हैं, "आज मिशन के अगुवों और मिशन की कार्ययोजना बनाने वालों को अध्ययन करना और समझना चाहिए कि परमेश्वर हमें दूसरे विश्वासों के सुसमाचार विहीन जाति समूहों में कहां जाने की अगुवाई कर रहा है।"
2. आज भारत में विभिन्न जाति समूह के लोग मसीह की ओर आ रहे हैं। जब एक जाति समूह परमेश्वर के सत्य के लिए स्वयं को खोलना आरंभ करता है, परमेश्वर कटनी के लिए कहां फसल तैयार कर रहा है उसे खोजना और उसका प्रतिउत्तर देना चाहिए।

चतुर्थ, हमें यह समझना चाहिए कि जो हिन्दू धर्म से आ रहे हैं उन्हे शिष्य बनाए जाने की आवश्यकता है और उन्हें सिर्फ भक्तों के रूप में नहीं छोड़ना चाहिए। हिन्दू धर्म भक्तों से भरा है क्योंकि उसका प्रत्येक अनुचर अपने लिए एक मनपसंद देवी या देवता चुन लेता है। हम इन नए विश्वासियों के मनों और दिलों में यीशु को इन असंख्य देवी-देवताओं में एक और देवता के रूप में स्वीकार किए जाते हुए नहीं देखना चाहेंगे।

पंचम, हमें यह समझना चाहिए कि हम जिस सुसमाचार का प्रचार करते हैं वह हम से अपने दैनिक सामाजिक जीवन में उसे जीने की मांग करता है। हमें पवित्र जीवन यापन करना और हिन्दुओं के लिए सच्ची धार्मिकता का नमूना स्थापित करना चाहिए। मसीहियों पर बहुधा यह दोष लगता है कि वे वैसा जीवन यापन नहीं करते हैं जैसा प्रचार करते हैं।

समापन : "यदि मसीह का जीवन और कथन उसके एक चेले के लिए अंतिम सत्य है, तो वह अहंकार रहित और बिना खेद व्यक्त किए पूर्ण नम्रता में दूसरों को वहां से जहां वे खड़े हैं उसके गुरू को जो अंतिम सत्य है देखने के लिए आगे आने को आमंत्रित कर सकता है। यह मसीहियों से, और उनसे भी, जो उसके मिशन का विरोध करते हैं, परिवर्तनकारी सोच आमंत्रित करता है।" डॉ. एबी सुन्दर राज।

पाठ 51

अंतिम अवलोकन

परमेश्वर की संतान खोए हुए और नाश हो रहे संसार के लिए गवाह हैं

1. परमेश्वर हमें अपने पवित्र आत्मा की विशेष अलौकिक सामर्थ्य देना चाहता है ताकि हम घर में ("यरूशलेम" में), आस पास के क्षेत्र में ("सब यहूदिया और सामरिया में") और पृथ्वी की छोर तक उसके गवाह हों (प्रेरित 1:8)।
2. यीशु के लिये दी जाने वाली हमारी गवाही सब लोगों के सामने चमकदार रोशनी होना चाहिए चाहे वो किसी भी धर्म या सामाजिक स्तर से आते हों (मत्ती 5:16)।
3. फिलि. 2:15-16 कहता है, *"ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक संतान बने रहो, जिनके बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों के समान दिखाई देते हो कि मसीह के दिन मुझे घमण्ड करने का कारण हो कि न मेरा दौड़ना और न मेरा परिश्रम करना व्यर्थ हुआ।"* ऐसा हो कि हमारा जीवन हमारे पड़ोसियों, मित्रों और अन्यों के मध्य तारों की तरह चमके ताकि परमेश्वर के उद्धार की रोशनी हम जो कहते और करते हैं उन सब के द्वारा प्रकाशित हो।

हमें अन्य धर्मों के लोगों को छुटकारा दिलानेवाले वार्तालाप में लगाना चाहिए जो उन्हें हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर से परिचय करा सके।

1. हमें अपने आस पास के लोगों के लिए परमेश्वर का राजदूत बनना है (2 कुरिंथि. 5:20)। स्मरण रखिए कि एक राजदूत दूसरे देशों के मध्य अपने देश का प्रतिनिधित्व करता है; उसी तरह हमें भी दूसरे धर्मों और आत्मिक "राज्यों" के मध्य परमेश्वर के राज्य का प्रतिनिधित्व करना चाहिए।
2. परमेश्वर की संतान होने के कारण आपको प्रश्न पूछनेवाले को सर्वदा नम्रता और आदरपूर्वक उत्तर देने को तैयार रहना चाहिए, *"जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय कुछ पूछे, उसे उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ"* (1 पत.3:15)।
3. बिल्कुल वैसे ही जैसे पौलुस ने अथेने में मूर्तिपूजकों को व्यस्त किया (प्रेरितों 17:17) हमें भी अपने आस पास के लोगों के विश्वासों और व्यवहारों की जानकारी होना चाहिए। यह ज्ञान हमें उनके साथ परमेश्वर के प्रेम और उद्धार की सच्चाई को बांटने और उनके साथ बातचीत करने के योग्य बनाएगा।

हमें दूसरे धर्मों के लोगों को यीशु के और मसीहीयत के अद्वितीयपन को देखने में मदद करना चाहिए।

1. सदियों से संसार के सभी धर्मों के मध्य सिर्फ मसीहीयत एक उद्धारकर्ता - स्वयं परमेश्वर - को प्रस्तुत करता है जो इस पृथ्वी पर *"खोए हुओं को ढूँढने और बचाने"* आया (लूका 19:10)।
2. जबकि विश्व के अन्य धर्म परमेश्वर तक पहुंचने के विभिन्न मार्गों (या अनन्त मोक्ष) को दिखाते हैं, मसीहीयत को छोड़कर बाकी सब मानवीय प्रयास की मांग करते हैं। अकेले यीशु हमें उसके क्रूस पर किए गए कार्य पर विश्वास करने के द्वारा उसकी उपस्थिति में शाश्वत आनन्द का प्रस्ताव देते हैं (इफि. 2:8,9)।
3. यीशु मसीह का सुसमाचार सब धार्मिक प्रणलियों के बीच अद्वितीय है। हमारे विश्वास का एकमात्र कर्त्ता परमेश्वर का निर्दोष ईश्वरीय पुत्र होकर सिद्ध बलिदान चढ़ाता है जिसने हमारे पापों का मूल्य चुकाया। तब वह मृतकों में से जी उठा और इस प्रकार हमें अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा दिया।

हमें दूसरे धर्मों के लोगों को यह देखने में सहायता करना चाहिए कि यीशु मसीह में विश्वास ही स्वर्ग जाने का एकमात्र मार्ग है।

1. अनेक लोग यह कहने के लिये कि 'सब धर्म स्वर्ग ले जाते हैं' यह तर्क देते हैं कि "सब मार्ग पर्वत शिखर पर ले जाते हैं।" तौभी यह तुलना यह मानकर चलती है कि सब मार्ग ऊपर ही की ओर जाते हैं, नीचे नहीं; इस में यह माना जाता है कि मनुष्य मार्ग बनाता है ईश्वर नहीं; कि धर्म मनुष्य की खोज है, मनुष्य के लिए परमेश्वर की खोज नहीं।
2. महान मसीही विचारक सी. एस. लुईस कहते हैं कि यह ऐसा लगता है मानो "चूहा बिल्ली को खोज रहा है।" परन्तु हम जानते हैं कि सच यह है कि बिल्ली चूहे को खोजती है। और मसीहीयत तब ही सही है जब वह परमेश्वर को मनुष्य को खोजनेवाले के रूप में प्रस्तुत करती है, इसके विपरीत नहीं।
3. पर्वत पर चढ़ने का कोई मानवीय मार्ग नहीं है, सिर्फ नीचे आने का ईश्वरीय मार्ग है।
4. मसीहीयत परमेश्वर को पाने के लिए मनुष्य के द्वारा की गई खोज-प्रणाली नहीं है, परन्तु परमेश्वर के द्वारा मनुष्य को खोजने का वृत्तांत है।
5. सच्चा धर्म धूप या अगरबत्ती के धुएं के समान नहीं है जो मनुष्य के प्रयास से ऊपर उस इंतजार करते हुये ईश्वर के नथुनों में प्रवेश कर रहा हो, परन्तु पिता के हाथ के समान है जो नीचे गिरे हुए को उठाने के लिए बढ़ाया गया हो।

समापन : परमेश्वर घोषित करता है कि हमें उसके गवाह होना है (यशा. 43:10-12)। पद 12 कहता है, *"मैं ही ने समाचार दिया और उद्धार किया और वर्णन भी किया, जब तुम्हारे बीच में कोई पराया देवता न था; इसलिए तुम ही मेरे साक्षी हो।"*